वनिता भूषण

(अर्थात्)

क्रम सैं नायिका अलंकारन के एकत्र लक्षण
उदाहरनन को संस्कृत अनेक ग्रंथ मतानुसार श्री
युत् चक्र वाण वंश वतंस हड्डु कुल कलश
बुन्दीन्द्र महाराजा धिराज महाराव राजा
जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीरघुवीर
सिंह जी के कवि राज राव जी.
श्री गुलाब सिंह जी कृत

और

जगत प्रकाश यंत्रालय फ़तह गढ़ से
पंडित जी श्री जगन्नाथ प्रसाद त्रिपा
ठी के प्रबंध से छापी गई
पहली बार ५००
(ह० दरबारी लाल कापी नवीस फ़तेहगढ़)

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यैनमः

अथ वनिता भूषण लिख्यते

दोहा

वसन विशारद धारिनी पारद आरद काय ॥ नारदादि मानस वसी निशारद होऊ सहाय ॥ १ ॥ **नृप समय ॥ दोहा ॥** शील सदन जन दुख कदन मदन रूप रन धीर ॥ अरि मद मर्दन बर वदन निर्मल मन रघुवीर ॥ २ ॥ ग्राम जुगल ताजीम गज दिये राम रन धीर ॥ कंचन कंकन पगन मैं पहिराये रघुवीर ॥ ३ ॥ बुंदी पति रघुवीर की सासन मानि सिताब ॥ वनिता भूषण ग्रंथ कें उद्यम कर्यो गुलाब ॥ ४ ॥ संवत सर उनईससै उनंचास शिव वार ॥ आश्विन नवमी शुक्ल पख भयो ग्रंथ अवतार ॥ ५ ॥ **अथ ग्रंथ नियम ॥ दोहा ॥** वनिता भूषन सार गहि ह्यां वर्न्यो इक ठास ॥ याही तें याको धर्यो वनिता भूषन नाम ॥ ६ ॥ **नायिका जाति ॥ दोहा ॥** जाति पद्मनी चित्रिनी और संखिनी नारि ॥ बहुरि हस्तनी उत्तम तु पूरव पूरव धारि ॥ ७ ॥ **अथ साधारण नायिका स्वकीया नायिका लक्षण ॥ दोहा ॥** उपन तरनिथाई निरखि गहि नायिका मानि ॥ स्वामी ही के प्रेम मैं पगी स्वकीया जानि ॥ ८ ॥ पति व्रता साधारना स्वीया के भेद दोय ॥ खंडितादि जे भेद ते साधारन मैं होय ॥ ९ ॥ **अथ अलंकार लक्षण ॥ दोहा ॥** सु अर्थन तें भिन्न जो शब्द अर्थ के मांहि ॥ चमत्कार भूषन सोरिसे भूषन मानत नांहि ॥ १० ॥ **अथ अलंकारांग कथन दोहा** मुख चंद्रादि उपमेय हैं शशि कमलादि उपमान ॥ समानार्थ वाचक लखौ धर्म एक गुन जान ॥ ११ ॥ **चौपाई ॥** है उपमेय विषय

अरु बरायै ॥ उपमानु विषयी रु अवरायै ॥ प्रासंगिक कहैं प्रस्तुत जानि ॥ अप्रसंग अप्रस्तुत मानि ॥ २२ ॥ भेदय बिशेष्य विशेषण भेदक ॥ बड्ड व्यापक सामान्य अरवेदक ॥ २३ ॥ अल्प व्यापक आहि विशेष ॥ भूषन भासक नाम अशेष ॥ २३ ॥ अथ पूर्णोपमा लुप्तोपमा लक्षण ॥ दोहा ॥ सुपूर्णोपमा वाचक रु विषय धर्म उपमान ॥ इक द्वैत्रय के लोप सें लुप्तोपम परिमान ॥ २४ ॥ टीका ॥ वाचक उपमेय धर्म और उपमान ये च्यारों होय सो पूर्णोपमा अलंकार है ॥ एक के दोय के तीन के लोप सें लुप्तोपमा कोहै ॥ २४ ॥ अथ साधारण नायिका पूर्णोपमा उदाहरण ॥ दोहा ॥ शशि सो उज्वल मुख सुभग अर्ध चंद सो भाल ॥ ना सी छवि भरी बिहरत देखी बाल ॥ २५ ॥ टीका ॥ शशि सो लो मुख है ॥ आधा चंद्रमा सो सुन्दर भाल है ॥ सोना की वेलि विं भरी कइ नायिका डोलती देखी ॥ यहाँ शशि उपमान सो ज्वल धर्म मुख उपमेय है १ और अर्ध चंद उपमान सो वाचक ल उपमेय सुभग धर्म है २ और कनक लता उपमान सी वाचक भरी धर्म बाल उपमेय है ३ यातें पूर्णोपमा अलंकार है ॥ २५ ॥ क लुप्ता १ धर्म लुप्ता २ धर्म वाचक लुप्ता ३ वाचकोपमेय लुप्ता ४ मान लुप्ता ५ वाचकोपमान लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ७ चक लुप्ता ८ ये लुप्ता के आठ भेद हैं ॥ अथ स्वकीया आठों उदाहरण ॥ दोहा ॥ कर किसलय मृदु १ कंज से पाय २ नैन नैन ३ ॥ छवि ४ कोटि कृश रोम सी ५ पिक मधुरे सिय बैन ॥ टीका ॥ कर हैं सो नवीन पान से कोमल हैं याके मूल में से वा यातें वाचक लुप्ता है ॥ कंज से पाय हैं यातें धर्म लुप्ता है ॥ ये नैन मृग नैन से हैं याके मूल में धर्म वाचक नहीं धर्म लुप्ता है ३ और नवली बौली छवि है याके मूल में ४

उपमेय नहीं यातें धर्म वाचकोपमेय लुप्ता है ४ कटि सिंह सी पत ली है इहाँ सिंह की कटि नहीं कही यातें उपमान लुप्ता है ५ तिय के वैन कोयल से मीठे हैं याके मूल में पिकवानी उपमान और से वाचक नहीं यातें वाचकोपमान लुप्ता है ॥ २६ ॥ बरवै ॥ गिरिजा दृग मृग सम है गति गज राज ॥ आपत लुप्ता आठ हि यों कविराज ॥ २७ ॥ टीका ॥ पार्बती के नेत्र हीरन के समान हैं यामें मृग के दृग उपमान नहीं और धर्म नहीं यातें धर्मोपमान लुप्ता है ७ गति गजराज यामें नायिका की गति उपमेय तो है धर्म उपमान वाचक नहीं यातें धर्मोपमान वाचक लुप्ता है ८ जानकी पार्बती स्वकीया नायिका हैं ॥ २७ ॥ अथ मुग्धा अनन्वय लक्षण ॥ दोहा ॥ जिंहि तनु जोवन अंकुरित मुग्धा तिय है सोय ॥ जाकी उपमा जाहि कौं लगें अनन्वय होय ॥ २८ ॥ अथ मुग्धा अनन्वय ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुख सो मुख दृग से दृगहि कच से कच दरसाहिं ॥ अल्प उरोज उरोज से जनक सुता के आहिं ॥ २९ ॥ टीका ॥ मुख सो मुख ही है दृग से दृग ही हैं कच से कच ही दी खै हैं जनक सुता के छोटे कुच से कुच ही हैं यहाँ छोटे कुच सें मुग्धा है और मुख दृग कुच उरोजन की उनहीं की उपमा लगी यातें अनन्वय है ॥ २९ ॥ अथ अज्ञात योवना उपमेयोपमा लक्षण ॥ दोहा ॥ नहिं जानें निज योवनहि है अज्ञात सु जोय ॥ उपमा उपमेयोपमा लगें परस्पर होय ॥ ३० ॥ टीका ॥ जोवन कों नहिं जानें सो अज्ञात योवना यिका है ॥ परस्पर उपमा लगें सो उपमेयोपमा अलंकार होय है ३० ॥ अथ अज्ञात योवनोपमेयोपमा उदाहरन दो० ॥ सर कावत गुड़ियाँ नवे लसत अमित छबि खा नि ॥ जलज पानि सें जलज से जनक लली के पानि ॥ ३१ ॥ टीका ॥ गुड़ियाँ सर कावे है नव जनक लली के हाथ से जलज लसे है

र जलज से हाथ लसैं हैं। यहाँ गुदियाँ खोल वासों अज्ञात
वना नायिका है॥ और जलज न की उपमा हाथन कों लगी
हाथन की उपमा जलजन कों लगी यातें उपमेयोपमा अलं
कार है ॥२१॥ अथ ज्ञात यौवना प्रतीप लक्षण॥दो
हा॥ जानें जोवन आप ही ज्ञात यौवन जान॥ भाषत प्रथ
म प्रतीप जहँ होय बरर्ण्य उपमान ॥२२॥ टीका॥ अप
जोवन को आप ही जानें सो ज्ञात यौवना नायिका है
न॥ जहाँ उपमेय उपमान होय तहाँ प्रथम प्रतीप भाषत हैं
प्रतीप नाम उलटा को है ॥२२॥ अथ ज्ञात
यम प्रतीप उदाहरन॥ दोहा ॥ निरखत छाती छाँह
ब दौरत दीठि दुराय॥ कीरतिजा सी वी जुरी तव ही जानी
य॥२३॥ टीका॥जब छाती छाँह देखती भई सखीन
दीठि बचाकरि के दौड़े है तब ही कीरति जा सीबी जुरी
नी जाय है॥ यहाँ छाती छाँह देखि वासों ज्ञात यौवना
यिका है कीरति जा सीबी जुरी मैं उपमेय उपमान भयो
उलटो है यातें प्रथम प्रतीप है ॥२३॥ अथ नवोढ़ा
तीय प्रतीप लक्षण॥ दोहा ॥ लज्जा भय बस रति न
ह नारि नवोढ़ा मान॥ द्वितीय बरर्ये उपमान है होय
अपमान ॥टी॰लाजऔर डरके बससें रति नहीं
मेय है सो उपमान हो जाय और उपमेय को अनादर
य सो दूसरो प्रतीप है॥२४॥ अथ नवोढ़ा द्वितीय
हरण॥ दोहा॥ पिय कर नें छुटि भजत जब क्यों सजनी
॥ देखो नदन दामिनी घन मैं चपल लखात॥ २५
॥ पीतम का हाथ में सों छूटि फेर के जब
है नव सखी क्यों हरखावें हैं॥ देखो नायिका की

मेघ से बीजुरी चंचल होरी है यहाँ नायक का पास सें नायिका भाजे हैं यातें नवोढ़ा है नायिका सी बीजुरी है याते उपमेय उपमान भयो नायिका को अनादर भयो यातें दूसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ

विस्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप लक्षण ॥ दोहा ॥

सो विस्रब्ध नवोढ़ है विस्वास कछु पीय ॥ वराये वराये रीह अवरायेहि अनादरे सु तृतीय ॥२६॥ टीका ॥ पीतम को कछु विस्वास करे सो विस्रब्ध नवोढ़ा नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमेय रहकरि के उपमान को अनादर करे सो तीसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ वि-

स्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ केलि भवन कें भामिनी भीति भरी सी जाय ॥ दामिनि मन को दुति दरपीन हि विरियाँन रहाय ॥२७॥ टीका ॥ क्रीड़ा का भवन कें भामिनी है सो डर सें भरी सी जाय है ता समय बीजुरी का मन को दुति तो गर्व नहीं रहे ॥ यहाँ नायिका केलि भवन कें डरपती सी जाय है यातें विस्रब्ध नवोढ़ा नायिका है ॥ और नायिका उपमेय सें बीजली उपमान ने अनादर पायो यातें तीसरो प्रतीप है यह द्वितीय भेद सें उलटो है ॥२५॥ अथ सतांतरेण मुग्धा भेद ॥ चौपाई ॥ बयसंधि १ नव वधू २ प्रसंगा ॥ नव जोवन पुनि नवल अनंगा ४ ॥ रति वामा ५ मृदु माना ६ लानों ॥ लज्जा प्राया सात वखानों ॥२८॥ अथ व-

यःसंधि चतुर्थ प्रतीप लक्षण ॥ दोहा ॥ बयसंधि शिशुता झलक झलके जब तन तीय ॥ चवथ अरोये उपमान है अवगर्यस न गनीय ॥२९॥ टीका ॥ जब तिय का तन सें बालकपना की झलक झलके सो वयसंधि नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमान हो जाय उपमेय की समान उपमान नहीं गान्यों जाय सो चवथो प्रतीप है ॥२९॥ **अथ बयसंधि चतुर्थ प्रतीप उदाहरन ॥ दो॰॥** साजि सिंगार जब तिय चलत मंद तेज गति माहिं ॥ तब तब करी

कुरंग गति समता पावन नाहिं ॥ ३० ॥ टीका ॥ जब तिय है सो सिंग
र सजि के मंद तेज गति से चले है तब गज हाथी और हिरण की
गति समता नहीं पावे हे इहां मंद तेज गति सें चले हे यातें चय·
स्तोष नायिका हे और मंद तेज गति उपमेय है सो उपमान भयो
करी कुरंग की गति समता लायक नहीं यातें चवयो प्रतीप हे ॥ ३१ ॥
अथ नवल बधू पंचम प्रतीप लक्षण ॥ दोहा ॥ दिन दिन
दूनी दुति बढ़े नवल बधू अनुमान ॥ उपमेयतु उपमान व्हे व्यर्थ जु
व उपमान ॥ ३२ ॥ टीका ॥ दिन दिन प्रति दूनी सोभा बढ़े यह नव
ल बधू को अनुमान हे उपमेय है सो उपमान हो जाय फेरि उपमान
व्यर्थ हो जावे सो पंचम प्रतीप हे ॥ ३२ ॥ अथ नवल बधू पं
चम प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ दोयज के शशि लौं कला
निशि वासर सरसात ॥ जनक सुता तनु निरखि तौं कनक . ता
ल ॥ ३२ ॥ टीका ॥ दोज का चंद्रमा को समान कला राति दिन सर
सावे हे । जनक सुता का शरीर कों देखतां कनक की लता ट
ले हे । यहां कला सरसावा सों नवल बधू नायिका हे और जनक
सुता उपमेय हे सो उपमान भई ताके आगे कनक लता
तें पंचम प्रतीप हे ॥ ३२ ॥ अथ रूपक लक्षण ॥ दोहा ॥
विषयी रंजे बिषय कों व्हे तद्रूप अभेद ॥ अधिक न्यून सम दुहुन
करि षट रूपक व्हे भेद ॥ ३३ ॥ टीका ॥ उपमान है सो उपमेय
को रंजे तद्रूप और अभेद होकरि के ॥ एक उपमान उपमेय में
रंयो रेहे एक उपमान न्यारो रहे सो तद्रूप ॥ उपमान उपमेय में
द नहीं रहे सो अभेद ॥ इन दोनू न के अधिक न्यून समता
छः भेद होते हें ॥ ३३ ॥ अथ नव यौवना अधिक
॥ दोहा ॥ सो मुग्धा नव यौवना जोवन झलक
सु है अधिक तद्रूप जह उपमेय हि अधिकाय ॥ ३४ ॥

कि जोवन की झलक लखावे सो मुग्धा नव यौवना नायिका है जहाँ उपमेय की अधिकता होय सो अधिक तद्रूप है ३४॥ अथ नव यौवना अधिक तद्रूप उदाहरन॥ दोहा॥ सरसै चन्द्र प्रकास तें जोवन झलक प्रकाश॥ सिय मुख शशि शशि ते सरस निश दिन करत प्रकाश॥३५॥ टीका॥ चंद्रमा का उजाला सें जोवन की झलक को प्रकाश अधिक है॥ सीता को मुख चंद्रमा है सो चंद्रमासें अधिक है राति दिन उजालो करै है यहाँ तो जोवन का प्रकाश सें नव यौवना नायिका है और सीता का मुख चंद्रमा उपमेय में राति दिन प्रकाश करवो अधिकता है यातें अधिक तद्रूप है॥३५॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप लक्षण॥ दोहा॥ नवल अनंगा काम सोच भोलापन में जानि॥ होय न्यून तद्रूप जब उपमेयहि कम मानि॥३६॥ टीका॥ भोला पन में काम की सोच होवै सो नवल अनंगा नायिका जानो॥ जब उपमेय को कम जानें तब न्यून तद्रूप होय है॥३६॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप उदाहरण॥ दोहा॥ सुनि रति की पिय विनय तिय नैन मूँदि मुसकाय॥ तव रुख की चप रुपन में चंचलता नर होय॥३७॥ टीका॥ तिय है सो पिय को रति की विनय सुनि करि कै नैन मूँदि मुसकावै तब रुख की सो चप रूपन में चंचला नहीं रहै यहाँ नैन मूँदि मुसकावासें नवल अनंगा नायिका है और रुषन की सी चंचलता चप रूपन में नहीं यातें न्यून तद्रूप है॥३७॥ अथ रति वामा सम तद्रूप लक्षण॥ दोहा॥ रति वामा वामा सुनो सुरत असोचि पहिचानि॥ सम तद्रूप दुहून में समता भयें बखानि॥३८॥ टीका॥ रति वामा है सो तो सुरत में असोच पहिचानो॥ दोनून में समता भया पै सम तद्रूप बखानों॥३८॥ अथ रति वामा सम तद्रूप उदाहरण॥ दोहा॥ मौन धारि पिय पास

स जब बैठे ह्ग शिर नाय ॥ तब राधा रति अति लसत मानवती रति भाय ॥ ३९ ॥ टीका ॥ जब मौंन धारि कीर के पिय के पास द्ग शिर नवाय करि के बैठे तब राधा रति हे सो अत्यंत लसे हे मानवती रति की समान ॥ यहाँ मौंन धारि शिर नवाय बैठि वासौं रति वाला नायिका हे और राधा रति में मानवती रति में रमता है याते सम तद्रूप है ॥ ३९ ॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥ मृदु माना जो मान के अवसर मृदुल रहाय अधिक होय उपमेय तब अधिक अभेद कहात ॥ ४० ॥ मान का अवसर में मृदुल रहावे सो मृदु माना नायिका है य अधिक होय तब अधिक अभेद कहावे है ॥ ४० ॥ अथ माना अधिक अभेद उदाहरण ॥ दोहा ॥ साप रिव पिय प्रथम मुसकानी रिस टारि ॥ हास्य जोन्हतब सदन में प्रात रही बिस्तारि ॥ ४१ ॥ टीका ॥ पीतम को पोहले कीर के रोस को टारि करि के हँसी तब हास्य रूपी सदन में सवेरे ही बिस्तारि रही यहाँ रोस टारि सौं मृदु माना नायिका हे और हास्य में चाँदणी में भेद नहीं यह तो अभेद सवेरे विस्तारि रही यह अधिकता है अधिक अभेद रूपक है ॥ ४१ ॥ अथ लज्जा अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥ लज्जा जुत सुरतहि लज्जा प्राय ॥ न्यून होय उपमेय तब न्यून अभेद ॥ ४१ ॥ टीका ॥ लाज सहित सुरत करे सो लज्जा नायिका हे जब उपमेय न्यून होय तब न्यून अभेद है ॥ ४२ ॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद ॥ दोहा ॥ धीर धरऊ गुरु जनन डर जो गत दे व सौ भाषत भय भरी तिय रति सोभ प्रकास ॥ ४३ ॥

टीका ॥ धीरज धरो गुरु जन ननद देवर सास जगे हैं पिय सौं भावतौं निद रति की भय भरी सोभ प्रकासै है इहाँ गुरु जनादिक सैं लाजै है यातें लज्जा भाया है निय रति की भय भरी सोभ प्रकासवो न्यूनता है यातें न्यून अभेद रूपक है ॥५३॥ **अथ मध्या सम अभेद लक्षण ॥ दोहा ॥** लाज काम सम जासु कै॰ सो है मध्या तीय ॥ उपमा अरु उपमेय सम॰ होय अभेद तृतीय ५४॥ **टीका ॥** जाकै लाज काम समान होय सो मध्या नायिका है। उपमान॰ उपमेय समान होय सो तीसरो अभेद है ॥५४॥ **अथ मध्या सम अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥** लखि लखि पिय दृग छबि निया जब जब दीठि दुरात ॥ तब तब पिय मन बस करनि दृग कंजन छवि छात ॥५५॥ **टीका ॥** पीतम का दृगन की छवि देखि देखि करिकै तिया है सो जब जब दीठि दुरावै तब तब पीतम कामन कौं वस करवा वाली दृग कंजन मैं छवि छावै है देखि करिकै दीठि दुरावै है यातें मध्या नायिका है दृगन कै और कंजन कै समता है यातें सम अभेद रूपक है ॥५५॥ **मध्ये भेद ॥ चौपाई ॥** इक आरूढ़ यौवना १ बासा ॥ प्रगल्भ वचना २ द्वितिय लेखासा ॥ प्रादुर्भूत अनंगा ३ सोई चौथी सुरत विचित्रा ४ होई ॥५६॥ **अथ आरूढ़ यौवना परिणाम लक्षण ॥ दोहा ॥** सु आरूढ़ जुवना कह्यो पूरन जोवन वास ॥ उपमेय रु उपमान मिलि कर क्रिया परिणाम ॥५७॥ **टीका ॥** जो वास पूरन जोवन वान होय सो आरूढ़ यौवना नायका है॰ उपमेय॰ उपमान मिलि करि कै क्रिया करै सो परिणाम अलंकार है ॥५७॥ **अथ आरूढ़ यौवना परिणाम उदाहरन ॥ दोहा ॥** कुच कुंभन तैं उर परसि॰ भुज लतिकनि गहि लेत। दृग पंकजन सैं लखि प्रिया॰ मन रंजन करि देत ॥५८॥ **टीका ॥**

कुच कुंभन सैं उर कों परसि करि कै भुज लति कान सैं गहि लै दृग कंजन सैं देखि कै पिया है सो मन कों राजी करि दे है हां कुच कुंभन सैं आरूढ़ यौवना नायिका है और कुंच कुंभ भुज लतिका दृग कंजन सैं परसिवो गहिवो देखिवो क्रिया करी यातैं परिनाम अलंकार है ॥४८॥ अथ प्रगल्भ बचना प्रथम उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रगल्भ बच बड बचन भाखि जुदे चतुराय ॥ बहु मानें बहु एक कौं सो स गनाय ॥४९॥ टीका ॥ जो बड बचन भाखि करि कै सो प्रगल्भ बचना नायिका है एक कों बहुत है सो बहु न प्रकार मानें सो प्रथम उल्लेख गनावो ॥४९॥ अथ प्र ल्भ बचना प्रथम उल्लेख उदाहरन ॥ दोहा ॥ स पिय लखि तिय बचन भाषत जुत अभिमान ॥ पिय पियूष कोकिल सखिन सौतिन जानें बान ॥ ५० ॥ टीका ॥ पीतम सौं अपराध सहित देखि करि कै तिय कों अभिमान सहित भाषतां- पीतम नैं पियूष जान्या सखीन नै कोकिल जान्या तिन नै बाण जान्या यहां अभिमान का बचन भाषवा सैं ल्भ बचन नायिका है और एक बचन कों पीतम नै पियूष न्या सखीन नै कोकिल जान्या सौतिन नै बाण जान्या यातें लेख अलंकार है ॥ ५० ॥ अथ प्रादुर्भूत मनोभवा थ उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रादुर्भूत मनोभवा पूरित कलान ॥ बहु गुन सौं बहु बिधि कहै जुग उल्लेख प्रमान ॥५१ टीका ॥ काम कलान सैं पूरित होय सो प्रादुर्भूत मनोभवा बहुत गुन सैं बहुत बिधि करि कै कहै सो दूसरा उल्लेष को मान है ॥ ५१ ॥ अथ प्रादुर्भूत मनोभवा द्वितीय उदाहरन ॥ दोहा ॥ काम कलान भरी तिया रति मैं

दरसाय॥ छबि में गिरिजा गुन गिरा पालन रमा सरसाय॥५२॥ टीका॥ कास कलान की भरी छई तिय है सो रीत में रीत द-रसावे है. छबि में गिरिजा है. गुन मे गिरा है. पालता रमाल-रमा है। यहाँ कास कलान की भरी छई है यातें अदुभुत मनो अवा नायिका है और एक नायिका कों अनेक गुणा सें अनेक तरह जानी यातें दूसरो उल्लेप है ॥५२॥ अथ सुरत विचित्रा सुमरन लक्षण॥दोहा॥ सुरत विचित्रा नायिका. जो अद्भुत रत ठान॥ सुमरन है इक वस्तु लखि सो सुमरन को मान॥५३॥ टीका॥ जो अद्भुत रत ठानें सो सुरत विचित्रा नायिका है एक वस्तु कों देखि करि के सुमरन होय सो सुमरन अलंकार है ५३ अथ सुरत विचित्रा सुमरन उदाहरन॥दोहा॥ केलि कला अद्भुत करत. जब पिय मन अलसात॥ तब नव निरखि सखीन कों मदन तिया सुधि आत॥५४॥ टीका॥ अ-द्भुत केलि कला करतें जब पीतम को मन अलसावे है तब नव निरखि करि के सखीन कों मदन तिया की सुधि आवे है. यहाँ अद्भुत केलि कला सें सुरत विचित्रा नायिका है और नायिका कों देखि करि के सखीन कों मदन तिया को स्मरण भयो यातें स्मरण अलंकार है ॥५४॥ अथ प्रोढ़ा भ्रम लक्षण॥ दोहा॥ प्रोढ़ा पति ही के विषय. केलि कलाप प्रवीन॥ इक कों लखि भ्रम होय जहँ है भ्रम भूषण बीन॥५५॥ टीका॥ पति के विषय केलि कला में प्रवीन होय सो प्रोढ़ा नायिका है एक कों देखि के भ्रम होय तहाँ भ्रम अलंकार हैहे बीन॥ अ-थ प्रोढ़ा भ्रम उदाहरन॥ दोहा॥ जब पिय संग सि-य चाढ़ अटा. हरषि हिये लपटानि॥ तब लखि हर्ष मोर गन घन दामिनि मन मानि॥५६॥ टीका॥ जब सोना हेत

पीतम के संग अटा पै चढ़ि करि कै॰ हरषि करि कै हिय लपटाई॰ तब देखि करि कै लोगन के मन हर्षे॰ घन मन में आनि करि कै॰ यहाँ हर्षि करि हिया सों लपटावें यातें प्रौढ़ा नायिका है। और लोगन को घन दामिनी को भ्रम भयो यातें भ्रम अलंकार है॥ ५६॥ अथ प्रौढ़ा भेद॥ चौपाई॥ गाढ़तरुणय कामांधा कहि॥ भावोन्नता ३ दरब्धौ ४ लहि॥ अरु समस्त रत चतुरा ५ जानो॥ पुनि आक्रांत ६ मानो॥ ५७॥ दोहा॥ हे समस्त रत कोबिदा ७ चित्रा ८ जोय॥ पुनि लब्धा पति नायिका प्रौढ़ा भिद नव होय॥ अथ गाढ़तारुणया संदेह लक्षण॥ दोहा॥ गाढ़तरुणया नायिका पूरन जोबन वारि॥ इक कों लखि संदेह के संदेहसु निर्धारि॥ ५८॥ टीका॥ जो पूरन जोवन वारी होय सो गाढ़ तरुणया नायिका है॰ एक कों देखि के संदेह होय से निश्चय ही संदेह है॥ ५८॥ अथ गाढ़ तरुणया संदेह उदाहरन॥ दोहा॥ बंक दीठि दृगं मद भरे कुच नितंब लखि पीन॥ अलि मानत यह रति रमा उमा गिरा कि प्रवीन॥ ६०॥ टीका॥ वाकी दीठि मद के भरे अरु दृग च नितंबन कों पीन देखि कै॥ अलि मानें हैं यह रति है रमा है कि गिरा है कि उमा है है! प्रवीन॰ यहाँ कुच पीन है॰ यातें गाढ़तारुणया नायिका है॰ और अलि के रति रमादिक को निश्चय न भयो॰ यातें संदेह अलंकार है ६०॥ अथ कामांधा शुद्धापन्हुति लक्षण॥ दोहा॥ कामांधा अति काम बस॰ पीर पूरन रति भाय॥ शुद्धापन्हुति आन धरि साँची भाव दुराय॥ ६१॥ टीका॥ काम के वस अत्यंत होय पीर पूरन रति भावै सो कामांधा है॥

ओर धोर करि के साँचा भाव कों छिपावे सो शुद्धापन्हुति अलं-
कार है ॥६१॥ **अथ कामांधा शुद्धापन्हुति उदाहरन ॥**
दोहा ॥ नैनन याके मन सर॰ बेनन मद घर आँहि ॥ तजे न पति
कों छिनक यह डरै गुरुन सौं नाँहि ॥६२॥ **टीका** ॥ याके नेत्र
नहीं हैं॰ मैन के सर हैं॰ वचन नहीं है मद के घर हैं॰ यह पति
कों छिन भर भी नहीं त्यागे है॰ बड़ा आदमीन सैं डरपे नहीं॰
यहाँ पति कौं नहीं त्यागे है॰ यातैं कामाँधा है॰ ओर नैननकौं
मैन सर ठहराया॰ बनन कों मद घर ठहराया॰ यातैं शुद्धापन्-
हुति है ॥६२॥ **अथ भावोन्नता हेत्वपन्हुति लक्ष-**
ण ॥ दोहा ॥ उन्नत भावन ते तिया॰ भावोन्नता बखान ॥ हेत्व
अपन्हुति जुक्ति सौं वस्तु दुराये जानि ॥६३॥ **टीका** ॥ उन्नतभा-
वन तैं भावोन्नता नायिका बखानौ॰ जुक्ति सौं वस्तु छिपावे पै हे-
त्व पन्हुति अलंकार जानौ ॥६३॥ **अथ भावोन्नता हेत्व**
पन्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अति उन्नत भावन भरी॰ यह
नहिं नरी निदान ॥ सतनुपति वरी रति नहीं॰ रमा आहि छवि था-
न ॥६४॥ **टीका** ॥ अत्यंत उन्नत भावन की भरी है यह निश्चय
ही नरी नहीं॰ तनु सहित पति वारी है॰ यातैं रति नहीं॰ छवि को
थान रमा है यहां उन्नत भावन मैं भावोन्नता नायिका है॰ ओर ना-
यिका कौं जुक्ति करि रति सैं बचाय रमा ठहराई यातैं हेत्व पन्हु-
ति है ॥६४॥ **अथ दरब्रीड़ा परयस्तापन्हुति लक्षण ॥**
दोहा ॥ जब है थोरी लाज तब दरब्रीड़ा तिय आप ॥ परयस्ता
पन्हुति धर्म पर को पर मैं रोप ॥६५॥ **टीका** ॥ जब थोरी लाज
होय तब दरब्रीड़ा नायिका है॰ पैला को धर्म पैला मैं रोपै सो पर
यस्तापन्हुति अलंकार है ॥ **अथ दरब्रीड़ा परयस्ताप-**
न्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुख करत अध खुलित हग-

जब तिय बोलत मंद ॥ आहि सुधा धरे बचन नहिं न
चंद ॥ ६६ ॥ टीका ॥ सुरत करता अध खुल्या नेनन मैं
य मंद बोले- ते बचन सुधा धरे है- चंद्रमा सुधा धर नहीं
यहां अध खुल्या नेनन से दर क्रीड़ा नायिका है- और
को सुधा धर पणो छिपाय बचन में ठहरायो- यातें
न्हुति है ॥ ६६ ॥ अथ समस्त रत कोबिदा व
ति लक्षण ॥ दोहा ॥ सो समस्त रत कोबिदा सकल
र बीन ॥ भ्रांतायन्हुति आन की करे भ्रांति को छीन ॥
संपूर्ण सुरत में प्रवीन होय सो समस्त रत कोबिदा है-
भ्रांति को छीन करे सो भ्रांतायन्हुति अलंकार है ॥ ६७
अथ समस्त रत कोबिदा भ्रांतायन्हुति उ
दोहा ॥ नाना बिधि निशि सुरत तें अमित आन लखि नाहि
खि पूछी कछु आधि है तिय कहि रति अस आहि ॥ ६८ ॥
नाना प्रकार से रात्रि में सुरत तें ताको सवेरे अमित देखि
सी नें पूछी कछु आधि है तिय नें कह्यो रति को अस है
नाना प्रकार की सुरति तें समस्त रत कोबिदा है- और न
वचन सें सखी को भ्रम जातो रह्यो- यातें भ्रांतायन्हुति
है ॥ ६८ ॥ अथ आक्रांत नायिका छेकापन्हुति
ण ॥ दोहा ॥ सु आक्रांत नायक तिया लिहि पति कुल
आत ॥ छेकापन्हुति आन के जानें सांच छिपात ॥ ६९ ॥
जाके पति और कुल बस में होय सो आक्रांत नायिका है
का जान्या सें सांच को छिपावे सो छेकापन्हुति अलंकार
अथ आक्रांत नायिका छेकापन्हुति उ
दोहा ॥ ननद जान नौरे नहीं भएन चसन बनात ॥
ति पिय की के मया गांठि खेलि खाहि को बात ॥ ७० ॥

भूषन वसन बनाता मन कौं तनक भी नहीं मोरें है- सखीनें कही पिय की कथा है- नायका नें कही नहीं सखी- सखी की वात है य- हां भूषन वसन बनावा सौं ज्ञातांन नायका है और नायका नें सखी सैं सांची वात छिपाई यातैं छेका पन्हुति है ॥ ७० ॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्हुति लक्षण

दोहा ॥ है समस्त रस कोविदा पियहि सकल रस दाय ॥ पद मिसादि करि कैतवा पन्हुति सत्य दुराय ॥ ७१ ॥ **टीका** ॥ पीतम कौं संपूर्ण रस दायक होय सो समस्त रस कोविदा है मिस पद करि कै सत्य कौं दुरावे सो कैतवा पन्हुति अलंकार है ॥ ७१ ॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्हुति उदाहरन ॥ **दोहा** ॥ हास विलास कलान करि प्रेम पास मन खींचि ॥ पीतम कर में कर लियो चितवनि मिस रस सींचि ॥ ७२ ॥

टीका ॥ हास विलास कलान करि कै प्रेम पासी सैं मनकौं खींचि कै पीतम कौं कर में कर लियो चितवनि का मिस सौं रस सींचि करि कै यहां कलान करि कै पीतम कौं वस में कर लियो यातैं समस्त रस कोविदा है- और चितवनि कौं मिस पद करि कै रस सींचिवो ठहरायो यातैं कैतवा पन्हुति अलंकार है **अथ चित्र विभ्रमा लक्षण** ॥ **दोहा**

चित्र विभ्रमा नायिका विभ्रम जासु विचित्र ॥ तन दुति पिय मन वस करै निवरनत विवुध पवित्र ॥ ७३ ॥ **उदाहरन** ॥ **दो०** ॥ जिहिं रद हासी मुख करत कुंद जौन्ह शशि मंद ॥ सोहिनि सुमन सौंयका मोहि लियो व्रजचंद ॥ ७४ ॥ **अथ लब्धापति लक्षन** ॥ **दो०** ॥ सो लब्धापति नायिका औढा भेद वखानि ॥ कानि करे जाकी सदा पति कुल प्रभुता मानि ॥ **उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ लखि ललचानी लाल कौं नई लला उर लाय ॥ इक टक चितवत दुहून मन रह्यौ मेघ सरसाय ॥

अथ धीरादि भेद ॥ **दोहा** ॥

लच्या प्रौढा मान से त्रिविधि होत प्रत्यक्ष ॥ धीरा और अधीर
पुनि धीरा धीरा एक ॥ ७५ ॥ अथ उत्प्रेक्षा लक्षण ॥
दोहा ॥ वस्तु हेतु फल तीन में संभावना जब होय ॥
उत्प्रेक्षा ताकौं कहत कवि गुलाब कवि लोय ॥ ७६ ॥ टीका ॥
वस्तु हेतु फल इन तीन में जब संभावना होय ताकौं उत्प्रे-
क्षा अलंकार कहै हैं - गुलाब कवि कहै कवि लोग हैं ता
७७ ॥ चौपाई ॥ वस्तु एक उक्ता अनुक्ता कहिए ॥ दूजो गन
[illegible] ॥ हेतु सोऊ [illegible] है ॥ हेत
[illegible] है ॥ ७७ ॥ टीका ॥ वस्तु में [illegible]
[illegible]

[illegible]

लक्षण ॥ दोहा ॥ रिस प्रगटै कहि व्यंग्य बच मध्या धीरा नारि ॥ द्वै संभाव्य रु आस्पद सु उक्ता स्पदा विचारि ॥ ८०॥ टीका व्यंग्य का वचन कहकरि कै रोस को प्रगटै सो मध्या धीरा नायिका है- संभाव्य स्थान और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो॥ ८०॥ अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनी मुहि दिखा लालन लोयन लोल ॥ मानहुं मंजे सजीव रंग हैं जुग मीन अमोल ॥ ८१॥ टी० लालन नें चंचल नेत्र दिखा करि कै मोकों हर्षित करी मानों सजीव का रंग में रंग्या हुया अमोल दो मीन हैं- यहां हर्षित शब्द में हुलसित हा या व्यंग्य में कह्यो- यातें मध्या धीरा नायिका है और लोयन वस्तु में मीनन की तर्क है- यातें वस्तूत्प्रेक्षा है- और दोनूं विद्य मान हैं- यातें उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा है॥८१ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ परुष वचन कहि व्यंग्य विन कोपे मध्या धीर ॥ जहैं नहिं पद में आस्पद सु अनुक्ता सपद धीर ॥ ८२॥ टीका ॥ परुष वचन कह करि कै व्यंग्य विना कोपै सो मध्या धीरा नायिका है- जहां पद में संभावना को ठिकानों नहीं होय सो अनुक्ता सपदा है हे धीर ॥ ८२॥ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल कि बिष अधर नैनन सांहि ससाल ॥ जावो जहं निशि जगि रनो यें मुहि करत बिहाल ॥ ८३॥ टीका ॥ भाल में अनल है अधर में बिष है नैनन के सांहि ससाल है- जहां रात में जागि करि कै पगे तहां जावो मोकों विहाल क्यों करते हो- यहां जावक अंजन ललाट में अनल विष ससाल की तर्क है यातें वस्तूत्प्रेक्षा और जावक अंजन ललाट नहीं कहो यातें अनुक्ता स्पदा वस्तू-

लक्ष्या गौढा मान मैं त्रिबिधि होत प्रत्येक ॥ धीरा और
पुनि धीरा धीरा एक ॥ ७५ ॥ अथ उत्प्रेक्षा लक्षण ॥
दोहा ॥ वस्तु हेतु फल तीन मैं संभावना जब होय ॥
उत्प्रेक्षा ताकों कहत कवि गुलाब कवि लोय ॥ ७६ ॥
वस्तु हेतु फल इन तीन मैं जब संभावना होय ताकों
क्षा अलंकार कहैं हैं- गुलाब कवि कहैहैकवि लोग हैं
७६ ॥ चौपाई ॥ बस्तु एक उक्ता स्पदा कहि ॥ दूजी
उक्ता स्पद लहि ॥ हेतु मांहि सिद्धा स्पदा है ॥
य असिद्धा स्पदा सदा है ॥ ७७ ॥ टीका ॥ वस्तु मैं एक
दा कहो ॥ दूसरी अनुक्ता स्पदा लहो अर्थात उक्ता स्पदा
नुक्ता स्पदा बस्तूत्प्रेक्षा हेतु के मांहि सिद्धा स्पदा है दूसरी सदा
द्धा स्पदा है- हेतूत्प्रेक्षा दोय प्रकार की सिद्ध होय तौ सिद्धा स्पद
हेतूत्प्रेक्षा असिद्ध होय तौ असिद्धा स्पदा हेतूत्प्रेक्षा है ॥
दोहा ॥ फल सिद्धा सपदा सदा असिद्धा सपद दोय ॥
बाचक मनु संकादि बिन गम्योत्प्रेक्षा होय ॥ ७८ ॥
फल मैं सदा सिद्धा सपदा है- असिद्धा स्पदा है ये दोय भेद
बाचक मनु संकादि बिना गम्योत्प्रेक्षा होय है अफल कों फल
ठहराय संभावना करै सो सिद्ध होय तौ सिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा अ
सिद्ध होय तौ असिद्धा स्पदा फलोत्प्रेक्षा है ॥ ७८ ॥
जाकी संभावना सो संभाव्य
आस्पद पहिचानि ॥ ७९ ॥ दो
संभाव्य मान बखानौं
ये दोनूं होय सो
स्पद नहीं हो
अथ स

त्तरा ॥ दोहा ॥ रिस प्रगटै कहि व्यंग्य बच मध्या धीरा
ारि ॥ ह्वै संभाव्य रु आस्पद सु उक्ता सदा विचारि ॥ ८० ॥ टीका
व्यंग्य को वचन कहकरि कै रोस कौं प्रगटै सो मध्या धीरा नायि-
का है- संभाव्य वाल और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो ॥
८० ॥ अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा
उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनो मुहि दिखा लालन लोय
न लोल ॥ लालई मंजे मजीठ रंग हैं जुग मीन अमोल ॥ ८१ ॥ टी०
लालन नें चंचल नेत्र दिखा करि कै मोकों हर्षित करी लानों म-
जीठ को रंग में रंग्या जुग्म अमोल दो मीन हे- यहां हर्षित श-
ब्द में उल्सन को व्यंग्य में कह्यो- यातें मध्या धीरा नायि-
का है और लोयन वस्तु में मीनन की तर्क है- यातें वस्तूत्प्रेक्षा
है- और दोनें विद्य मान हैं- यातें उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ ८१
अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ परुष वचन कहि व्यंग्य विन कोपै मध्या धीर ॥
गहै नहि पद मैं आस्प सु अनुक्ता सपद धीर ॥ ८२ ॥ टीका ॥
[illegible] कहि करि कै व्यंग्य विना कोपै सो मध्या धीरा ना-
[illegible] पद मैं संभावना को ठिकानों नहीं होय सो अनु
क्ता स्पदा है हे धीर ॥ ८२ ॥ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता
स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल म
नु विष अधर नैनन माँहि मसोल ॥ जावो जहँ निशि जागि एतौ मौ
मुहि करत विहाल ॥ ८३ ॥ टीका ॥ भाल मैं अनल है अधर
मैं विष है नैनन के माँहि मसाल है- जहाँ रात मैं जागि करिकै
पंगे तहाँ जावो मोकौ विहाल क्यों करते हो- यहाँ जावक अंज
न ललाई मैं अनल विष मसाल की तर्क है यातें वस्तूत्प्रेक्षा
और जावक अंजन ललाई नहीं कही यातें अनुक्ता स्पद।

थ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा हे
त्प्रेक्षा हे ॥ ८३ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा हे
तू त्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ व्यंग्य अव्यंग्य हि बचन कीहे
रोस प्रकासे रोय ॥ ॥ सिद्ध अहेतुहि हेतु कृत हेतू त्प्रेक्षा
८४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यंग्य बचन कह कोरि के रो कोरि के रोस
कों प्रकासे- सिद्ध अकारण कों कारण करे सो सिद्धा स्पदा हेतू
सा होय ॥ ८४ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पद
हेतू त्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि रोय रिसाय
कि कीने लोयन लाल ॥ तिन की रुचि लखि मनु भये लालन
न लाल ॥ ८५ ॥ टीका ॥ पिय कों देखि कोरि के रो कोरि के रोष
रि के- बकि कोरि के लाल नेत्र करया तिनकी रुचि देखि के
लालन के लाल नेत्र भये यहां रोवा सों मध्या धीरा धीरा
का हे- और लालन के लाल नेत्र हो वाको कारण नायिका के
रा नेत्र नहीं तिस कों कारण ठहराया- यातें हेतू त्प्रेक्षा और
ल हो वो सिद्ध हे यातें सिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा हे ॥ ८५ ॥
थ प्रोढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा लक्षण ॥
दोहा ॥ कोप प्रकासे व्यंग्य करि रति ते रहे उदास ॥ होय
सिद्धेतु दूसरी हेतू त्प्रेक्षा भास ॥ ८६ ॥ टीका ॥ व्यंग्य करि
कोप कों प्रकासे रति तें उदास रहे- सो प्रोढा धीरा नायिका हे
सो असिद्ध होय तो दूसरी हेतू त्प्रेक्षा भासे हे ॥ ८६ ॥ अथ
प्रोढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतू त्प्रेक्षा उदाहरन
दोहा ॥ पिय लखि सुरति बिसारि तिय करि करि राते नेंन ॥
मदमाती यातें मनो बोलत हल बल बेंन ॥ ८७ ॥ टीका ॥
पिय कों देखि के सुरति बिसारि करि के तिय हे सो राते नेंन
करि के मद मस्त भई- यातें मानों हल बल बचन बोले
मस्ती का बहाना सों हल बल बचन बोले हे

तें प्रौढा धीरा नायिका है और मद मस्त हो वाको कारण छल बल वचन बोलवो नहीं ताकें कारण ठहरायो यातें हेतूत्प्रेक्षा है- मद मस्त हो वो असिद्ध है- यातें असिद्धा हेतूत्प्रेक्षा है ८७

अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ तर्जन ताडन आदि करि॰ व्यंग्य रहित करि कोप ॥ सिद्ध अफल कौं फल करे सु फलोत्प्रेक्षा ओप ॥ ८८ ॥ टी॰ तर्जना ताडना आदि करि के व्यंग्य रहित कोप करे सो प्रौढा अधीरा नायिका है- सिद्ध अफल के नांई फल करे सो फलोत्प्रेक्षा ओपे है ॥ ८८ ॥ **अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥** गर्जत त्रासत डरन नहिं धरत न चित में चेत ॥ घूमत कुकि कुकि रहत मनु मदगज समता हेत ॥ ८० ॥ **टीका** ॥ गरजे है॰ त्रासे है॰ डरे नहीं है चित में चेत नहीं धरे है- घूमे है कुकि कुकि रहे है मानों मस्त गज की समता के वास्ते- यहां गर्जादिक सें प्रौढा अधीरा नायिका है- और गर्जवो त्रासवो नहीं डरवो चित में चेत नहीं धरवो- घूमवो- कुकिवो इनको फल मद गज की समता नहीं ताको फल ठहरायो यातें फलोत्प्रेक्षा गर्जादिक सिद्ध है यातें सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा है **अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥** ताडनादि करि रति बिरस कोप प्रकासे नारि ॥ जहं असिद्ध के अफल फल सु फलोत्प्रेक्षा धारि ॥ ८१ ॥ **टीका** ॥ ताडनादि करि के रति सें विरस हो करि के निय सों है सो कोप कों प्रकासे सो प्रौढा धीरा धीरा नायिका है जहं अफल फल असिद्ध होय सो फलोत्प्रेक्षा धीरा है ॥ **अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥** अलग रहो परसोन पद लसो आपनो हाल

त्प्रेक्षा है ॥ ८३ ॥ अथ सु
तु त्प्रेक्षा लक्षण ॥ दो
रास प्रकाशे होय ॥ ॥
८४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अर्थ
कों प्रकासे - सिद्ध अकारण
क्षा होय ॥ ८४ ॥ अथ स
हेतु त्प्रेक्षा उदाहर
पि कीने लोयन लाल ॥
न लाल ॥ ८५ ॥ टीका ॥
रि के - बकि करि के ला
लालन के लाल नेत्र अ
का है - और लालन
ल नेत्र नहीं तिस कों
ल हो वो सिद्ध है
थ प्रौढा धीरा
दोहा ॥ कोप
सिद्ध तु दूसरी है
कोप कों प्रकाशे
सो असिद्ध हो
प्रौढा धीर
दोहा ॥
मदमाती
पिय कौं
और
म

सो सापान्हव रीति ॥ ९६ ॥ टीका ॥ और की व्याही और सों प्रीति करे सो ऊढा नायिका है - यह अपन्हव सहित होय सो [illegible] रीति है ॥ ९६ ॥ [illegible] सापन्हवाति [illegible] नी ननद क्यों तर [illegible] तमाल भमर ॥ टीका ॥ सासु-जिठानी-ननद विना विचार क्यों तरजे है ॥ मेरे तनु में भ्रमर नहीं तमाल में रहे है पर पुरुष में रत है - यातें परकीया है - और भवरा सों मन को बोध भयो तमाल सें कृष्ण कों बोध भयो यह रुपकातिशयोक्ति तनु में नहीं तमाल है - यह अपन्हुति यातें सापन्हवा तिसयोक्ति अलंकार है ॥ ९७ ॥

अथ अनूढा भेद का तिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ अन व्याही पर पुरुष सों रसें अनूढा जुक्ति ॥ वाही कों औरें कहैं भेद कातिशयोयुक्ति ॥ ९८ ॥

अथ अनूढा भेद कातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ पितु वस तन मन कान वस क्यों पावे इक थान ॥ कर्त्ता करे तु द्वे सके हे विधि की विधि आन ॥ ९९ ॥ टीका ॥ तन है सो पिता के वस है - मन है सो कृष्ण के वस है ॥ एक स्थान कैसे पावें कर्त्ता करे तो द्वे सके है ब्रह्मा की विधि और है - यहां बिना व्याही कृष्ण सों रत है ॥ उनहों कों पति चाहती है - यातें अनूढा नायिका है ॥ विधिकी विधि और ही है यह भेद कातिसयोक्ति है ॥ ९९ ॥

अथ परकीया भेद ॥ दोहा ॥ गुप्ता१ और विदग्ध२ पुनि-लक्षिता ३ रु कुलटा ४ नि ॥ अनुसयान ५ मुदिता ६ दि ये पर कीया भिद जानि ॥ १०० ॥

अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधा तिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ भूत सुरत डर वे जु निय सो गुप्ता प्रथमोक्ति ॥ करे जु जोग अजोग कौं संबंधा तिशयोक्ति ॥ १०१ ॥

गुरुन सजना हित मनों रंगे नैंन रंग लाल ॥ ८२॥
भला रहे यह अति परसो आपनो हाल देखो- गुरुन
सजना के कारें मानों लाल रंग से नेन रंगे है॥ इहां
न रहो यह अति परसो या बचन सें गुरुन सें बिरत
यातें प्रौढा औरा धीरा नायिका है॥ और लाल नेत्र
को फल गुरुन की सजना नहीं ताको फल वहराय
ना करें यातें फलोत्प्रेक्षा है॥ नेत्र रंगवो असिद्ध है
असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा है ॥ ८२॥ अथ ज्येष्ठा
ज्ञा रूपकातिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ दै
तिय होय जहं ज्येष्ठ कनिष्ठा जुक्ति ॥ निकसे बरनी
गर्व सें रूपकातिशय उक्ति ॥ ८३॥ टीका ॥ जहां दो
री जई स्त्री होय तहां ज्येष्ठ कनिष्ठा की जुक्ति है॥
सें उपमेय निकसे सो रूपकातिशयोक्ति अलंकार है
अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा रूपकातिशयोक्ति उ
न ॥ दोहा ॥ कनक लता जुग में कमल असल
पाय ॥ अलो रली इक में करत इक से दीठि दुराय॥८
दो कनक लतान सें निर्मल कमल प्रफुल्लित पा करि
ली है सो एक सें रली करे है- एक सें दीठि दुराय करि
हां दो नायिकान सें ज्येष्ठा कनिष्ठा हैं॥ और दो कनक
लतान सें दो नायिका निकली और अली सें नायक
यातें रूपकातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ८४॥ इति
अथ परकीया लक्षण ॥ दोहा ॥ परकीया पर
गुप्त करे जो प्रेम ॥ तासु परोढा कन्यका द्वै विधि करिके नेम
अथ परोढा सापन्हवातिशयोक्ति लक्षण
ऊढा व्याही और की करे और सों प्रीत ॥ होय अपन्हव

। सापान्हव रीति ॥ ९६ ॥ टीका ॥ और की व्याही और सों
प्रीति करै सो ऊढा नायिका है - यह अपन्हव सहित होय सो
अपन्हव की रीति है ॥ ९६ ॥ अथ परोढा सापन्हवाति
शयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास जिठानी ननद क्यों तर
त लिना विचार ॥ सो तनु में नहिं भ्रुसर रहत तमाल मझार ॥
टीका ॥ सास जिठानी ननद बिना बिचार क्यों तरजै है ॥ मेरा
तनु सैं भ्रुसर नहीं तमाल में रहे है पर पुरुष में रत है - यातें पर
कीया है - और भवरा सों मन को बोध भयो तमाल सें कृष्ण कों
बोध भयो यह रूपकातिशयोक्ति तनु में नहीं तमाल है - यह
अपन्हुति यातें सापन्हवा तिसयोक्ति अलंकार है ॥ ९७ ॥ अ-
थ अनूढा भेद कातिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥
बिन व्याही पर पुरुष सों - रसें अनूढा जुक्ति ॥ वाही कों औरे क-
है - भेद कातिशयोयुक्ति ॥ ९८ ॥ अथ अनूढा भेद काति
शयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ पितु बस तन मन कान
बस क्यों पावै इक थान ॥ कत्ती करै तु द्है सकै - है विधि की विधि
आन ॥ ९९ ॥ टीका ॥ तन है सो पिता के बस है - मन है सो
कृष्ण के बस है ॥ एक स्थान कैसे पावें - कत्ती करे तो ह्है सके है
ब्रह्मा की बिधि और है - यहां बिना ब्याही कृष्ण सों रत है ॥
उनहीं कों पति चाहती है - यातें अनूढा नायिका है ॥ बिधिकी
विधि और ही है यह भेद कातिसयोक्ति है ॥ ९९ ॥ अथ पर
कीया भेद ॥ दोहा ॥ गुप्ता १ और विदग्ध २ पुनि - लक्षिता
३ रु कुलटा ४ नि ॥ अनुसयान ५ मुदिता ६ दिये - परकीया भिद
जानि ॥ १०० ॥ अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयो-
क्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ भूत सुरत दुरवे जु तिय - सो गुप्ता
प्रथमोक्ति ॥ करे जु जोग अजोग कों संबंधातिशयोक्ति ॥ १०१ ॥

टीका ॥ जो ऊई सुरत के ताई छिपावे सो पोहली है ॥ जो अजोग कौं जोग करे सो संबंधातिशयोक्ति ।

अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ शशि तैं ऊँचे गिरि शिखर- चढी पुष्प की उतरत बिचले तन बसन- कचक लगे अथाह ॥ १०२॥

चन्द्रमा सें ऊँचे पर्बत की शिखर के ऊपर पुष्प की चाह सें उतरता शरीर का कपड़ा बिचल्या धरा का टालग्या- न सुरत चिन्ह छिपाये यातें भूत सुरत गुप्ता नायिका है॥ शिखर अजोग कौं चन्द्रमा के जोग्य करी- यातें ... योक्ति है ॥ १०२॥ अथ बर्तमान सुरत गुप्ता यो धातिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ वर्तमान रत दूजी गुप्ता जोग ॥ असंबधातिशय उकति यो गहि करे । १०३॥ टीका ॥ बर्तमान सुरत का छिपावा सें दूसरी गुप्ता के जोग है ॥ योग कौं अयोग करे सो असंबधाति शयोक्ति है ।

अथ बर्तमान सुरत गुप्ता असंबंधातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखि मुहि मुछित परत मोहि राखी भरि बाथ ॥ पर उपकारी दीन हित नहि इन सम ... १०४॥ टीका ॥ हे सखी मोकौं मूर्च्छित परता इनने बाथ रि के राखी ॥ पेला का उपकार करवा वाला दीनन का इन सम सुरनाथ नहीं- यहाँ बाथ भरि वासें बर्त्तमान सुरत गुप्ता ॥ और इंद्र जोग है ताकौं अजोग करयो यातें ... अलंकार है ॥ १०४॥ अथ भविष्यति सुरत अक्रमाति शयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ सुरत गोप तें तीजी गुप्ता गाय ॥ अक्रमातिशय उक्ति ... को साथ ॥ १०५॥ टीका ॥ आगे हो वा वाली सुरत

तोई छिपावे सो तीसरी गुप्ता की गाथा है ॥ जहाँ कारण कार
की साथ होय सो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १०५॥
अथ भविष्यति सुरत गुप्ता अक्रमातिशयोक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ फूलन हित बन सघन में जैहों आ-
ली आज ॥ पग धरते हित नव सन वर कटि हे कंटक साज ॥
१०६ ॥ टीका ॥ फूलन के वास्ते हे आली आज सघन बनमें
जाऊंगी ॥ पग धरतां ही तन का सुन्दर कपड़ा कांटकन के साज
सों कटेगा, यहाँ होवा वाला चिन्ह कह्या, यातें भविष्यति सु
रत गुप्ता है ॥ और पग धरतां ही कपड़ा कटेगा, ईसें कारन
कारज संग है, यातें अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १०६ ॥
अथ बचन विदग्धा चपलातिशयोक्ति लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा चतुरी करे बचन में साज ॥
है चपलातिशयोक्ति जहँ हेतु ज्ञान ते काज ॥ १०७ ॥ टीका ॥
बचन में चतुराई करे सो बचन विदग्धा नायिका है ॥ जहाँ
कारण ज्ञान ही सें कारज होवे सो चपलातिशयोक्ति अलंकार
है ॥ १०७ ॥ अथ बचन बिदग्धा चपलातिशयो
क्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरि लखि सखि सें कहि अबहि
जैहों जमुना न्हान ॥ प्यारी बचन पियूष से सुनतहि हर्षे कान
१०८ ॥ टीका ॥ हरि कों देख करि के सखी सें कही जमुना न्ह
वा कों अब ही जाऊंगी प्यारी का पियूष सा बचन मनमें
[illegible]
चन विदग्धा नायिका है और स्नान हित जावो कारण है ताका
सुन वा से ही कृष्ण को हर्षिवो कारज भयो यातें चपलातिश
योक्ति अलंकार है ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा होय
जब देशी सें अनुराग ॥ स्वयं दूतिका पथिक से कहे बचन करि लाग ॥

॥ अथ क्रिया
दोहा ॥ क्रिया
॥ अत्यंता निशयोक्ति है
जब क्रिया में चतुराई करे सो क्रिया विदग्धा
पहिलें काज होय सो
अथ क्रिया विदग्धा
॥ ॥ कंज कली करे
प्रयत्न
करि कै
कृष्ण॥
कंज को
यह जनायो तुम मेरा हृदा मे
विदग्धा नायिका है और पहिले प्रफुल्लित
कारज पहिले है कारण पाछे है ॥
२११ लक्षिता
लखे ते
धर्म॥ को
॥ प्रीति आन्या नायिका है॥
लखि जी होय
सो पहिलो मर्म है॥ २१२
मेरे आज
आगि तन लाज॥ २१३॥
मेरे चैन-चैन ॥ क्यों
कमल का

खी ने रति के चिन्ह जानि लिये॰ यातें लक्षिता है॥ और नैन॰बैन
पमेय हैं तिनको विकलावो एक धर्म है॰ यातें प्रथम तुल्य योगि
। है और चन्द्रमा कमल उपमान को लाजवो एक धर्म है यातें
यम तुल्य योगिता है ॥११३॥ **अथ कुलटा द्वितीय तु-
ल्य योगिता लक्षण ॥ दोहा ॥** बहुत नरन सों जो रमै
सो कुलटा तिय मान ॥ वृत्ति तुल्य हित अहित में तुल्य योगिता आ
॥११४॥ **टीका ॥** जो बहुत पुरुषन सौं रमै सो कुलटा तिय-
को प्रमान है॥ हित अहित में समान वृत्ति होय सो दूसरी तुल्य
योगिता है॥११५॥ **अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगि
ता उदाहरन ॥ दोहा ॥** ऊंच नीच हित अहित में करे न तन
क विचार ॥ घालक पालक नरन में करे सुरत उपचार ॥११५॥
टीका ॥ ऊंच नीच में और हित अहित में तनक भी विचार न
हीं करे मारवा वाला॰ पालवा वाला आदमीन में सुरत को जतन
करे है॥ यहां घणा पुरुषन सैं सुरत चाहे है॥ यातें कुलटा नाय
का है॥ और मार वा॰पालवा वालान में रति करि वो समान व्यव
हार है॰ यातें द्वितीय तुल्य योगिता है ॥११५॥ **अथ प्रथ-
म अनुसयाना तृतीय तुल्य योगिता लक्षण
दोहा ॥** वर्तमान संकेत को विगरत देखि डराय॥ कम गुन को
अति गुनन संग वर्नन तृतिय कहाय ॥११६॥ **टीका ॥** वर्त
मान मकान के नाई बिगड़तो देखि डरपे सो पहिलो अनुशय
ना नायिका है॥ कमगुणी को अत्यंत गुणी के संग वर्नन हो
य सो तीसरी तुल्य योगिता है ॥११६॥ **अथ प्रथम अनु
सयाना तृतीय तुल्य योगिता उदाहरन ॥ दोहा**
वृंदावन अरु चैत्ररथ नंदन सम सर सात॥ सबै ऋतु सम हैं पै
अली सुहि ऋतु राज न भात ॥११७॥ **टीका ॥** यहां वसंत में

गार हो वासों संकेत बिगास्यो यातें प्रथम अनु
और चैत्र रथ नंदन बड़े हैं ॥ तिनकी समान वृंदावनको
न है ॥ यातें तृतीय तुल्य योगिता है । अथ द्वितीय अनु
सयाना दीपक लक्षण ॥ दोहा ॥ होनहार
को सोचे मान अभाव ॥ दीपक वर्ण्य अवर्ण्य को धर्म
ना पाव ॥ ११८ ॥ टीका ॥ होवा वाला संकेत को अभाव
नि करि के सोचे सो दूसरी अनुसयाना है ॥ वर्ण्य अवर्ण्य
मं को एकता होय सो दीपक अलंकार है ॥ ११८ ॥ अथ
द्वितीयानुसयाना दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥
रखी तिहारे सासरे है बन ताल अपार । तहँ मराल उत्तम
क्रीड़ा करत अपार ॥ ११९ ॥ टीका ॥ यहाँ नायिका ने
वाला संकेत को सोच कर्यो ताकों सखी नें समुझाई यातें
री अनुसयाना है ॥ और मराल उपमान उत्तम पुरुष
ड़ा करवो एक धर्म है यातें दीपक है ॥ ११९ ॥ अथ तृती
यानुशयाना प्रथम दीपका वृत्ति लक्षण ॥
हा ॥ पिय सहेट गो मैं न गइ यों गनि त्यागे धृति ॥ पद की
आवर्ति होय सो प्रथम दीपका वृत्ति ॥ १२० ॥ टीका ॥
स सहेट मैं गयो मैं नहीं गई यों गनि करि के धीरज
तीसरी अनुसयाना नायिका है ॥ पद की आवृत्ति होय सो
नी दीपका वृत्ति है ॥ १२० ॥ अथ तृतीयानुसयाना
प्रथम दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरी
री कर माल उर धरि आवत नंदलाल ॥ सरसाने लखि
इ सरसाने लो बाल ॥ १२१ ॥ टीका ॥ कर में हरी छरी
में माला धारि करि के नंदलाल कों सरसाया हुया आवता
ख के ताक्या तीर की तरह विकल भई ॥ यहाँ नायिका कों

हेट मैं सौं आयो देखि कै दुख पाई यातें तीसरी अनुसयाना है
और सरसाने सरसाने पद एक है अर्थ न्यारो न्यारो है यातें प्र
थम दीपका वृत्ति है ॥१२१॥ **अथ मुदिता द्वितीय दी
पका वृत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥** लखि चित चाही होत
मन हर्ष मुदिता मानि ॥ द्वितिय दीपका वृत्ति है अर्थ वृत्ति पि
छानि ॥ १२२॥ **टीका ॥** चित की चाही होती देखि करि कै
मन में हर्ष सो मुदिता नायिका मानों ॥ अर्थ की आवृत्ति हो
य सो दूसरी दीपका वृत्ति पिछानो ॥१२२॥ **अथ मुदिता
द्वितीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** रहि है
एकली घर वधू जे हैं सगरे प्रात ॥ विकसे तिय के दृग सुनत फू
ले सगरे गात ॥१२३॥ वधू है सो एकली घर रहैगी सवेरे सब जावैगा सुनतां
ही तिय के नेत्र विकसे सब गात फूल्या यहां एकली रहवासों प्रसन्न भई
यातें मुदिता नायिका है और विकसवो फूलवो पद न्यारे हैं अर्थ एक है और दूसरी दीपका वृत्ति
१२३॥ **अथ गनिका तृतीय दीपका वृत्ति लक्षन
दोहा ॥** धन दे जासों रति करै सो गनिका परिमान ॥ आवृ
त्ति जु पद अर्थ की तीजी जानि सुजान ॥ १२४॥ **टीका ॥**
धन दे जासों रति करै सो गनिका को परिमान है ॥ पद अर्थ की
आवृत्ति होय सो तीसरी दीपका वृत्ति जानौं ॥१२४॥ **अथ
गनिका तृतीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥**
धन दाय की वात सुनि श्रवन तृप्त होजात ॥ घर आवत ल
खि नयन मन तृप्त होत हर्षात ॥ १२५॥ **टीका ॥** धन देवा
वाला की वात सुनि कै श्रवन तृप्त हो जावे हैं घर आवता देखि
कै नेत्र मन हर्षावें हैं यहां धन दायक सें हर्षावा तें गनिका है
और तृप्त तृप्त पदवी एक है ॥ अर्थ वी एक है यातें तीसरी दीप
का वृत्ति है ॥१२५॥ **अथ अन्य नायिका वर्णन ॥**

दोहा ॥ मुग्धादिक भेद हीन जे स्वकिया परकीयारु ॥ स
मान्या में होत ये तीन नायिका चारु ॥ १२६ ॥ चौपाई
अन्य संभोग दुःखिता जानौं ॥ पुनि वक्रोक्ति गर्विता ठानौं
पुनि यों मान वती उर आनौं ॥ तीन नायिका ये सब मानौं ॥
१२७ ॥ अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति बस्तूप
मा लक्षण ॥ दोहा ॥ निज नायक सों आन तिय रमी
जि मन माहिं ॥ अन्य सुरत दुखिता कहो दुखित होय तिय
ताहि ॥ १२८ ॥ टीका ॥ अपना नायक सों और स्त्री को रमी
मानि करि के मन में दुखित होय सो अन्य सुरत दुःखिता ना
यिका है ॥ १२८ ॥ दोहा ॥ उपमानरु उपमेय जुग वाक्य धर्म
एक होय ॥ बरनत प्रति बस्तूपमा भिन्न भिन्न पद जोय ॥ १२९
टीका ॥ उपमान उपमेय दोनूं वाक्यन को एक धर्म होय
प्रति बस्तूपमा कहे है न्यारा न्यारा पद देखि के ॥ १२९ ॥
अथ अन्य संभोग दुखिता प्रति बस्तूपमा
उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिचले भूषन बसन की सौतिन सोहि
न ॥ अधिक लोन की दारि वर कैसे हू नहिं भात ॥ १३० ॥
बिचल्या अंग भूषन बसन की सौति मोको नहीं सुहावे प
रा लौन की सुंदर दाल कैसे भी नहीं भावे यहां सौति के
चिन्ह देख्या याते अन्य संभोग दुःखिता नायिका है औ
पूर्वार्द्ध में उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है ॥
को न सुहात नहीं भात धर्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं
प्रति बस्तूपमा है ॥ १३० ॥ अन्यच्च ॥ नीति मंजरी ॥
दोहा ॥ अस्तुति कीने इष्टजन रीझे कबहुन कोय ॥
न मसले नर मनहि लोह सलाका होय ॥ १३१ ॥ आवृति
पक भूषन गुन ही होय वे धर्म्मी ॥ होयहि प्रति वस्तूपमा

ष्टांत तुवे धर्म्य ॥१३२॥ अथ भूयरा चंद्रिका वे धर्म्य प्रति वस्तूपमा उदाहरन ॥ दोहा ॥ बुध ही जानत बुधन को परस परिश्रम ताहि ॥ प्रबल प्रसव की पीर को बंध्या जाने नाहिं ॥१३३॥ टीका ॥ बुधन का परि[illegible] पंडित ही जाने हे ॥ प्रबल जो सं[illegible] ताकौ बाँझ स्त्री नहीं जाने ॥ यहाँ पूर्वार्द्ध में जाने उत्तरार्द्ध में नहीं जाने यह न्यारो २ धर्म है याते वे धर्म्य प्रति वस्तूपमा है ॥१३३॥ दोहा ॥ गुणी वंश में हु मनुज पुजे सुसंगति पाय ॥ तुंबी बिन जग मान नहिं बीणा दंड लहाय ॥१३४॥ टीका ॥ गुण वान वंश में भी उपजो आदमी संगति पाकरि के पुजे ॥ तुंबान बिना जगत में वीणा को दंड आदर नहीं पावे ॥ यहाँ पुजे और मान नहीं पावे यह विरुद्ध धर्म हे याते वै धर्म्य प्रति वस्तूपमा हे ॥१३४॥ अथ गर्विता भेद ॥ दोहा ॥ प्रेम गर्विता एक हे रूप गर्विता होय ॥ निज रूप रु पति रूप को गर्व करे ते होय ॥१३५॥ षट विधि हे गुन गर्विता निज पति विद्या बुद्धि ॥ पति सूरत्व उदारता जानि तन मन शुद्धि ॥१३६॥ होय भाँति कुल गर्विता निजकुल पिय कुल गर्व ॥ करे काहू वक्रोक्ति करि हें ग्यारह भेद सर्व ॥१३७॥ अथ प्रेम गर्विता दृष्टांत लक्षण ॥ दोहा ॥ गर्व करे पति प्रेम को प्रेम गर्विता गाय ॥ होय बिंब प्रति बिंब ते दृष्टांत सु दरसाय ॥१३८॥ टीका ॥ पति का प्रेम को गर्व करे सो प्रेम गर्विता गावो ॥ बिंब प्रति बिंब करि के होय सो दृष्टांत दरसावे है ॥१३८॥ अथ प्रेम गर्विता दृष्टांत उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी पि-

य की प्रीति आति सोहि निरंतर भात॥ जैसे सरद मयंक

को जोन्ह सुहात॥ २३८॥ टीका॥ हे सजनी पिय की

प्रीति सोकों निरंतर भावे है॥ जैसे सर्द का चंद्रमा की चाँदनी

को सुहावे है- यहां पिय की प्रीति बहुत भावे है याते

ष्ठिता नायिका है- और नायक की प्रीति बिंव है चंद्रमा

दनी प्रति बिंब है॥ याते दृष्टांत अलंकार है॥ २३८॥ नीति

दू॥ दोहा॥ सब जग के व्यवहार की नीति बिना थित

भोजन बिने प्रानीन की ज्यौं तनु थित नहि आहि॥ २४०॥

टीका॥ संम्पूर्ण संसार का व्यवहार की नीति बिना थिति

हो॥ जैसे भोजन बिना प्रानीन का तनु की थिति नहीं॥

नीति और व्यवहार की थिति बिंब है भोजन और प्रानीन

नु थिति प्रति बिंब है॥ याते दृष्टांत अलंकार है॥ २४०

थ भूषण चंद्रिका वे धर्म्य दृष्टांत उदाहरन॥

दोहा॥ गर्व स मुख मन करत तुव अरि मन सकल नसात

ब लौं रबि को उदय नहिं तब लौं तम ठहरात॥ २४१॥

तेरे गर्व के सामने मन करता ही संपूर्ण वैरी नास कौं प्राप्त होवे

है॥ जब ताई सूरज को उदय नही है तब ताई तम ठहरावे है

यहां नशावो ठहरावो विरुद्ध धर्म है याते वे धर्म्य दृष्टांत

२४१॥ अथ निज रूप गर्विता निदर्शना लक्षण॥

दोहा॥ गर्व करे जद रूप को रूप गर्विता सोय॥ जुग

की एकता निदर्शना सो होय॥ २४२॥ टीका॥ जब रूप को

वे करे सो रूप गर्विता नायिका है दोनू वाक्यन की एकता होय

सो निदर्शना अलंकार है॥ २४२॥ अथ निज रूप

उदाहरन॥ दोहा॥ जो मधुराई सुभगता

माहि॥ येरी अली मयंक में यहां विमलता आहि

२४३॥ टीका ॥ जो मधुरता और सुभगता मेरा मुख मैं राजै है हारी सखी चंद्रमा मैं यही निर्मलता है॥ यहां सुदरता को अभिमान है॥ यातें रूप गर्विता नायिका है और सुभगता मधु ई है सोई चंद्रमा मैं निर्मलता है यह दोनू वाक्यन की एकता है यातें निदर्शना अलंकार है॥२४३॥ अथ द्वितीय निदर्शना लक्षण॥ दोहा॥ वृत्ति पदारथ की जहां औरठौर वहराव॥ यह निदर्शना दूसरी कवि गुलाब मन भाव॥ २४४॥ टीका॥ जहां पदार्थ की वृत्ति और ठौर वहरावै यह दूसरी निदर्शना गुलाब कवि का मन मैं भाव है अर्थात् पदार्थ के नाल एक वस्तु की लीला गुन धर्म की है२४४॥ अथ पिय रूप गर्विता द्वितीय निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ पिय चष खंजन चरित गहि मन रंजन करि देत॥ बचन पियूष बिलास लहि काहि मोल नहि लेत॥ २४५॥ टीका॥ पीतम का चष है सो खंजन का चरित गह करि कै मन कौं राजी करि दे हैं॥ पिय का बचन अमृत का बिलास कौं प्राप्त हो करि कै कौन कौं मोल नही ले॥ यहां पिय का रूप को गर्व है। यातें पिय रूप गर्विता नायिका है॥ और खंजन की लीला नैनन ने लीनी अमृत का गुन बैनन नैं लीना यातें दूसरी निदर्शना है॥२४५॥ अथ तृतीय निदर्शना लक्षण॥ दोहा॥ क्रिया असत सत करि करै औरन कौ उपदेश॥ तीजी द्विविधि निदर्शना बर्नत सकल बुधेश॥२४६॥ टीका॥ असत सत क्रिया करि कै औरन कौं उपदेश करै सो तीसरी दो प्रकार की निदर्शना संपूर्ण बुधन के ईश बर्नते हैं॥२४६ अथ भूषण चंद्रिका नायिका रहित असदर्थ निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ राज विरोधी नशत है

यों जग कों दरसात ॥ चंद उदय सें तम निकर छिन छिन छीजत जात ॥ २४४ ॥ टीका ॥ राज का बिरोधीन सें हे ॥ ऐसे जगत दरसातो जयो चंद्रमा का उदय सें तम को समूह छिन छिन छीजतो जाय हे यहाँ तम छीजिवो असत किरिया हे यातें सदर्थ निदर्शना हे ॥ २४४ ॥ अथ निज गुन दर्थ निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ निज गुन पियाहु सें सौतिन शिक्षा देत ॥ सब ही पिय बस करन हित गुन चित चेत ॥ २४५ ॥ टीका ॥ अपना गुनसें में पीतम बस करि के सौतिन कों शिक्षा द्यो हूँ सब ही पीतम का बस करिबे वास्ते चित का चेत सें गुन सीखो यहाँ गुन सों मैं कों बस करी हों ऐसें कह वासें निज गुन गर्बिता नायिका और गुन जो सत अर्थ तासों सौतिन कों शिक्षा दीनी यातें दर्थ निदर्शना अलंकार हे ॥ २४५ ॥ अथ मान वती ब्य रेक लक्षण ॥ दोहा ॥ अपर तिया के दरस तें नास कढ़े तें य ॥ संगमादि करि मान सें मानवती तिय होय ॥ २४६ ॥ और तिया के दर्श तें नास कढ्या तें देख्यो संगमादिक करि कै न सें मान वती नायिका होय हे ॥ २४६ ॥ दोहा ॥ उपमान उपमेय में वे लक्षण व्यतिरेक ॥ अधिक न्यून सम भाव ताको त्रिविधि विवेक ॥ २४७ ॥ टीका ॥ उपमान उपमेय में विशेषता होय सो व्यतिरेक अलंकार हे ॥ अधिक न्यून भाव करि के ताको तीन प्रकार को ज्ञान हे ॥ २४७ ॥ अथ किय मानिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरन ॥ दोहा लखि पिय बिनती रिस भरी चितवे चंचल भाय ॥ नव न से हगन सें लाली अवि छोंदे काय ॥ २४८ टीका ॥ बीनती देखि के रिस सों भरी चंचल भाव सें चितवे

तब खंजन से दृगन में लाली अत्यंत छबि सें छाले है यहाँ पिय की. बीनती तें रिस की भरी छई काँपे है याते स्वकीया मानिनी है॥ और नेत्र उपमेय में लाली सें घरी छबि छाई याते अधिक व्यतिरेक है॥१४८॥
अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरन दोहा ॥ सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत नवाय॥ तव खंजन से चखन में चंचलता न रहाय॥१४९॥
टीका॥ तिय है सो पिय कौं अपराध सहित देखिकै जब दृगन कौं नवा देहे तब खंजन से नेत्रन में चंचलता नहीं रहे॥ यहाँ पीतम कौं अपराध सहित देखि कै दृगन कौं नवावे है॥याते परकीया मानिनी है और नैनन मैं चंचलता नहीं यह न्यूनता है याते न्यून व्यतिरेक है॥१४९॥ अथ गनिका मानिनी सम व्यतिरेक उदाहरन॥ दोहा॥ सागस लखि धन दानि कौं मौंन गहे मन मारि॥ तव शशि सो मुख बाल को होय श्यामता धारि॥१५०॥ टीका॥ धन दानी कौं अपराध सहित देखि कै मन कौं मारि कै मौंन कौं गहे॥ तब चन्द्रमा शरीको बाल को मुख श्यामता धारि कै होय यहाँ धन दानी कौं देखि कै मौंन गहे है याते गनिका मानिनी॥ और शशि के मुख के समता है॥ याते सम व्यतिरेक अलंकार है॥१५०॥ अथ द्वादश नायिका बर्ननं॥ दोहा॥ प्रोषित पतिका खंडिता कलहांतरिता जानि॥ विप्रलब्ध उत्कंठिता वासकसज्जा मानि॥१५१॥ स्वाधीन पतिका अपर अभिसारिका निहारि॥ नवम प्रवत्स्य त्प्रेयसी कही कोविन निधारि॥

२५२॥ चौपाई ॥ दशम ज्ञात मिप्यत प्रीतिका तहि सकादश ज्ञागत प्रीतिका काहि ॥ पति स्वाधीना वाका ॥ मैं वर्नी लखि ग्रंथ ललामा ॥ २५३ ॥ ... ॥ षित प्रतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ वाचे पीय मैं विरह विकल जो होय ॥ सो है प्रोषित भर्तृका पौं दशा जुत जोय ॥ २५४ ॥ दश दशा नाम ॥ अभिलाष रु चिंता स्मरण गुन कथन रु उद्वेग ॥ धि प्रलाप उन्माद मरन जुत-वेग ॥ २५५ ॥ अथ प्रोषित पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ ज्यौं दि को पूरव लक्षण धारि ॥ वर वर्नन है साथ सहोक्ति निर्धारि ॥ २५६ ॥ टीका ॥ जहां मुग्धा प्रोढा परकीया सामान्या को पहिलो लक्षण धारी ... शब्द करि कै सुन्दर बर्नन होय सो सहोक्ति निर्धा... २५६ ॥ अथ प्रोषित पतिका सहोक्ति ॥ दोहा ॥ कछु दुबराई लखि परी पिय वियोग दुबराई संग सेतता छाई सकल शरीर ॥ २५७ ॥ थोरी सी दुबराई जानि परी प्रीतम का वियोग की मैं दुबराई के साथ सेतता सम्पूर्ण शरीर में छाई हां थोडी दुबराई सैं मुग्धा प्रोषित पतिका है ॥ औ दुबराई के साथ सेतता बर्नी यातें सहोक्ति है ॥ २५... अथ विनोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ सो विनोक्ति सुत जहाँ होय कछुक विन हीन ॥ द्वितिय कछु बिना पावे सोभ नवीन ॥ २५८ ॥ टीका ॥ ... कछु बिना हीन होय सो विनोक्ति है कछु ... नवीन शोभा पावै सो दूसरी विनोक्ति है ॥ २५८ ॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका प्रथम विनोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिरहा नल झल जर निमिषराखी रोकि प्रवीन ॥ तउ जानी आलीन ने बिन लाली छबि छीन ॥ १५९ ॥ टीका ॥ बिरहा नल की झलकी जरनि प्रवीन नैनों मैं रोकि राखी ॥ तौभी सखीन नैं ने लाली बिना छीन छबि जानी ॥ यहां बिरह की झर नायिका ने रोकी सखीन ने जानी याते मध्या प्रोषित पतिका नायिका है और ललाई बिन छबि छीन भई याते पहिली बिनोक्ति है ॥ १५९ ॥ अथ प्रौढा प्रोषित पतिका द्वितीय बिनोक्ति उदाहरन दोहा ॥ सब तनु लाली दुरि गई जरि बिरहानल ताप ॥ तउ मन मोहत आलिन को पीरी प्रभा अमाप ॥ १६० ॥ टीका ॥ सम्पूर्ण तन मैं लाली छिपि गई बिरहानल की ताप से जरि के तोभी अलीन को मन मोहै है अमाप पीरी प्रभा है यहाँ पूरा बिरह सें प्रौढा प्रोषित पतिका नायिका है लाली बिना पीरी प्रभा ने अधिक शोभा पाई याते दूसरी बिनोक्ति है ॥ १६० ॥ अथ समा शोक्ति परि कर लक्षण ॥ दोहा ॥ समा शोक्ति प्रस्तुत विषे अप्रस्तु फुरि जाय आशय कढे विशेषणनि सो परि कर ठहराय ॥ १६० ॥ टीका ॥ प्रस्तुत पद के विषै अप्रस्तुत फुरै सो समा शोक्ति अलंकार है विशेषण पद में आशय कढै सो परिकर अलंकार ठहरावो है ॥ १६१ ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका समा शोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उद्धव देखहु अलिय है है कपटी वे पीर ॥ तजि वर विमला मालती सेवत फला कनीर ॥ १६२ ॥ टीका ॥ हे उद्धव देखो यह अलि कपटी है वे पीर है श्रेष्ठ निर्मल मालती को तजि करिके कनीरकी

पाती पेंा सेंते है ॥ यहाँ कन्हैया के पाप धरे आवे परवीन

प्रोषित पतिका नायिका है ॥ और मन्द रोत सखी अनीर की

पाती आरंभत हैं याते रसा श्रौति अलंकार है ॥ २६२॥

अथ मानिका प्रोषित पतिका परिकर उदाहरन

दोहा ॥ पाती प्रीतम धनद की बांचित प्रिया प्रवीन ॥ लखि

हिमकर बदन तें सखि गन शीतल कीन ॥ २६३ ॥ टी

का ॥ प्रीतम धनद की पाती प्रवीन प्रिया ने बांचतीं हिम

कर बदन सें देखि देखि के सखीन को गन शीतल कर्यो

यहाँ धनद की पाती सें वानिका प्रोषित पतिका नायिका है

और हिम कर विशेषण पद में शीतल कर्वो आशय है

याते परिकर अलंकार है ॥ २६३॥ अथ खंडिता लक्षन

दोहा ॥ अन्य तिया संभोग के चिन्ह धारि निज गात ॥ ना

य खंडिता जासु के आवै पिय परभात ॥ २६४॥ चिंता रूप

भाव पुनि अश्रु पात संताप ॥ चेष्टा हैं निश्वास अरु आदि

अकुलालाप ॥ २६५॥ अथ परिकरांकुर श्लेस लक्ष

ण ॥ दोहा ॥ आशय सहित विशेष्य पद परिकर अंकु

र सोय ॥ बहुत अर्थ पद में कहे श्लेस अलंकृत होय ॥ २६६

टीका ॥ विशेष्य पद आशय सहित होय सो परिकरां

कुर अलंकार है ॥ पद में बहुत अर्थ कहे सो श्लेष अलंका

र होय है ॥ २६६ ॥ अथ मुग्धा खंडिता परिकरांकु

र उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात आय निशि बस को आन ब

तायो धाम ॥ भाल लाल लखि लाल को रही नाय शिर वाम

२६७॥ टीका ॥ सबेरे ही आ करि के रात्र में बस वाको घर

बतायो लाल को भाल लाल देखि के वाम है सो शिर

यहाँ सापराध देखि शिर नवा यासें मुग्धा खंडिता

नायिका है और भाल विशेष्य पद में सापराध पर्यो आशय है ॥ यातै परिकरांकुर अलंकार है ॥ १६७ ॥ **दोहा** ॥ श्लेषसु वर्ण्य रु वर्ण्य करि० वर्ण्य अवर्ण्य विजोय ॥ तृतिय अवर्ण्य अवर्ण्य करि कवि गुलाब मत होय ॥ १६८ ॥ **टीका** श्लेष अलंकार है सो उपमेय उपमेय करि कै उपमेय उपमान करि कै और तीसरा उपमान उपमान करि कै गुलाब कवि का मत में होय है ॥ १६८ ॥ **अथ मध्या खंडिता वर्ण्य वर्ण्य श्लेष ॥ दोहा** ॥ दंपति कंपत विरस बस- बोलत करत न लाग ॥ इक टक चितवत चलत नहि भरे खरे हग राग ॥ १६९ ॥ **टीका** ॥ दंपति जो नायिका नायक हैं सो विरस के बस मैं काँपते हैं ॥ विरस को अर्थ नायिका मैं विना रस नायक मैं विशेष रस बोले नहीं मिलाप करे नही इक टक देखे है चले नही नेन खरे राग सैं भरे हैं राग नाम प्रेम को और रंग को है ॥ यहाँ नायक कौं सदोष देखि काम सैं विरस भई लाज से बोलि नही सकी यातै मध्या खंडिता है और दोनू उपमेय हैं विरस और राग पद के दोय अर्थ हैं याते वर्ण्य वर्ण्य श्लेष है ॥ १६९ ॥ **अथ वर्ण्य अवर्ण्य श्लेष ॥ दोहा** ॥ द्विज कपि हित कर शील घर अरि हारक रण धीर ॥ पालक दीन अनंत के गौर श्याम रघुवीर ॥ १७० ॥ **टीका** ॥ गौर रघुवीर कैसे हैं [illegible] कपि भगवान सैं हित करै है शील के घर [illegible] हारक हैं रण मैं धीर हैं घरा गरीबन के पालक हैं ॥ श्याम रघुवीर कैसे हैं ॥ द्विज पक्षी जटायु कपि वानरान के हित कर हैं अनंत शेषावतार लक्ष्मण जी के पालक हैं ॥ यहाँ गौर रघुवीर उपमेय हैं श्याम रघुवीर

उपमान हैं याते वरायी वराये श्लेष है॥ १७०॥ कोपिनीति
लह के आत्मा मृगेच्च मधुसूदने॥ इति मेदिनी॥ दो०
सुखद मदन दर वीर्य घर राज राज हित धीर॥
तेज शुचि भूति धर गिरिजा पति रघुबीर॥ १७१॥
गिरिजा पति कैसे हैं सुख स्वर्ग का दाता है मदन कामदे
व का विदारी करबा वाला है॥ वीर्य जो शुक्र प्रभाव तेज
सामर्थ्य इनके घर हैं॥ राज राज कुवेर सों हित हैं धै
रज वान है॥ उमा पार्वती जलज चन्द्रमा। शुचि अग्नि
ति भस्म। इन कों धारण करबा वाला है॥ रघुबीर कैसे हैं
सुख आनंद का दाता है मद नहीं है। दर भय नहीं है
र्य जो तेज सामर्थ्य के घर है॥ राजान के राजा जो सार्वभौम
जिनसें हित है॥ धीर पंडित और धीरज वान है उमा
र्ति कांति॥ जलज मोती॥ शुचि शृंगार शुद्ध मंत्री।
ति। इन कों धारन करने वाले हैं॥ यहां रघुबीर उपमेय हैं
गिरिजा पति उपमान हैं॥ याते वरायी वराये श्लेष है॥ १७
सुखं शर्म्मिणा केच॥ वीर्य्यं शुक्रे प्रभावेच॥ तेजः
र्य्ये यो रवि॥ राज राजः कुवेरे पि सार्वभौमे सुधाकरे॥
धैर्य्यो चित्ते स्वैरे बुधे क्लीवंतु कुंकुमे॥ उमा। तसी है म
हरिद्रा कीर्त्ति कान्ति सु॥ शुचि ग्रीष्माग्नि शृङ्गारे प्यासाढे
शुद्ध मंत्रिणा॥ इति मेदिनी॥ चिंता तंत्रे
अवरायी श्लेष॥ दोहा॥ वाहक वृष दाहक
ति अन चाहक काम॥ अति चाहक वन चरन के
न वाम॥ १७२॥ टीका॥ राम कैसे हैं धर्म के चलावे
। अधर्म के दाहक हैं कामना के अत्यंत अन
के अति चाहक हैं॥ वाम कैसे हैं बेल के

हक हैं। अकल्यान के दाहक हैं॥ कामदेव के अत्यंत अ
के चाहक हैं॥ भूत पिशाचादिक के अति चाहक हैं॥ ऐ
रामे वास ऐसे नहीं सुमरे॥ यहाँ राम और शिव उपमान
याते अवरार्य अवरार्य श्लेष है॥ १७२॥ **अथ अप्र
स्तुत प्रशंसा लक्षण॥ दोहा**॥ जहँ प्रस्तुत के कार
॥ अप्रस्तुतहि प्रशंस॥ होय तहाँ सूचन यहै अप्रस्तुत
प्रसंस॥ १७३॥ **टीका**॥ जहाँ प्रस्तुत के वास्ते अप्रस्तुत
को प्रसंसे तहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होय है॥ १७३
छप्पय॥ वर्णन अप्रस्तुतहि माँहि जहँ प्रस्तुत निकसै॥
अरु संबंध हि माँहि अलंकृति यह निति विकसै॥ समस्त
रूप के माँहि जहाँ सम रूप जु निकरे॥ सो सारूप्य निबं
ध नाँहि भिद पहिलो उघरे॥ निकसे विशेष सामान्य मैं
सो सामान्य निबंधना॥ सामान्य विशेषहि मैं कहे सुहे
विशेष निबंधना॥ १७४॥ **दोहा**॥ कारण मैं कारज क
है हेतु निबंधन सोय॥ कारज मैं कारण कहै काय निबंध
न होय॥ १७५॥ **अथ ओढा खंडिता सारूप्य नि
बंधन उदाहरन॥ दोहा**॥ बक धरि धीरज चापदक
रि जो बनि रहे मराल॥ उघरे अंत गुलाब कहि अपनी वो
तनि चाल॥ १७६॥ **टीका**॥ बक है सो धीरज धारिके
कपट करिके जो मराल बनिके रहे है गुलाब कवि कहे
है अंत मैं उघडे अपनी वोली चाल सैं। यहाँ सठ नाय
क सैं नायिका चतुराई करि कहे है याते ओढा खंडिता
है। और बक हंस वरिण वामैं समान रूप मूरख का यहि
वरिण वो निकसै है। याते सारूप्य निबंधना है। १७६
अथ परकीया खंडिता सामान्य निबंधना॥

उदाहरन ॥ दोहा ॥ सीख न मानै गुरुन की । हित मन मानि ॥ सो पीछतावै तासु फल ललन भये हानि ॥ २७६ ॥ टीका ॥ गुरुन की सीख नहीं मानै अहित कों हित मानि करि के सोता का फल मैं है ललन हित की हानि भयापे यहाँ नायक कों सदोष खिके नायिका कहै है ॥ जैसे घर वान की सीख नहीं मानै तो दुख पाई याते परकीया खंडिता नायिका है और हिलो सामान्य वचन सब पे है फेरि पीछतावो एक यक को ही निकसे है यह विशेष है याते सामान्य बंधना है ॥ २७७ ॥ अथ गनिका खंडिता विशेष निबंधनं उदाहरण ॥ दोहा ॥ लालन सुर तरु हू अनहितकारी होय ॥ तिन हू को आदर न है यों बुध लोय ॥ २७८ ॥ टीका ॥ हे! लालन सुर तरु और र भी अनहितकारी होय तिन को भी आदर नहीं होय ऐसे बुध लोग मानै है ॥ यहाँ नायक कों सदोष देखि धनवान की निंदा करै है याते गनिका खंडिता नायिका है और कल्प वृक्ष कुबेर को बरनन है यह विशेष है फेरि सब धनवानन पे लगै है याते विशेष निबंधन है ॥ २७८ ॥ अथ अप्रस्तुत कारन निबंधना ॥ दोहा ॥ लीनों राधा मुख रचन विधि ने सार साम ॥ तिहि मग होय अकाश यह शशि में दीखत प्रयास ॥ २७९ ॥ टीका ॥ राधा को मुख रच वाकों ने तमाम सार लियो ताका मग में होकरि के यह में कालो आकाश दीखै है यहाँ राधा को मुख कारन को वरनन है ॥ तामें मुख कारज की

निकसे है याते कारन निबंधना है ॥ १७९ ॥ **अथ कार्य निबंधना उदाहरन ॥ दोहा ॥** तुव पद नख की द्युति कछुक गइ धोवन जल साथ ॥ तिहिं कन मिलि दधि मथन में चंद भयो है नाथ ॥ १८० ॥ **टीका ॥** तुम्हारा पद का नख की कछुक द्युति धोवन जल के साथ गई ताका कनका मिलि कीरोदधि का मथवा में हे नाथ चन्द्रमा बन्यो है ॥ यहां चंद्रमा कारज को वेनन में नख द्युति कारन की बड़ाई है याते कार्य निबंधना है ॥ १८० ॥ **अथ कलहांतरिता लक्षण ॥ दोहा ॥** पिय आयें माने नहीं फिरि पाछे पछिताय ॥ कलहांतरिता नायिका कही कोविन सुख पाय ॥ १८१ ॥ भ्रांति और संताप पुनि संमोह रु निश्वास ॥ ज्वर रु प्रलापादिक सकल याकी चेष्टा भास ॥ १८२ ॥ **अथ अप्रस्तुतांकुर लक्षण ॥ दोहा ॥** प्रस्तुत वर्णन करि अपर प्रस्तुत द्योतन होय ॥ तहां प्रस्तुतांकुर कहत कवि गुलाब बुध लोय १८३ ॥ **टीका ॥** प्रस्तुत को बर्णन करि के प्रस्तुत को प्रकास होय गुलाब कबि कहे है बुध लोग है सो तहां प्रस्तुतांकुर अलंकार कहे है १८४ ॥ **अथ मुग्धा कलहांतरिता प्रस्तुतांकुर उदाहरन ॥ दोहा ॥** अली न रोके मालती अली अनत जब जाय ॥ ता पाछे मन मानि दुख कली [illegible] **टीका ॥** [illegible]

[illegible]

अथ पर्यायोक्त लक्षण ॥ दोहा ॥ जहं रचन
यान सों पर्यायोक्त प्रकार ॥ जहं मिस करि कारज करै
य भेद निर्धार ॥ १८६ ॥ **टीका ॥** जहाँ रचना सों बात
सो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ जहाँ मिस करि के कारज
दूसरो भेद है निर्धार निश्चय ॥ १८६ ॥ **अथ मध्याक
लहां तरिता उदाहरन ॥ दोहा ॥** नम्बर दर्शन
ख लघु आदि अंक को भाव ॥ सादर राख्यो तें नसो ॰
ज नहि आव ॥ १८७ ॥ **टीका ॥** नंबर दर्शन लाख लघु
न च्यारौंन का आदि अंक को भाव तैने आदर सहित
राख्यो सो हे अली आज नहीं आवे ॥ यहाँ नायिका नें
क कों बुलावो चाह्यो यातें मध्या कलहां तरिता नायिका
और नंबर को नं। दर्शन को द। लाख को ल। लघु को ल। क
में नंदलाल नाम निकस्यो यह रचना सें बात कही यातें
योक्त अलंकार है ॥ १८७ ॥ **अथ प्रौढा कलहां
ता द्वितीय पर्यायोक्त उदाहरन ॥ दोहा ।**
व नहि मान्यौ मोर मत क्यों अब नचत निकाम ॥ मो
र कत शीत भै लै औं हौं घन श्याम ॥ १८८ ॥ **टीका ॥**
मेरो मत नही मान्यो अब बिना काम क्यों नचे है मेरो
र भरके है आराम भया पै घनश्याम कें लियाऊंगी यह
तब वासों और सखी को कह्यो नही मानि वासों औ
र भरके वाका मिस करि के नहीं जावो कारज साध्यो या
तें दूसरो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८८ ॥ **अथ व्याज स्तु
ति लक्षण ॥ दोहा ॥** इक की निंदा स्तुति मिस स्तु
[illegible]

अस्तुति का मिस करि के वाही की अस्तुति निंदा देखो पैला की निंदा अस्तुति से पैला की अस्तुति निंदा होवे ॥२८८॥ **दोहा** ॥ पर की अस्तुति से जबै पर की अस्तुति साज ॥ व्याज स्तुति यों पाँच विधि कहत सकल कविराज ॥२८९॥ **टीका** ॥ पैला की अस्तुति सें जब पैला की अस्तुति साजे ऐसें व्याज अस्तुति पाँच प्रकार सें सम्पूर्ण कविराज कहें हैं ॥२८०॥ **अथ वाही की निंदा सें वाही की स्तुति** ॥ **दोहा** ॥ रंक सुदामादिकन के भरे दीने भंडार ॥ कंसादिक कीने निधन है हरि बिनहि विचार ॥ **टीका** ॥ हे हरि सुदामादिक कंगालन कों घणो धन दीनों कंसादिककों नाश कर्यो बिना ही बिचार यहाँ कृष्ण की निंदा में स्तुति है याने प्रथम व्याज स्तुति है ॥२८१॥ **अथ पर कीया कलहाँ तरिता वाही की स्तुति सें वाही की निंदा** ॥ **दोहा** ॥ तेरी सुघराई सखी मो पै कही न जाय ॥ पर भय भरि बोलो न तब अब कर मलि पछिताय ॥२८२॥ **टीका** ॥ हे सखी तेरी चतुराई सो पै कही नही जाय ॥ तब पैला का भय में भरि करि के बोली नही अब हाथ मसलि करि के पछितावे है ॥ यहाँ पर भय सें परकीया कलहाँ तरिता है और सुघराई स्तुति में सरस्वता निंदा निकसे है याते द्वितीय व्याज स्तुति है ॥२८३॥ **और की निंदा सें और की स्तुति** ॥ **दोहा** ॥ दश शिर कुमति करान ने कर्यो राम अपकार ॥ तज्यो विभीषन ताहि सो कीनों काम उदार ॥२८३ **टीका** ॥ कराल कुमति वालो दश शिर है उने राम को अपकार कर्यो ॥ ताको विभीषन ने तज्यो सो बड़ो काम कर्यो यहाँ रावन की निंदा से विभीषन की अस्तुति है याते तीस

ही व्याज स्तुति है ॥ १९३ ॥ और की स्तुति
और की निंदा ॥ दोहा ॥ धन्य विभीषन राम
को सरन सुजान ॥ धिक है जाने अनुज अस दियो
निदान ॥ १९४ ॥ टीका ॥ विभीषन को धन्य है
म के सरणे आयो ताको धिक्कार है जाने असा भाई को
काय निकासि दियो यहाँ विभीषन की अस्तुति सैं
की निंदा है यातें चौथो व्याज अस्तुति है ॥ १९४ ॥
स्तुति सैं और की स्तुति ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य
राधिका पाये पति भगवान ॥ धन्य राधिका मात जिहि
सुता सुजान ॥ १९५ ॥ टीका ॥ राधिका को धन्य है
भगवान पति पाया राधिका की माता कों धन्य है
जान सुता जाई यहाँ राधिका की स्तुति सैं राधिका की
की स्तुति है याते व्याज अस्तुति को पाँचवों भेद है
अथ व्याज निंदा लक्षण ॥ दोहा ॥ पर की
सैं जहाँ पर की निंदा होय ॥ तहाँ व्याज निंदा इकहि भेद
त कवि लोय ॥ १९६ ॥ टीका ॥ जहाँ पेला की निंदा सैं
की निंदा होय तहाँ व्याज निंदा को एकही भेद कवि
हैं है ॥ १९६ ॥ अथ [illegible] कलहाँ तरिता
ज निंदा उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुर तरु सम पिय
गयो करि विनती उपचार ॥ भाल सोर तू निंद्य है निंद्य
पिकार ॥ १९७ ॥ टीका ॥ कल्प वृक्ष की समान पीतम
तजि करि के गयो वीनती जतन करि के हे मेरा भाल तू
और तेरो लिपि करवा वालो निंदा लायक है यहाँ
[illegible] पे पाछताव है यातें कानका कलहाँ तरिता है और
की निंदा में ब्रह्मा की निंदा है यातें व्याज निंदा अलंका

२९७॥ अथ विप्रलब्धा लक्षण॥ दोहा॥ तिय संकेत निकेत मे जाय न देखे पीय॥ काही विप्र लब्धा यसे आरत होय अति जीय॥ २९८॥ निर्वेद रु निश्वास पुनि सखन उराहन सानि॥ अश्रुपात चितादि ही याकी चेष्टा जानि॥ २९९॥ अथ प्रथम द्वितीयाक्षेप लक्षण॥ दोहा॥ आक्षेप सु कहि आपु ही फेरै बात विचारि॥ कहे वच करे निषेध सो द्वितिया क्षेप निहारि॥ २००॥ टी॰ आपही कछु कहि के विचार करि के बात कों फेरै सो प्रथमा क्षेप है॥ बचन कह्न करि के निषेध करे सो दूसरो आक्षेप है॥ २००॥ अथ मुग्धा विप्रलब्धा प्रथमाक्षेप उदाहरन॥ दोहा॥ अबही घर चलि के अली उदय होन दे चंद॥ यों कहि भोरी भामिनी परी सेज दुतिमंद॥ २०१॥ टीका॥ अबही घर चलि के अली चंद्रमा को उदय होवा दे॥ ऐसे कह्न करि के भोरी भामिनी है सो मंद दुति से सेज पे परी॥ यहाँ अबही चलि के चंद्रमा को उदय होवा दे या पराधीन बात सें मुग्धा विप्रलब्धा नायिका है॥ और अब ही चलि यों बात कह्न करि के फेरी चंद्रमा उदय होया दे याते प्रथमा क्षेप है॥ २०१॥ अथ मध्या विप्रलब्धा उदाहरन॥ दोहा॥ आई नही सहेट में आली भूली चाल॥ भाषि बचन कछु कोप करि मौन गही वर बाल॥ २०२॥ टीका॥ सहेट में नहीं आई हे आली चाल भूली हौं यों बचन भाषि करि के कछु कोप करि के सुंदर बाल ने मौन गही यहाँ काम सें थोड़ो कोप कर्यो और लाज सें मौन गही याते मध्या विप्रलब्धा नायिका है और सहेट में आवो कह्न करि के निषेध कीं

दूसरो आक्षेप है ॥२०२॥ अथ तृतीया
या भास लक्षण ॥ दोहा ॥ गुप्त निषेध
धि त्वनिया सेप निकास ॥ है न विरोध विरोध सो
धा भास ॥२०३॥ टीका ॥ छिपि वा तो मने कीर वो
जाहर में कर वो होय सो तृतीया सेप को निकास है
तो नही होय बिरोध सो भासै सो बिरोधा भास
२०३॥ अथ प्रौढा विप्र लब्धा तृतीया सेप
हरन ॥ दोहा ॥ आली घर चलि चलतही कीरि हैं प्रान
यान ॥ पकंचन ही घर होय गो येरी मोहि मसान ॥
टीका ॥ हे आली घर चलि चलतो ही प्रान पयान
पकंचता ही येरी मोकों घर मसान होय गो यहाँ उत्कं
चन बोलै हे याते प्रौढ़ा विप्र लब्धा नायिका है और
चलि यह विधि बचन है घर चलती ही मरि जाऊं गी
ते मति चलै यह निषेध छिप्यो हैं याते तीसरो
है ॥२०४॥ अथ परकीया विप्र लब्धा बिरोधा
स उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास ननद या तान कों आर्
नीठि वाय ॥ अब आली घर गमन की सुधि आयें
जाय ॥२०५॥ टीका ॥ सास ननद दौरानी
नीठि सुवा करि कै आई हे आली अब घर चलि वाकी
सुधि आया सों शरीर की सुधि जाय है ॥ यहाँ
जिठानीन कों सुवा करि कै आई ऐसे कह वासों पर
या विप्र लब्धा नायिका है ॥ और सुधि आवा से सुधि
जावो विरोध सो भासै है विरोध नहीं याते विरोधा
भलंकार है ॥२०५॥ अथ गनिका विप्र लब्धा
भास उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई वर सन वा

मैं कारि घन आसा धाम ॥ भई बिहाल निरास लखि
न श्यामन घन श्याम ॥ २०६ ॥ टीका ॥ बरसना ~
लसै धन की आसा करि कै ई धाम मैं आई बिहाल
ई निरास भई घन श्याम जो मेघ हैं उनको देखि कै
ल श्याम जो श्री कृष्ण उनकों नहीं देखि कै यहाँ धन
ो आसा करि कै धाम मैं आई यातें गनिका विप्र लब्धा
ायिका है और घन श्याम है सो घन श्याम नहीं यद्यपि
ध सो देख्यो विरोधा भास अलंकार है ॥ २०६ ॥ अथ
त्कंठिता लक्षण ॥ दोहा ॥ संकेत स्थल मैं गई पी
न आयो होय ॥ ताको कारन चित दै उन्ना कहिये सो-
॥ २०७ ॥ जंभा अगराई अरति कंप रुदन संताप ॥ स्वा-
वस्था कथनादि ये याकी चेष्टा थाप ॥ २०८ ॥ अथ
विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥ कारन बिन जह काज
ै नहँ विभावना मानि ॥ लघु कारण तै काज ह्वै दूजो भेद
ुनानि ॥ २०९ ॥ टीका ॥ जहाँ कारन विना काज होय
हाँ विभावना मानो ॥ छोटो कारण सैं कारज होय सो
ूसरो भेद जानों ॥ २०९ ॥ अथ मुग्धा उत्कंठिता
विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय ऐहैं ऐहैं न
ा सोचत रहित उमंग ॥ पिय रंगी लाये बिना केसर के
र रंग ॥ २१० ॥ टीका ॥ पीतम आवेगा अथवा नहीं
आवेगा उमंग रहित सोचतां केशर लगाया विना केशर
के रंग सी पीली भई ॥ यहाँ पीतम आवेगा अथवा नहीं
आवेगा ऐसैं उमंग रहित सोचे है यातें मुग्धा उत्कंठिता
ायिका है ॥ और केसर कारन है ताका लगाया विना केस
के रंग सी पीली भई कारन कह्यो नहीं प्रथम विभावना है

२१०॥ अथ मध्या उत्कंठिता द्वितीय उदाहरन ॥ दोहा ॥ खानि सनेह सकोच की सूं न निहारि ॥ भई विकल मृदु शशि किरनि भई र फारि ॥ २११॥ टीका ॥ सनेह सकोच की सो सूनों घर देखि के विकल भई चंद्रमा की रनि है सो हृदा कों फाड़ि करि के पार भई यहाँ सनेह की खानि में मध्या उत्कंठिता नायिका है॥ द्रमा की कोमल किरनि थोड़ा कारण सें पार होवे कारज भयो याते दूसरीविभावना है ॥ २११॥ अथ थ चतुर्थ विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥ कारन होय जहँ प्रति बंधक हू होत ॥ चवथ अकारन तें कारज करे उद्योत ॥२१२॥ टीका ॥ जहाँ प्रति ओ रोकवा वालो है ताके होता छता वी पूरन कारज सो तीसरो विभावना है॥ अकारन वस्तु तें कारज र सो चौथी विभावना है ॥ २१२ ॥ अथ प्रौढ़ा ता तृतीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ वारि बयार तउ झुरसि गई विन नाह ॥ आये हेतु नाहि यों सोचत चित चाह ॥२१३॥ टीका॥ वरसे है वयार चले है तौभी नाह विना वलि गई लम कोई वास्ते नही आयो ऐसे चित्त की चाह सें चे है ॥ यहाँ झुरसि वासें चित्त की चाह सें प्रौढ़ा ठिता नायिका है ॥ और वरसिवो वयार चालिवो वा वालो है तें भी झुरसिवो पूरन कारज भयो यातें विभावना है ॥२१३॥ अथ परकीया उत्कंठिता विभावना उदाहरन ॥ ॥ से आर

काम तजि आये नहिं नंदलाल ॥ यों कहि सो कलिन पे, पावे खेद विशाल ॥ २२४ ॥ **टीका** ॥ घर को काम तजि करि के आई नंदलाल नही आये यों कहकरि के फूलन की कलीन पे सोवता घणा खेद पाइया यहां घर को काम तजि वासौं परकीया उत्कंठिता नायिका है ॥ और फूलन की कली अकारन वस्तु तें पसेव कारज भयो यातें चौथी विभावना है ॥ २२४ ॥ **अथ पंचम छठी विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥** कारज हेतु विरुद्ध ते होय सु पंचम पाव ॥ कारज ते कारन जनम षट विभावना भाव ॥ २२५ ॥ **टीका** ॥ विरुद्ध कारण सें कारज होय सो पंचम विभावना है ॥ कारज तें कारन को जनम होय सो छठी विभावना को भाव है ॥ २२५ ॥ **अथ परकीया उत्कंठिता पंचम विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥** कुल नारिन भय ताप सहि आई शीतल धाम ॥ ह्यां पिय विन हिमकर अली जारत मोहि निकाम ॥ २२६ ॥ **टीका** ॥ कुल की स्त्रीन को डर और दुख सह करि के सीतल घर में आई है अली यहां पीतम विना हिमकर चन्द्रमा है सो मोकों विना काम जलावे है ॥ यहां कुल नारीन का भय और ताप सह वासौं परकीया उत्कंठिता नायिका है और हिमकर सें जलावो विरुद्ध कारज भयो यातें पंचम विभावना है ॥ २२६ ॥ **अथ गनिका उत्कंठिता तृतीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥** धन दायक आयो नहीं कोहि कारन इहि याम ॥ यों भाषत चंपक वन तें सौरभ वही असमान ॥ २२७ ॥ **टीका** ॥ धन को

देवा वालो है घर में काई कारण सें नहीं
भापना चष रूपन सें समान सोरत वही
को देवा वालो नहीं आयो ऐसें कह वासों
उत्कंठिता नायिका है ॥ और अच्छो कारज सें सो
ता कारनभयो यातें छटी विभावना है ॥ २१७
थ वासक सज्जा लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय
न को यह दिवस मेरो ऐहे आज ॥ वासक
इमि सजे सुरत को साज ॥ २१८ ॥ दूती अभ्य
आगम दर्शन भास ॥ सामग्री संपादन रु जानि
हास ॥ २१९ ॥ अथ विशेषो असंभव
दोहा ॥ विशेषोक्ति जौन हेतु है तऊ काज
कारज बिन संभावना होय असंभव सोय ॥ २
अर्थात हेतु होय तो भी काज नही होय सो
क्ति अलंकार है ॥ बिना संभावना कारज होय
व अलंकार है ॥ २२० ॥ अथ मुग्धा वासक
विशेषोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोई
ज पै लोयन मूंदि विशाल ॥ पिय मग देखन
उ खोले नैन न बाल ॥ २२१ ॥ टीका ॥ सोभाय म
के ऊपर सूती विशाल नेत्रन कों मूंदि करि के पीतम
ग देख वाकी चाह है तो भी बाल हेसो नेत्रन कों
ले ॥ यहां नेत्र नही खोले यासें मुग्धा वासक
यिका है और पीतम की मग देखि वाकी चाह
तो भी देखवो कारज नही भयो यातें विशेषोक्ति
कार है ॥ २२१ ॥ अथ वासक
उदाहरन ॥ ॥ का जाने हा यह

है आन॥सावन तीज उछाह दिन गांज पर गांगस
ज॥२२२॥ **टीका॥** कौन जाने हौ आज यह दिन
ो होय गो सावन में तीज को उछाह को दिन में श्रेष्ठ
तिन का समाज को तीज कीर के यहाँ काम सें उत्स
मान्यो लाज सें सौतिन कौं श्रेष्ठ मानी याते मध्या-
सक सज्जा है और ई काम को हो वो संभव नहीं हो
ायो याते असंभव अलंकार है॥२२२॥ **अथ प्रथ**
द्वितीय असंगति लक्षण॥ दोहा॥ प्रथम
संगति कारण रु कारज न्यारी ठौर॥ द्वितिय और थलका
कौं करे और ही ठौर॥२२३॥ **टीका॥** कारण न्यारी
र होय कारज न्यारी ठौर होय सो पहिली असंगति है
ौर थल को काम कौं और ठौर करे सो दूसरी असंगति है
२३॥ **अथ प्रौढा वासक सज्जा प्रथम असं**
ति उदाहरन॥ दोहा॥ सखिन सहित साजत स-
न विमल बनावत बास॥ देन दान लखि बाल कौं थकी
ति श्रम तास॥२२४॥ **टीका॥** सखीन सें हित सय
ाजत निर्मल वास बनावत बाल कौं दान देती देखि
ाको श्रम सें सौति है सो थकी यहाँ दान देवासें प्रौ
वासक सज्जा नायिका है और दान को परिश्रम को
नायिका में है थकिवो कारज सौतिन में है याते प-
ली असंगति है॥२२४॥ **अथ परकीया वासक**
ज्जा द्वितिय असंगति उदाहरन॥ दोहा॥
र हरे सौज सेज वर कीर नव सत सिंगार॥ हाथि हाथसें
रि दियो दियो बयार मतार॥२२५॥ **टीका॥** हरे हरे
ष्ठ सेज सजि के सोलह सिंगार करिके॥ हाथके हा-

थ मैं दियो पवन मैं धरि दियो ॥ यहाँ दियो बया
धरि वासों पर कीया वासक सज्जा नायिका है॥
दिया को काम विना पवन की ठौर मैं धरि वाको
सो पवन की ठौर मैं धर्यो यातें दूसरी असंगति है।

अथ तृतीय असंगति प्रथम विषम

आ ॥ दोहा ॥ आन करत आनहि करै तृतिय
ति आनि ॥ मन मिलते के संग मैं प्रथम विषम मन
२२६ ॥ टीका ॥ और करतौ और करै सो तीसरी
जानौ ॥ मन मिलते के संग मैं मन मैं प्रथम विषम

२२६ ॥ **अथ गनिका वासक सज्जा तृतीय असंगति उदाहरन ॥ दोहा ॥** सेज साजि भूषन
थ करि हरषि मन माहि ॥ नथ पहरत किहिं कारने
नारि उमाहि ॥ २२७ ॥ **टीका** ॥ सेज साजि के मन मैं
षि के भूषन बसन पहिर कै नथ पहरती का है वाले
रा करि के उतारि धरी। यहाँ नथ ले वाले वाले उता
याते गनिका वासक सज्जा है नथ पहरती उतारि
और काम कर्यो याते तीसरी असंगति है ॥ २२७ ॥

स्वाधीन पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ सु स्वाधीन पतिका
सनि रह सदा आज्ञाकारी पीय ॥ २२८ ॥ बन विहार आदि
जोवन नियम करि तीय ॥ २२८ ॥ बन विहार आदि
ते मदनोत्सव मैं प्रीति ॥ मद रु मनोरथ प्राप्ति पुनि
कार है रीति ॥ २२९ ॥ **अथ मुग्धा स्वाधीन**
का **प्रथम विषम उदाहरन ॥ दोहा ॥** मन मिल
ला निधि लाल चित मिल यहे भोरी बाल ॥ मन मि
जनि सेज कहाँ मनो लख्यो निधि माल ॥ २३

टीका ॥ सम्पूर्ण कलसन को खानि लाल कहाँ यह भोरी वाल कहाँ यहाँ अन मिल को अत्यंत मेल है सो हे अली भाल की लिपि सें जान्यौं यहाँ भोलापन से मुग्धा है और मेल हो वासें स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ और अन मिल ता को संग है यातें प्रथम विषम है ॥२३०॥ **अथ द्वितिय तृतीय विषम लक्षण ॥ दोहा ॥** कारन कारज भिन्न रंग द्वितिय विषम गण नीय ॥ भल उद्यम ते अभल फल होय सु विषम तृतीय ॥२३१॥ **टीका ॥** कारन को और रंग होय कारज को और रंग होय सो दूसरो विषम गणो भला उद्यम सें बुरो फल होय सो तीसरो बिषम है २३१॥ **अथ मध्या स्वाधीन पतिका द्वितीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥** खुले अन खुले चष निरखि रंगे लाल रंग श्याम ॥ ता लाली की झलक ते भयो सौति मुख श्याम ॥२३२॥ **टीका ॥** खुल्या अन खुल्या चषन सें देखि करि कै श्याम को लाल रंग मे रंग्या तिस लाली की झलक सें सौतिन को श्याम मुख भयो यहाँ खुल्या अन खुल्या चषन सें मध्या स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ और लाली की झलक कारन को रंग लाल है सौतिन को मुख श्याम कारज श्याम रंग है यातें दूसरो विषम है २३२॥ **अथ प्रौढा स्वाधीन पतिका तृतीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥** केलि कला रस रीति करि नें बालम बस कीन ॥ अब और संतत मेल नें बोलि न सकौं अलीन ॥२३३॥ **टीका ॥** केलि कला रस की रीति करि के मैने बालम कौं बस कर्यो हे अली अब निरंतर मेल सें अलीन से नहीं बोलि सकौं यहाँ केलि कला की

पीतम कों वस कर्यो याते प्रौढा स्वाधीन पतिका
का है और बालम कों बस कीर वो भलो काम है तासौं
स्वीन कों नही मिलवो बुरो फल भयो याते तीसरो
क है ॥२३५॥ अथ प्रथम द्वितीय लछन॥
हा॥ बरनन दो सम रूप को ताहि प्रथम सम जाय॥
कारन के गुन काज में मिलें द्वितिय सम होय॥२३
टीका॥ दो समान रूप को बर्नन होय ताकों प्रथम
म देखो॥ कारन के गुन काज में मिल्या सों दूसरो
होय है॥२३५॥ अथ परकीया स्वाधीन
का प्रथम सम उदाहरन॥ दोहा॥ प्रेम पास
बस कियो दे दधि दान रसाल॥ गुन गर्वीली बाल
विद्या निधि नंदलाल॥२३५॥ टीका॥ प्रेम की पा
से पकडि करि के वस कर्यो सुंदर दधि दान दे करि
के गुन की गर्वीली बाल ने विद्या का निधि नंदलाल
यहां दधि दान दे करि के वस कर वासों परकीया स्वा
धीन पतिका नायिका है॥ और बाल गुन गरवीली
का विद्या निधि हैं दोनूं समान हैं याते प्रथम सम
हैं॥२३६॥ अथ परकीया स्वाधीन पतिका
द्वितीय सम उदाहरन॥ दोहा॥ विहरत कुंज
सें परयो जाय राधिका जाल॥ यामें अचिरज कोन सखि
आनि बिहारी लाल॥२३७॥ टीका॥ कुंजन में डोल
तो उड़्यो राधिका का जाल में पड़ गयो हे सखी यामें
कोंन अचिरज है विहारी लाल है॥ यहां डोलता कृष्ण
कों वस कर्या याते परकीया स्वाधीन पतिका नायि
॥ और डोलवा कारन का गुन बिहारी लाल का

ज से पाया याते दूसरो सम है ॥ २३७ ॥ अथ त्रतीय सम बिचित्र लछण ॥ दोहा ॥ काज सिद्ध निर्विघ्न ह्वे जतन करत सम तीन ॥ इच्छा फल विपरीत को जतन बिचित्र प्रवीन ॥ २३८ ॥ टीका ॥ जतन करतां ही निर्विघ्न कारज सिद्ध हो जाय सो त्रतीय सम है ॥ और विपरीत फल की इच्छा को जतन करे सो विचित्र अलंकार है हे प्रवीन ॥ २३८ ॥ अथ गनिका स्वाधीन पतिका त्रतीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ हंसि हसाय वरषा परस आज वाल भरि वाथ ॥ लीनो सदन वसाय हरि सुरतरु गोपीनाथ ॥ २३९ ॥ टीका ॥ हंसि के हसाय के रस वरषाय के आज बाल ने वाथ भरि के सुरतरु गोपी नाथ हरि कों घर में वसा लिया यहां सुरतरु का वस कर याते गनिका स्वाधीन पतिका नायिका है और हंसि हसावा जतन सें कृष्ण को वस करि वो कारज निर्विघ्न सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २३९ ॥ अथ अभिसारिका लछण ॥ दोहा ॥ पिय पै जाय कि पीतसहि आप बुलावे जोय ॥ पाय प्रेम मद मदन वस सु अभिसारिका होय ॥ २४० ॥ होय समय अनुरूप ही भूषण शंका जानि ॥ प्रज्ञा ने पुन्य रु कपट हासादिक पहिचानि ॥ २४१ ॥ ये चेष्टापर नारि की है सेया की नांहि ॥ कृष्ण शुक्ल दिवादि भिद हैं पर कीया मैं हि ॥ २४२ ॥ निज गातन मैं लीन ह्वे रोकि सु भूषण ध्वान ॥ दावि गात्र वसनन विमल कुल आकरत पयान ॥ २४३ ॥ मद सें विहल बोलनी प्रफुलित नैन विलास ॥ हंसनी सवलती भय रहित चेटी गौनप्रकास ॥ २४४ ॥

अद्भुत उज्जल वेष धर कारि नूपुर कनकार ॥ अमुदित
लित मुख प्रगट वार मुखी अभिसार ॥२५५॥ १

यथा अभिसारिका विचित्र उदाहरन॥

दोहा ॥ पिय पैं जात सखीन संग सलज्ज सलौनी जो
ज्यौं ज्यौं नीची होत अति त्यौं त्यौं ऊंची होय ॥२

टीका ॥ सखीन का संग सें पिय पैं जाती लाज
नायिका जैसे जैसे अत्यंत नीची होय है तैसे तैसे
होय है यहाँ सलज जावा सें मुग्धा अभिसारिका
का है और नीचा होवा सों ऊंचो होवो उलटो फल
याते विचित्र अलंकार है ॥२५६॥ **अथ प्रथम**
तीय अधिक लछन ॥ दोहा ॥ अधिक
आधार तें आधे यसु अधिकाय ॥ द्वितिय अधिक
य ते जब आधार बढ़ाय ॥२५७॥ **टीका ॥** बड़ा
र सें आधेय अधिकावे सो पहिलो अधिक है॥
धेय सें आधार बढे सो दूसरो अधिक है॥२५७॥

मध्या अभिसारिका प्रथम अधिक
रन ॥ दोहा ॥ चली लाज सनेह की तिया पिय
त ॥ तिहि लखि बढ्यो अलीन मन त्रिभुवन मे न
त ॥२५८॥ **टीका ॥** लाज सनेह की भरी ऊई
है सो पिया पैं जाय है ताको देखि करि कै अलीन
न बढ्यो सो तीनों भवन में नही मावे यहाँ लाज
सनेह की भरी ऊई तिया है सो पिया पै जाय है
मध्या अभिसारिका नायिका है ॥ और त्रिभुवन
है तामें अलीन को मन आधेय नही मया
अधिक है ॥२५८॥ **अथ प्रौढा**

रिका द्वितीय आधिक उदाहरन॥ दोहा

म पगी अति मंद गति चली अलीन मझार॥ उजियारी मु
चंद की भरी गलीन अपार॥ २४९॥ टीका॥ प्रेम की प
जई अत्यंत मंद गति से अलीन का बीचि मे चली मुख चं
मा की उजियारी गलीन मे अपार भरी यहाँ प्रेम से च
याते प्रौढा प्रेमाभिसारिका नायिका है और मुख चंद्र
की उजाली आधेय है सो गली आधार से मागई याते
सरा आधिक है॥ २४९॥ अथ अल्प अन्योन्य ल
छन॥ दोहा॥ अल्प अल्प आधेय सें अल्प होय आ
धार॥ अन्योन्य हि उपकार ते अन्योन्यालंकार॥ २५०॥
टीका॥ अल्प जो आधेय है उसूं आधार अल्प होयसो
अल्पालंकार है परस्पर उपकार से अन्योन्यालंकार है॥
२५०॥ अथ प्रौढा गर्वाभिसारिका अल्प उदाह
रन॥ दोहा॥ कीरति जा निज भवन मे तुम्है बुलावत आ
हि॥ सुनि सुख भयो सु लाल के मन मे मायो नाँहि॥ २५१॥
टीका॥ राधिका अपना मकान से हे लाल तुमकों बु-
लावे है॥ सुनि वांके सुख भयो सो लाल के मन मे नहीं
माबो यहाँ पति कों अभिमान के वस से बुलावे है याते
प्रौढा गर्वाभिसारिका नायिका है॥ और सुख है सो आ
धेय है मन आधार है सो सुख छोटा आधेय ते छोटो
है याते अल्प अलंकार है॥ २५१॥ अथ प्रौढा का-
माभिसारिका अन्योन्य उदाहरन॥ दोहा॥
[illegible] लपटि अहि पाय॥ अहि
[illegible] और सइ पाय॥ २५२॥ टी॰
[illegible] धारे के अहि है सो पवन

मे लगि गया पगन से सर्पन की छबि छाई सर्प गन की छबि छाई यहाँ कामांधा तासे पगन मे सर्प क्या को ठीक नही पड्यो याते प्रौढा और परस्पर उपकार है याते अन्योन्यालंकार २५२॥ अथ प्रथम द्वितीय विशेष

दोहा ॥ बिना रव्यात आधार के रह्त आधेय एक वस्तु कौं बहुत कौं बरनत दूजो वेष ॥ २५३॥ विरव्यात आधार बिना जहाँ आधेय रहे सो प्रथम शेष अलंकार है ॥ एक बस्तु कौं बहुत ठाम बरने सो सरो विशेष है ॥ २५३॥ अथ परकीया

उदाहरन ॥ दोहा ॥ दुरि दुरि गुरु बनितान से चली हित धारि ॥ पै डोरि डोरि पग सग धरत वन नभ स निहारि ॥ २५४॥ टीका ॥ गुरु बनितान सें छिपि कौर के लली है सो हित धारि के चली ॥ परन्तु डोरि के सग मे पग धरे है वन में आकास को फूल दी के यहाँ दुरि दुरि के जा वासों परकीया भिसारिका का है और आकास का फूल को बिना आधार वर्नन याते पहिलो विशेष है ॥ २५४॥ अथ कृष्णा

रिका द्वितीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥ वसन भूषन प हरि चली अमावस राति ॥ घने वन निज सदन में सखिन लखी छवि छाति ॥ २५५॥ का ॥ काला वसन और भूषन प हरि के अमावस की में चली नव नायिका है सो घन मे वन मे तम मे मे सखीन ने छवि की छाई छई देखी यहाँ पछीर वासों कृष्णा भिसारिका नायिका है

क वस्तु नायिका की छबि है सो घन बनादि नें बरनी
तै दूसरो विशेष है ॥२५५॥ अथ तृतीय विशे
प्रथम व्याघात लक्षण ॥ दोहा ॥ अलघुन
लघु जतन तें तीतय विशेष सु रव्यात ॥ वरने हित
र वस्तु सैं अहित सु है व्याघात ॥२५६॥ टीका ॥
टा जतन सैं बडोलाभ हो जाय सो तीसरो विशेष है
हितकारी वस्तु सें अहित वने सो व्याघात है ॥२५६॥
अथ शुक्लाभिसारिका तृतीय विशेष उदा
हरन ॥ दोहा ॥ रजनी राका सरद की चली सेत सजि
साज ॥ जिहि लखि जानी सखिन नें लखी शारदा आज
२५७॥ टीका ॥ सरद की पून्यों की राति मैं सुपेद साज
सजि कै चली यहाँ जिसकों देखि कै सखीन ने जानी आ
शारदा देखी ॥ यहाँ सेत साज साजि कै चली यातें शु
क्लाभिसारिका नायिका है और नायिका का देखि वासौं
शारदा को देखिवो अधिक लाभ भयो यातें तृतीय वि
शेष है ॥२५७॥ अथ दिवाभिसारिका प्रथम
व्याघात उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुरंग वसन आभर
न साजि चली मध्य दिन वाल ॥ मग सैं घन आये घु
मडि लखि कुम्हिलानी हाल ॥२५८॥ टीका ॥ लाल
वसन आभरन सजि करिकै वाल है सो दुपहर चली
गैला मैं घन घुमडि आया तुरत ही देखि करि कै कु
म्हिलाई ॥ यहाँ दिन में चल वासौं दिवाभिसारिका ना
यिका है और घन घुमडिवो हित कर वस्तु सैं अहित
वन्यो यातें प्रथम व्याघात है ॥२५८॥ अथ द्वित
य व्याघात प्रथम कारण माला लक्षन ॥ दो०

काज विरोधी सें सधै जुग व्याघात बखानि
पुनि कारण काज ह्वै कारन माला जानि ॥२५८॥
विरोधी से कारज सधै सो दूसरो व्याघात
फेरि फेरि कारन है सो काज होय सो कारन
लंकार जानो ॥२५८॥ अथ
दाहरन ॥ दोहा ॥ मदमाती हँसि बोलती
इत उत जोय ॥ मग बतावन चलन सँग हँसि
जामिक सोय ॥२६०॥ टीका ॥ मद सें मस्त भई
करिके बोलती भई इत उत कों देखती चलती
यिका के संग में मारग कों बतावनो भया हँसि
के रात्रि में जामिक लोग हैं सो संग चले हैं ॥ यहां
मती भई इत उत कों देखती चले है यातें
रिका नायिका है ॥ और चौकीदार मारग का
लान नें मारग को बतावो कारज कर्यो यातें
व्याघात है ॥२६०॥ अथ गौनिका भि ॥
थम कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥
तजि भूषन बसन यों कहती पति धाम ॥ जस सें
गुन सें धन रु धन सें होत सु काम ॥२६१॥
भूषन वसन साजि करि के पति का धाम कों
ई ऐसें कहे है जस सें गुन होय है गुन सें धन
धन सें सुंदर काम होय है ॥ यहां भूषन बसन
करि के पति का धाम कों जाय है याते गारीका
सारिका नायिका है और जस कारन है गुन काज
गुन कारन है धन कारज है फेरि धन कारन है
म कारज है याते पहिलो कारन माला है ॥२६१॥

थ द्वितीय कारन माला एकावली लक्षन
हा ॥ कारन माला दूसरी कारज कारन माल ॥ गहि
पद छोडे जहाँ एकावली रसाल ॥ २६२ ॥ टीका
ज और कारन की माल होय सो दूसरी कारन मा
हे जहाँ पद कौं गह गह करिकै छोडे सो एकावली
ुंदर ॥ २६२ ॥ अथ गर्विताक्षिसारिका द्विती
कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ जाती मन उ
ावती कहती भरी उमंग ॥ गुन श्रम संग धन गुनसैं
हे सकल काम धन संग ॥ २६३ ॥ टीका ॥ जाती उ
मन कौ उलसावती उई उमंग कौ भरी उई कहती
गुन है सो श्रम के संग है धन है सो गुन के संग है
पूर्ण काम है सो धन के संग है ॥ यहाँ धन की ब
ई करे है याते गर्विता सिसारिका नायिका है ॥
ोर पहिले गुन कारज कह्यौ फेरि श्रम कारन कह्यौ
ारे धन कारज कह्यौ गुन कारन कह्यौ याते दूसरी
रन माला है ॥ २६३ ॥ अथ प्रवत्स्यत्पतिका
दशा ॥ दोहा ॥ अगले छिन में जाहि को जैहै पति
रदेश ॥ ताहि प्रवत्स्यत्प्रेय सी बरनत सु कवि असेश
६४ ॥ कातर प्रेलग्न काकु वच निर्वेदरु संताप ॥ संसै
रु निश्वास पुनि गमन विघ्न को थाप ॥ २६५ ॥ अथ
ग्धा प्रवत्स्यत्पतिका एकावली उदाहरन
हा ॥ आली पीव पयान दुख लीख परि है परभात
न तें मुख मुख तें नयन अधिक अधिक मुरझात ॥
६६ ॥ टीका ॥ हे आली पीतम का पयान को दुख लं
े हो जानि पडे गा ॥ मन तें मुख मुख तें नयन अधि

। गर्विता प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है
का सुंदरी कह्या जाही क्रम सौं कर अंगुरी
याते यथा संख्य अलंकार है ॥ २७२॥

सिंच्यत्पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥

परदेश ते यों गनि हर्षित होय ॥ सु आग
यसी बरनत सब कवि लोय ॥ २७३ ॥ अथ
य लक्षण ॥ दोहा ॥ क्रम से आश्रय एक
है सो पर्याय ॥ क्रम से बहु के एक ही आश्रय
य गनाय ॥ २७४ ॥ टीका ॥ क्रम से एक के बहु
य होय सो पर्याय अलंकार है ॥ क्रम से बहुत के
आश्रय होय सो दूसरो पर्याय गनावो ॥ २७५॥

रधा आग सिच्यत पतिका

उदाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज हग वाम गनि
दिन मन वाल ॥ पियराई मुख की गई आई लाली
२७५ ॥ टीका ॥ वाई भुजा वाँया नेत्र फरकना गनि
के वाल है सो मन में प्रसन्न भई ॥ मुख की पियराई
तुरत लाली आई यहाँ वाई भुजा वाँया नेत्र फरक्या
रधा आग सिच्यत्पतिका नायिका है और पियराई
को मुख एक आश्रय भयो याते प्रथम पर्याय है॥

अथ मध्या आग सिच्यत्पतिका

य उदाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज पुन का
त्यो पिय घर आय ॥ लगी दीठि भुज वाम पुनि
प से जाय ॥ २७६ ॥ टीका ॥ बाँई भुज फरकी फा
क भी पिया के घर आ करि कै वोल्यो वाँई भुजा में
... फेरि वाम ... आ करि के ... वहाँ ...

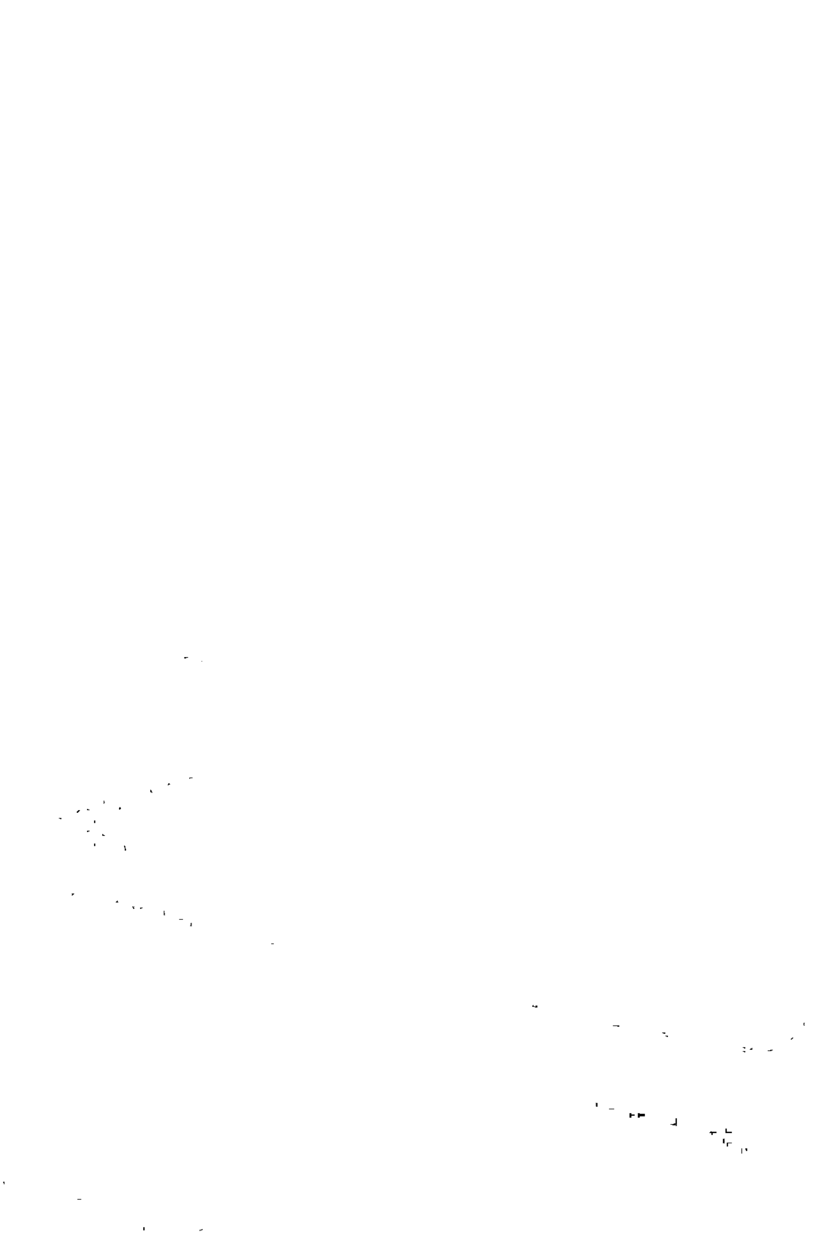
न देखि काम के वसतैंदीठि लगाई लाज के वस तैं
यक नही हर्याई याते मध्या आगतिष्यत्पतिका ना
का है ॥ और एक दीठि भुजा में और काक में लगीया
दूसरो पर्याय है ॥२७६॥ **अथ परिवृति परिसं**
ख्या लछन ॥ दोहा ॥ परिवृति सु पलटो करे अधि
न्यून को कोय ॥ परि संख्या थल आन तजि इक थल
थित होय ॥ २७७ ॥ **टीका ॥** अधिक न्यून को कोई
टो करे सो परिवृति अलंकार है ॥ जो और थल कौं
ज करि के एक थल मैं थित होय सो परिसंख्या अ
कार है ॥२७७॥ **अथ प्रौढा आगतिष्यत्पति**
। परिवृति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उठतहि प्रात
रा भरि बोली प्रिया प्रवीन ॥ आली अधिक उछाह दे
दा काक ने लीन ॥ २७८ ॥ **टीका ॥** सवेरे उठतै हीउ
। मैं भरि करि के प्रवीन प्रिया बोली हे आली अधिक
छाह दे करि के काक ने बिदा लीनी यहाँ अधिक उछा
सौं प्रौढा आगतिष्यत्पतिका नायिका है और का
ने अधिक उछाह दे करि के बिदा लीनी याते परि-
ति अलंकार है ॥२७८॥ **अथ परकीया आग**
तिष्यत्पतिका परिसंख्या उदाहरन ॥ दो०
नत परोसिनि को पिया ऐहै आजहि साम ॥ रही क
नि ही श्यामता कशता करि ही साम ॥ २७९ ॥ **टी०**
रोसनि को पिया आज ही साँझ कौं आवे सो कालाप
। है सो बालन ही मैं रह्यौ दुबराई कमरि मैं ही रही
हाँ परोसनि का पति से परकीया आगतिष्यत्पतिका
ायिका है ॥ और कचन से श्यामता रही कटि मे कृशता

रही॥ याते परिसंख्या अलंकार है ॥२७९॥ विकल्प प्रथम समुच्चय लक्षण ॥ दोहा बल जुगल विरोध को कथन विकल्प वखानि॥ बन को संग कथन प्रथम समुच्चय जानि ॥२८०॥ समान बल दोनूं विरोध को कथन होय सो ॥ बहुत भावन को संग कथवो होय सो जानौं ॥२८०॥ अथ गनिका आगत्यपतिका विकल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥ गनि गावती बोली हिय हर्षानि ॥ आज व आनि है जमराज कि धन दानि ॥२८१॥ टीका अवधि का दिनन कों गनि करि के गावती जउ मे हर्षा करिके बोली आज रति मे कुल आनेगो ज के धन दानी कथा यहाँ गावासौं गनिका आगत्यपतिका नायिका है ॥ और जमराज धन दानी बल है तिन मे मारिवो जिवावो विरोध है याते कल्प है ॥२८२॥ अथ आगत पतिका दोहा ॥ जाको पिय परदेश ते आयो तबही होय आगत पतिका नायिका हर्षति जिय मे जोय॥ टीका ॥ जाको पीतम परदेश ते तबही आयो सो आगत पतिका नायिका जीव मे हर्षती देखो॥ अथ मुग्धा आगत पतिका प्रथम उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये लखि नवल हँसी जंभाय ॥ कंपी अनुरागी बहुरि बैठी ॥२८३॥ टीका ॥ पिय कों आयो देखि के सो हर्षी हँसी जंभायी ली कंपी अनुरागी फेरि

लजा कोरे के वेगी यहाँ लाज वासें मुग्धा आगत प
का नायिका है॥ और नायिका में हर्षादिक बहुत
व है याते प्रथम समुच्चय है॥२८३॥ अथ द्विती
समुच्चय लक्षण॥ दोहा॥ हौं पहिले ही प
यों बहुत मानि मन मांहि॥ करै सिद्धि इक काज
द्वितिय समुच्चय आहि॥२८४॥ टीका॥ हम प
तें हम पहिले जैसे बहुत है सो मन मे मानि कार
एक कार्ज को सिद्धि करे सो दूसरो समुच्चय है॥२८४
अथ मध्या आगत पतिका द्वितीय समुच्चय
दाहरन॥ दोहा॥ पिय आये परदेश सें भेंटन पी
न भीर॥ तनु चष श्रवनन चाह ने बढ़ि तिय करी अ
धीर॥२८५॥ टीका॥ पीतम परदेश तें आये कुटुंब
समूह सौं मिलनो तनु चष श्रवन की चाह नै बढि
करि के तिय कों अधीर करी यहाँ पहिले लाज से धीर
री रही फेरि काम सें शरीरादि की चाह नें बढि करि
अधीर करी॥ याते मध्या आगत्पतिका नायिका है
और तनु चष श्रवनन की चाह नै बढि करि के अधी
रता एक कारज कर्यो याते दूसरो समुच्चय है॥२८५॥
अथ कारक दीपक समाधि लक्षण॥ दोहा॥
कारक दीपक बहु क्रिया क्रम ते कारक एक॥ जान हे
तु सें काज की सिद्धि समाधि विवेक॥२८६॥ टीका॥
क्रम से बहुत क्रियान को कारक एक होय सो कारक
दीपक अलंकार है॥ और हेतु सें कारज की सिद्धि होय
सो समाधि है॥२८६॥ अथ प्रौढा आगत पति
का कारक दीपक उदाहरन॥ दोहा॥ सजनी स

ही विदेश तैं प्रिया पिया ह्यौं आत॥ दौरी फिरी रही पुनि पूँछी कुशलात॥२८७॥ टीका॥ कही विदेश तें हे प्रिया ह्या पिया आवे है दौरी खरी रही फेरि कुशल पूछी यहाँ घरणी हर्षे तें ओढा आगत पतिका नायिका है॥ और दौरि आदि अनेक भाव एक नायिका मे भये याते एक अलंकार है॥२८७॥ अथ परकीया आगत पतिका समाधि उदाहरन॥ दोहा॥ सी परदेश तें आयो जिहि निशि मांहि॥ घर के सब सवन में गये राखि घर नाहि॥२८८॥ टीका॥ ऐसो परदेश तैं आयो जो रात्रि मे घर के सब न में गये ता नायिका कों घर राखि के जाकी सें प्रीति ही॥ यहाँ पारोसी का परदेश सें आवा परकीया आगत पतिका नायिका है॥ और घर को जावो अन्य कारज से मिलाप कारज भयो अलंकार है॥२८८॥ अथ प्रत्यनीक लक्षण॥ दोहा॥ प्रबल शत्रु के मि त्र पै प्रत्यनीक बल धीत॥ यौं है तो यह है कहा सो व्यार्थापत्ति॥२८९॥ टीका॥ प्रबल शत्रु के मित्र बल की धीत होय सो प्रत्यनीक अलंकार है॥ यौं है तो यह काई है ऐसे होय सो का व्यार्थापत्ति अलंका र है॥२८९॥ अथ गनिका आगत पतिका प्र त्यनीक उदाहरन॥ दोहा॥ आवत पति लखि सासरन अमंद॥ भे प्रसन्न सुख नैन नव मूँदे चंद॥२९०॥ टीका॥ पतिका परदेश से

विदेश तैं प्रिया पिया ह्यौं आत ॥ दौरी
रही पुनि पूछी कुशलात ॥ २८७ ॥ दौरी
कही विदेश तें है प्रिया ह्यां पिया आवे है दौ
री खरी रही और कुशल पूछी यहाँ घरणी
ते ओढा आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी
दि अनेक भाव एक नायिका में भये याते
पक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया
त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥
सी परदेश तैं आयो जिहि निशि मांहि ॥ घर के
त्सवन में गये राखि घर नाहिं ॥ २८८ ॥ टीका ॥
रोसी परदेश तैं आयो जी रात्रि मे घर के सब
न में गये ता नायिका कों घर राखि के जाकी
सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सें आवा
परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर का
को जावो अन्य कारज से मिलाय कारज भयो
समाधि अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक
व्यार्थापत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रबल शत्रु के मि
त्र पै प्रत्यनीक बल घात्त ॥ यों है तो यह है कहा सो
व्यार्थापत्ति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रबल शत्रु के मित्र
बल की घात्त होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यों है
तो यह काई है ऐसे होय सो का व्यार्थापत्ति अलंका
र है ॥ २८९ ॥ अथ गनिका आगत पतिका प्र
न ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश
आनंद ॥ भै प्रसन्न मुख नैन नव
टी० ॥ टीका ॥ पतिका परदेश से



ही विदेश तें प्रिया पिया ह्यां आत ॥ दौरी फिरी रही पुनि पूंछी कुशलात ॥ २८७ ॥ टीका ॥
कही विदेश तें हे प्रिया ह्यां पिया आवे हे दौरी री खरी रही फेरि कुशल पूछी यहां घराी हर्ष तें ओत्ता आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी दि अनेक भाव एक नायिका में भये याते कारक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥
सी परदेश तें आयो जिहि निशि मांहि ॥ घर के सब त्सवन में गये राखि घर नाहि ॥ २८८ ॥ टीका ॥ ऐसो परदेश तें आयो जो रात्रि मे घर के सब उत्सव न में गये ता नायिका कों घर राखि के जाकी पारोसी सें प्रीति ही ॥ यहां पारोसी का परदेश सें आवा मैं परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर काम को जावो अन्य कारज से मिलाप कारज भयो याते अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रबल शत्रु के मित्र पै प्रत्यनीक बल घात्त ॥ यों है तो यह है कहा सो काव्यार्थापत्ति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रबल शत्रु के मित्र पै बल की घात होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यों है तो यह कहा है ऐसे होय सो काव्यार्थापत्ति अलंकार है ॥ २८९ ॥ अथ गनिका आगत पतिका प्र न ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश अनंद ॥ भे प्रसन्न मुख नेन नव क ९० ॥ टीका ॥ पतिका परदेश से

आवता गहरगान सहित देखि कै सुख नैन प्रसन्न भये तब
चंद्रमा ने कमल मूदे यहाँ नायक कौं गहरगान सहित देखि वासौंग
निका आगत पतिका नायिका है और चंद्रमा ने सुख का पत्नी कमल
न कौं मूद्या याते अत्यनीक अलंकार है ॥२८०॥ **अथ पति स्वा**
धीना लक्षण ॥ दोहा ॥ रूप प्रेम गुन आदि करि है पतिकै
वस नारि ॥ पति स्वाधीना कहत तिहिं कवि कोविद निधारि ॥
२८१ ॥ **टीका ॥** रूप प्रेम गुन आदि करि कै नारि पतिके
[illegible]
[illegible] **अथ मुग्धा पति स्वाधीना का** [illegible]
स्वाधीन उदाहरन ॥ दोहा ॥ [illegible]
[illegible]
ली लाल को सुख देखि के रति ह्व लुभा करि कै रहे ॥
से लाज कौं तजि करिके वस भई सो गिनती नहीं
गिनी जाय यहाँ लाज कौं सुख मानै है पति कै व-
स है याते मुग्धा पति स्वाधीना नायिका है और जी
कौं देखि के रति भी लुभा रहे तो मै कौंड़ी हौं ऐसे-
कह वासौं काव्यार्थापत्ति अलंकार है ॥ २८२ ॥
अथ काव्य लिंग लक्षण ॥ दोहा ॥ अर्थ सम
र्थन योग्य जो तासु समर्थ न होय ॥ काव्य लिंग भू-
षन तहाँ कवि गुलाब मन होय ॥ २८३ ॥ **टीका ॥**
समर्थन योग्य जो अर्थ ताको समर्थन होय तहाँ
गुलाब कवि कास ते काव्य लिंग अलंकार है ॥ २८३ ॥
अथ मध्या पति स्वाधीना काव्य लिंग उ-
दाहरन ॥ दोहा ॥ मोलि लई सी लखि रही बोलि
न सकी सचेत ॥ मोते रति आनि न्यून है पति मोहन

सुनें सुनें हियो ऊलसाय॥ येरी मुरली लाल की मो चित लियो चुराय॥२८७॥ टीका॥ बिना ही सुन्य ध्यान धरि कै रहौ हौं सुन्या सौं हियो ऊलसावै है येरी लाल की मुरली नें मेरो चित्त चुरा लियो यहाँ मुरली का सुन यासें वस भई याते परकीया पति-स्वाधीना नायिका है और कृष्ण के जोग सें मुरलीनै बडाई पाई यातै दूसरो अर्थात रन्यास है॥२८७॥

अथ विकस्वर प्रौढोक्ति लक्षण॥ दोहा॥

विकस्वरसु विशेष पुनि ह्वै सामान्य विशेष॥ प्रौढोक्ति जु कारन करै अकारनहि गनि वेष॥२८८॥ टीका॥ विशेष होय सामान्य होय फेरि विशेय होय सो विकस्वर अलंकार है॥ अकारन कों वेय गनि कै कारन करै सो प्रौढोक्ति अलंकार है॥२८८॥

अथ गनिका पति स्वाधीना विकस्वर उदाहरन॥ दोहा॥

आली लावत लाल धन जगतन की अनुहारि॥ तिहिं लै वारौं इगुनु धन आनन अमल निहारि॥२८९॥ टीका॥ हे आली लाल धनल्यावे है जगत काजन की अनुहारि ताकों ले कारि केउ गुन धन वारौंनि मल मुख देखि कारि कें यहाँ इगुनु धन वार यासौं गनिका पति स्वाधीना नायिका है और लाल धन लावत यह विशेष है जगत काजन की अनुहारि यह सामान्य है फेरि लाल पै दुगुनु धन वार वो यह विशेष है यातें विकस्वर है॥२८९॥

अथ उत्तमा लक्षण॥ दोहा॥ धन हित कारी पीय पै हित ही करै जु वाम॥ याकी चेष्टा ऊतमहि

जानि उत्तमा नाम ॥३००॥ टीका ॥ अनहित कारी जो बाम अहित करै ॥ याकी चेष्टा उत्तम है याते मा नाम जानौं ॥३००॥ अथ उत्तमा प्रौढोक्ति उदा ॥ दोहा ॥ आये प्रीतम प्रात घर लाय ल ॥ तउ तनु जमुन तमाल दुति लखि भइ हर्षित ला ॥३०१॥ टीका ॥ प्रीतम है सो सवेरे ही घर आय भाल मे महावर लगा करि के तो भी तनु मे जमुना का तमाल की दुति देखि के बाल हर्षित भई ॥ यहाँ सापरा ध नायक कौं देखि के हर्षित भई याते उत्तमा नायिका और जमुना को तमाल अधिक श्यामता को कारन न हो ताकों कारन कह्यो याते प्रौढोक्ति अलंकार है ३० अथ मध्यमा लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय के हितते हित करे अहित अहित ते होय ॥ चेष्टा हैं व्यवहार जानि मध्यमा सोय ॥३०२॥ अथ संभावना मि थ्या ध्य वसित लक्षण ॥ दोहा ॥ जो यौं होय तु होय यौं सु संभावना जानि ॥ मिथ्या हित मिथ्या क न मिथ्या ध्यवसिति मानि ॥३०३॥ टीका ॥ जो यौं है य तो यौं होय ऐसै होय सो संभावना अलंकार है मिथ्या के वास्ते मिथ्या को कहवो होय सो मिथ्या ध्यवसिति मानौं ॥३०३॥ अथ मध्यमा संभाव ना उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात पिया पा परन लखि बोली रिस हि नशाय ॥ राति जो न उत जावते तो क्यौं परते पाय ॥३०४॥ टीका ॥ सवेरे ही प्रीतम कौं पग न मै पड़ते देखि के रिस कौं नशा करि के बोली जोरा ति मे उत कौं नही जाव[illegible] क्यौं पड़ते ॥

यहां पीतम ने अपराध कर्यो नव राग कर्यो और पी-
तम पायन में पड्यो तब राजी भई यांतें मध्यमा ना
यिका है और जो रति में उनकों नही आवते तो पगन
में क्यों पडते ऐसे कह वासों संभवना अलंकार है॥
३०४॥ **अथ अधमा लक्षण॥ दोहा॥** हितका
री ह्व पीय पै अहित करे जो नारि॥ चेष्टा याकी अध
म यों अधमा कही विचारि॥३०५॥ **टीका॥** हि-
तकारी भो पीतम पै जो नारि अहित करे याकी
चेष्टा अधम है ऐसें विचारि करि कै अधमा कहे
है॥३०५॥ **अथ अधमा मिथ्या ध्यवसि
ति उदाहरन॥ दोहा॥** पिय वर बिनती भाष-
ता बोली अधिक रिसाय॥ नभ फूलन की माल जो ध
रै सु तुम्हे पत्याय॥३०६॥ **टीका॥** पीतम कों सु
दर बीनती भाषता अधिक रिस करि कै बोली जो
नभ का फूलन की माल कों धारण करे सो तुमकों प
त्यावे॥ यहां बीनती भाषता कठिन बोली यांतें अ-
धमा नायिका है और नायक कों विश्वास मिथ्या
मानि नभ फूलन की माल को धर वो मिथ्या है या
ते मिथ्या ध्यवसीत है॥३०६॥ **अथ ललित
लक्षण॥ दोहा॥** जो कछु प्रस्तुत धर्म से वर्ननी
य वृत्तांत॥ अप्रस्तुत प्रति विंव करि वर्नत ललित सु
ख्यात॥३०७॥ **टीका॥** जो कछु प्रस्तुत का धर्म
को वर्नीवा जोग्य वृत्तांत होय॥ अप्रस्तुत का प्रति
विंव करि कै वर्नन होय सो ललित है ख्यात जाहर
३०७॥ **अथ अधमा ललित उदाहरन॥**

दोहा ॥ वर्जत निशि मैं गवन करि दोनों
भाय ॥ भोर भये वर्जकन के काहें पकरे
टीका ॥ वर्जना निशि मैं गमन करि के माल
यो भौंर भया पै वर्जवा वालान के पगान मैं
ई है यहाँ नायक ने पग पकड्या तो भी नहीं
याते अधमा नायिका है ॥ और माल गुमावा वाल
प्रस्तुत को वर्णन करि के नायक को वृत्तांत
ते ललित अलंकार है ॥३०८॥ अथ नायक
गा ॥ दोहा ॥ सुन्दर शील जु वासु घर कौल
ल वान ॥ शुचि उदार गुन वानि तिहि नायक
सुजान ॥ ३०९ ॥ अथ प्रथम द्वितीय
लक्षरा ॥ दोहा ॥ प्रहर्षन सु बिन जतन ही
तार्थ हो जाय ॥ वाँछित तें अधिकार्थ की सिद्धि सु
य गनाय ॥ ३१० ॥ टीका ॥ बिना जतन ही
अर्थ हो जाय सो प्रहर्षन है ॥ वाँछित सें अधिक
र्थ की सिद्धि होय सो दूसरो प्रहर्षन है ॥३
अथ नायक प्रथम प्रहर्षन उदाहरन
दोहा ॥ कर मुरली पट पीत धर शीश मुकट
त ॥ वन तें आवत मग निरखि अति
ज वाल ॥ ३११ ॥ टीका ॥ हाथ में मुरली पीत
ड़ा कों धारण कर्या अर्या शीश पै मुकट हृदा में
धरा अर्या वन ते आवता मग में देखि के व्रज
अत्यंत हर्षी यहाँ जतन बिना ही नायक कों
यो वाँछित अर्थ होगयो याते प्रथम प्रहर्षन है ॥
३१२ ॥ अथ द्वि[illegible] ॥

परन्यौं पति उपपति सुनो पर नारिन मे लीन ॥ वैसिक ॥निका नाइ यों भाषत त्रिविध प्रवीन ॥ ३१२ ॥ टीका परन्यौं कयो पति है पैला की स्त्री न मे लीन होयसे उपपति नायक है वेश्या को पति वैसिक है यों तीन प्रकार को भाषे है प्रवीन है सो ॥ ३१२ ॥ अथ पति नायक द्वितीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दो०

धनुष भंजि सब से सरस लखि वांछे निज पीय ॥
प्रापत दुर्लभ लाभ में अति हर्षानी सीय ॥ ३२३ ॥

टीका ॥ सब सें सरस धनुष भंजि कै अपना पीतम कौं वाद्दा देखि कै दुर्लभ लाभ में प्राप्त हो के सीता अत्यंत हर्षाई ॥ यहां राम चंद्र पति नायक है और राम चंद्र की प्राप्ति वांछित सें अधिक है यातें दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३२३ ॥ अथ पति भेद ॥ दो०

अनुकूल रु दछिरा रु शठ धृष्ट चारि पति मूल ॥ परनी इकही नारि को हितकारी अनुकूल ॥ ३२४ ॥ टी०

अनुकूल दक्षिरा शठ धृष्ट ये चारि पति के भेद हैं परनी कई एक ही स्त्री को हितकारी होय सो अनुकूल है ॥ ३२४ ॥ अथ तृतीय प्रहर्षन बिषादन लक्षरा ॥ दोहा ॥ जतन वस्तु जिहि हेर तें वही मिले सु तृतीय ॥ वांछित तें उलटो मिले विषादन सु गुरानीय ॥ ३२५ ॥ टीका ॥ वस्तु को जतन हेरतां वाही वस्तु मिले सो तीसरो प्रहर्षन है ॥ वांछित सें उलटो मिले सो विषाद न गर्णो ॥ ३२५ ॥ अथ अनुकूल तृतीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥

सिय पिय वुल वन हित सखी मग जोवत ही धाम ॥

तवही सने सनेह में आत लखे मग राग॥३१५॥
प्रिय है सो पिय कों बुलावा के वास्ते धाम में
को मग देखे ही तवही सनेह में सने ऊचे गृम
में आते देखे यहां राम अनुकूल नायक है ग
का बुलावा कों सखी की वाट देखता राम हो मिले
तें तीसरो प्रहर्षन है॥३१५॥ अथ दक्षिण वि
षादन उदाहरन॥ दोहा॥ गई बुलावन निज भौ
न बहुत प्रिया पिय धाम॥ सब को सम सनमान करी
गे वन में घनश्याम॥३१७॥ टीका॥ अपना भवन
में बुलावा के वास्ते बहुत प्रिया है सो पिय के धा
म गई॥ सब को बराबर सन्मान करि के घनश्याम
हैं सो वन में गये यहां सब को सनमान समान क
र्यो यातें दक्षिण नायक है॥ और कृष्ण कों बुला
वा गई वे उलटा वन कों चल्या गया यातें विषाद
न है॥३१७॥ अथ उल्लास लक्षण॥ दोहा॥ चारि
गुन दोषन करि एक के आनहि है गुन दोष॥ चारि
भेद उल्लास के वर्नत कवि मति कोष॥३१८॥ टीका॥
एक के गुन दोष करि के और को गुन दोष होय॥
उल्लास के चारि भेद वर्नें है॥ मति के भंडार
सो॥३१८॥ अथ शठ प्रथम उल्लास लक्षण॥
दोहा॥ सिठ वचनी कपटी वहे शठ नायक पर
कास॥ इक के गुन सें आन कों गुन होय सु
स॥३१९॥ टीका॥ मीठा वचन बोलवा वालो है
॥ कपटी होय सो शठ नायक है प्रकास जा हे
के गुन सें और कों ... प्रथम उल्लास

।३१९॥ **अथ शठ प्रथम उल्लास उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ तुव अधरा मृत ध्यान धरि बचे प्रिय
प्रान ॥ अव अधरा मृत ध्यान धरि ह्वै हौं अमर
दान ॥३२०॥ **टीका** ॥ तेरा अधरन का अमृत को
ध्यान धरिकै हे प्रिया राति सैं प्रान बच अब अधरा
मृत पान करिकै अमर होऊँगो निदान निश्चय यहाँ
कपट सैं मीठी बात करै है यातैं शठ नायक है औरना
यिका का अधरामृत का गुन सैं नायक कौं गुन भयो
यातैं प्रथम उल्लास है ॥३२०॥ **अथ धृष्ट द्विती
य उल्लास लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ निलजनि डर अपरा
ध कर नायक धृष्ट गनीय॥ होय दोष परदोष सैं सो
उल्लास द्वितीय ॥३२१॥ **टीका** ॥ लाज रहित डर रहि
त अपराध करै सो धृष्ट नायक गानौं ॥ पैला का दोष
सैं दोष होय सो दूसरो उल्लास है ॥३२१॥ **अथ धृ
ष्ट द्वितीय उल्लास उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ पायनसा
रत पाय परि बोले लाल सुजान ॥ तो वियोग मो भा
ल मैं क्यौं विधि लिख्यो अपान ॥३२२॥ **टीका** ॥
पायन की सारता ऊंचा पगन मैं पाडिकै सुजान ला
ल बोल्या तेरो वियोग मेरा भाल मैं अयान विधि
नें क्यौं लिख्यो यहाँ निलजान डर है यातैं धृष्ट
धृष्टक है और मारि वो नायका का दोष सैं ब्रह्मा
का दोष है यातैं दूसरो उल्लास है ॥३२२॥ **अथ तृ
तीय चतुर्थ उल्लास लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ इक कगु
न सैं आन की दोष सु त्रतिय प्रकास॥ होय दोष सैं
गुन जहाँ है चौथो उल्लास ॥३२३॥ **टीका** ॥ सकके

कौरे सो क्रिया चतुर नायक है ॥ गुन दोषन मैं
ष गुन की कल्पना होय सो लेस अलंकार है ॥ ३३१॥

अथ क्रिया चतुर गुन से दोष लेस

न ॥ दोहा ॥ आली बझत तियान मैं मोहि निरंत
लाल ॥ विहसि कौंल शिर धरत निति रूप भयो
जाल ॥ ३३२ ॥ टीका ॥ हे आली बझत तियान मैं मो
कों देखि के नंदलाल हे सो विहसि के नित्य शिर
धरे है मेरो रूप हे सो जंजाल भयो यहाँ
ने कमल माथा पे धरि के प्रगास जनायो याते
क्रिया चतुर नायक हे और परिनाम गुन हे ताकों
मान्यो याते लेस है ॥ ३३२ ॥ अथ प्रोषित
स मे गुन लेस उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्यारी
परदेश मैं करते प्रान पयान ॥ पै यह मोरि कठोरत
नित्य जिवावत नाल ॥ ३३३ ॥ टीका ॥ प्यारी
परदेश मे प्रान पयान करते परन्तु यह मेरी
रता नित्य जिवावे हे न आन और नही
यहाँ परदेश मे हे याते प्रोषित नायक है ॥ औ
दोष से जीवो गुन है याते लेस अलं
॥ ३३३ ॥ अथ अनभिज्ञ मुद्रा लक्षण
॥ नहि समुझे तिय रसन मे सो अनभिज्ञ
बि ॥ प्रकृत अर्थ मे और ह कढे सु मुद्रा सानि
३३४ ॥ टीका ॥ तिय के रसन मैं नहीं समुझे
भिज्ञ वखानौ ॥ प्रकृति अर्थ मैं और जो कढे
अलंकार जानौ ॥ ३३४ ॥ अथ अनभिज्ञ
हरन ॥ दोहा ॥ राधे लपटी श्याम गर वन

भय वैन॥ श्याम कही क्यों गार गहत ह्यांतन क-
छु भय है न॥ ३३५॥ टीका॥ राधिका है सो श्या
म का गला सों लपटी वन मे भय का वचन कह
करि के॥ श्याम ने कही गलो क्यों गहे है ह्यांन
नक सी भय नही है॥ यहां राधा को प्रेम कृष्ण
ने नही जान्यों सो अनभिज्ञ नायक है॥ और श्या
म गर वन में॥ इन अक्षरन में कारो जहर पानीसे
यह अर्थ निकसे है याते मुद्रा है॥ ३३५॥ अथ
उत्तम नायक रत्नावली लक्षण॥ दोहा॥
करे जतन तिय मान हर सो उत्तम जिय जानि॥
प्रस्तुत पद क्रम से कढे रत्नावली बखानि॥ ३३६॥
टीका॥ तिय है सो मान कों हर वाको जतनक
रै सो जीव मे उत्तम जानों क्रम से प्रस्तुत पद कढे
सो रत्नावली बखानों॥ ३३६॥ अथ उत्तम ना
यक रत्नावली उदाहरन॥ दोहा॥ वानी श्री
वदलो निरखि गौरी को नंदलाल॥ भाषि वचन म-
धुरे सरल खुस करि लीनो हाल॥ ३३७॥ टीका॥
गौरी की वानी और श्री वदली देखिके नंदलाल
ने मधुरे और सरल वचन भाषि के तुरत खुस कर
ली यहां वाल को प्रसन्न करि लीनी याते उत्तमना
यक है और वानी श्री गौरी उत्पति पालन प्रलय
क्रम से निकसी याते रत्नावली अलंकार है॥ ३३
अथ मध्यम नायक लक्षण॥ दोहा॥ कर
न रस रिस रिस वनी तिय सों मध्यम सोय॥
निज गुन तीज संगति गुनहि गहे सो तज्ञन हो-

य॥३३८॥ टीका॥ रस वाली तिय सों प्रेम
नहीं करै सो मध्यम नायक है॥ अपना गुन
तजि के संगति का गुन कों गहै सो तद्गुन
र है॥३३८॥ अथ मध्यम तद्गुन
रन॥ दोहा॥ तिय अन बोली लखि तुरत
रहे व्रजनाथ॥ पुनि हसती लखि जाय ढिंग
रिल भरि बाथ॥३३९॥ टीका॥ तिय कों
न बोली देखि के व्रज नाथ ठठकि रहे फेरि
ती देखि के ढिंग जा करि के बाथ भरि के
ये यहाँ अनबोली देखि ठठके बोली तब
गये याते मध्यम नायक है और बाथ भर का
हरे भये सो पीला से कालो मिले तब हरो
है याते तद्गुन है॥३३९॥ अथ अधम
रूप लक्षण॥ दोहा॥ केलि समय
खै लाज भीति तजि देय॥ पूर्व रूप गहि संग
तजि पुनि निज गुन लेय॥३४०॥ टीका॥
का समय मे लाज भीत तजि दे सो अधम
है॥ संगति का गुन लेकरि फेरि ऊँकूं तजि के
पना गुन कों ले सो पूर्व रूप अलंकार है॥३४०
अथ अधम पूर्व रूप उदाहरन॥
पिय लखि शशि वरनी त्रिया होत लाल
सखिन ने होत सेत तजि रा
कों देखि करि शशि
रंग के लाल होय है फे
राग कों तजि के सेत

यहाँ बिना समयं हाथ पकाेड वासौं अधम ना
यक है और पीनस का राग का संग सौं लाल रंग
लियो फेरि हाथ पकोड़ने आप को सेत रंग लि-
यो याते पूर्व रूप है ॥३५१॥ अथ धीर ललि
तद्वितीयपूर्व लक्षण ॥ दोहा ॥ सुखी कला नि-
धि निः फिकर धीर ललित तिय जोय॥ मिटें व-
स्तु तिहिं गुन रहे पूर्व रूप भिद दोय ॥३५२॥
टीका ॥ सुखी होय कला निधि होय निःफिक
र होय सो ज़ीव मैं धीर ललित देखौ जो वस्तु का
मिट्या सैं गुन रह जाय सो पूर्व रूप को दूसरो भे
द है॥३५२॥ अथ धीर ललित पूर्व रूप
उदाहरन ॥ दोहा ॥ धीर कला निधि सुखस-
दन राम प्रताप प्रकास॥ अस्त भये रवि के रहत
छाय धरा आकास ॥३५३॥ टीका ॥ धीर और
कलान की निधि सुख का घर जो राम हैं उनका
प्रताप जो प्रकास है सो सूरज के अस्त भये मैं
पृथ्वी आसमान मैं छायो रहे है यहाँ धीर ललि
त नायक है और रवि अस्त तम हो वाको कारन
तयो तो भी तम न मिट्यो यातैं दूसरो पूर्व रूप
है ॥३५३॥ अथ धीरोद्धत अतद्गुन लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ धीरोद्धत गर्वी छली निजे गुन वक्ता
तेय ॥ अतद्गुन सु संग जु भये गुन ताके नहिं लेय॥
३५४॥ टीका ॥ धीरोद्धत है गर्वी है छली है अ-
पना गुन को वक्ता जानों ॥ संग भी भया मैं ताके गुन
नहीं लेय सो अतद्गुन अलंकार है॥३५४॥ अथ

धीरोद्धत अतद्गुन उदाहरन ॥ दोहा
रावी लता वड़ाय ता हो थिर और छलीन ॥ वसत
राग घर बाल मन तउ अनुराग न लीन ॥ ३४५ ॥
टीका ॥ हे लता रावी ह्यो वड़ाय ताहो छलीन क
थिर और हो राग को घर जो बाल को मन है
वसे हो तो भी अनुराग नहीं लियो यहाँ रावो
है याते धीरोद्धत नायक है ॥ और राग को घर जो
बाल को मन है तामें वसे है तो भी अनुराग
नहीं लियो याते अतद्गुन अलंकार है ॥ ३४५ ॥

अथ धीर शांत अनुगुन लक्षण ॥

धीर शांत शुचि नीति गुनी विनयी नायक गाय
अनुगुन सो संगति भये पूरव गुन अधिकाय ॥
३४६ ॥ टीका ॥ शुचि होय नीति होय गुनी
य विनयी होय सो धीर शांत नायक गावो संग
ति भयें पै पूरव गुन अधिकावे सो अनुगुन है ॥
३४६ ॥ अथ धीर शांत अनुगुन ८
दोहा ॥ धीर शांत शुचि नय सदन लहि संगति र
घुवीर ॥ विनयी अरि हर लखन भो अति विजयी
रन धीर ॥ ३४७ ॥ टीका ॥ धीर धीरज वान शांत
शुचि पवित्र नीति के घर लक्ष्मण है सो
की संगति पा करि के विनय वान भयो बैरीन कों
मारवे वारो भयो अत्यंत विजयी भयो रन
भयो यहाँ नायक धीर शांत है और लक्ष्मण में रघु
वीर की संगति सें पहिलो गुन अधिक भयो याते
अनु गुन अलंकार है ॥ ३४७ ॥

मीलित लछण ॥ दोहा ॥ छमी गंभीर सत
त रु विजयो धीरो दात ॥ मीलि नमीलित में जहाँ
द न तनक लखात ॥ ३४८ ॥ टीका ॥ छमावान
ाय गंभीर होय अच्छया मन सहित होय विज
ी होय सो धीरो दात्त है ॥ मीलित में जहाँ तनक
द नहीं लखावै सो मीलित अलंकार है ॥ ३४८ ॥
अथ धीरो दात्त मीलित उदाहर ॥ दोहा
वजयी छमी गंभीर अति कोप्यो समर समार ॥
व न लखन के लखि पस्यो चंदन लाल लिलार ॥
४९ ॥ टीका ॥ विजयी विजय वान छमी छमा
ान अत्यंत गंभीर समर का बीचि मे कोप्यो त
न लक्षण का लिलार में लाल चंदन को तिलक न
ी देखि पस्यो यहां नायक धीरो दात्त है ॥ लिलार
ा रंग से चंदन मिलि गयो याते मीलित है ॥ ३४९
अथ दर्शन ॥ दोहा ॥ देखे तिय पिय हित स
हित दर्शन ताहि विचारि ॥ श्रवन स्वप्न पुनि चि
अ ताहि साक्षात सु विधि च्यारि ॥ ३५० ॥ अथ सा
ान्य उन्मीलित लछण ॥ दोहा ॥ सो सा
ान्य समान में नहि न विशेष लखाय ॥ जब मी
लित में भेद ह्वै उन्मीलित तब गाय ॥ ३५१ ॥ टीका
समान में विशेषन हो लखावै सो सामान्य है जब
ीलित मे भेद होय तब उन्मीलित गावो ॥ ३५१ ॥
अथ श्रवण दर्शन सामान्य उदाहरन ॥
दोहा ॥ सुने गुपाल गुन वात के मुख जोति लाली
ोत ॥ नव मसाल मुख वान को भिन्न न जान्यो

त ॥३५२॥ टीका ॥ गुपाल के गुन सुनि
ल के मुख में अत्यंत लाली आवे है तब मसाल
और बाल को मुख न्यारो नही जान्यो जाय
मसाल बाल में भेद नही याते सामान्य है ॥३
अथ स्वप्न दर्शन उन्मीलि उदाहरन॥
स्वप्न मेल ते मिलि रहे केसर लागी भाल॥
ही जानी परे होत सेत रंग बाल ॥३५३॥
स्वप्न का मेल सों भाल में लगी केसर है सो
रहे जागतां ही बाल को सेत रंग होता जानी
है यहां मिली केसर जानि परी याते उन्मीलित
है ॥३५३॥ अथ विशेषक गूढोत्तर
दोहा ॥ है विशेष सामान्य में वहै विशेषक
मानि ॥ उत्तर दीनें भाव तें गूढोत्तर पहिचानि॥
३५४॥ टीका ॥ सामान्य में विशेष होय
शेषक मानों भाव सें उत्तर दिया ऐं गूढोत्तर
चानो ॥३५४॥ अथ चित्र दर्शन वि
उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत चित्र नंदलाल
भई चित्र वत नारि ॥ नीठि पिछानी जाति है
आवत सास निहारि ॥३५५॥ टीका ॥ नंद
को चित्र देखता नारि है सो चित्र की नांई भई
उसासन कों आवता देखि के नीठि पिछानी
है यहां दो चित्रन में उसास ले वासों
नी याते विशेषक अलंकार है ॥३५५॥ अ
साक्षात दर्शन गूढोत्तर उदाहरन ॥ दो
प्रथम निरख अभिलाखनी वाला लिय ...

लाल लगात न लेरवा आज हमारी गाय ॥ ३५६ ॥ **टीका** ॥ पहल पहल देखि के असिलाखिनी है सो हिया में हर्ष करि के बोली है लाल आज हमारी गाय है सो वछडान कों नहीं लगावे ॥ यहीं वाछरान कों नें लगावो नाम ले करि भीतर गयो चाहे है याते गूढोत्तर है ॥ ३५६ ॥ **अथ सखी वर्णन** ॥ **चौपाई** ॥ जासों प्रिया दुरावन राखे ॥ तातिय कों सजनी सम भाखे ॥ संडन सिक्षा ताके कास उपालंभ परिहास तलासा ॥ ३५७ ॥ **अथ चित्र सूक्ष्म लक्षण** ॥ **दोहा** ॥ प्रश्नहि में उत्तर कढे सो चित्रा लंकार ॥ पर आशय लखि जहं क्रिया करे सु सूक्ष्म विचार ॥ ३५८ ॥ **टीका** ॥ प्रश्न में उत्तर कढे सो चित्रा लंकार है ॥ पैला का आशय कों देखि के जहां क्रिया करे सो सूक्ष्म अलंकार विचारो ॥ ३५८ ॥ **अथ संडन चित्र उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ अंजन दे विंदुली दई नथ पोहिराय सुढार ॥ नख सिख साजि सिंगार पुनि का कीनों उपहार ॥ ३५९ ॥ **टीका** ॥ अंजन दे करि के विंदुली दई सुढार सुंदर नथ पहरा करि के नख सों ले करि के सिखनाई सिंगार साज के कोई उपहार कस्यो हार यहाँ का उपहार कस्या हार उपहार कस्यो यह उत्तर निकस्यो याते चित्र अलंकार है ॥ ३५९ ॥ **अथ सिक्षा सूक्ष्म उदाहरन** ॥ **दोहा** ॥ चोल अोल पिय सों मिलन हित करि अति रति हिन साधि ॥ यों सुनि सजनी ओर तिय चितई मूठी बांधि

३६० ॥ टीका ॥ हे आलि पिय सौं मिल वाकै
सै चलि हित कौं साधि करिकै अत्यंत रीत
ऐसे सुनि करिकै सजनी की ओर तिय हे से
ही आँधि करिकै आँकी यहाँ मूँगी बाँधि
जनायो कमल मुँदैगा जब मिलौंगी यातै
अलंकार है ॥ ३६० ॥ अथ पिहित
उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिहित जानि पर बात
आय सहित जनाव ॥ व्याजोक्ति सु पर हेतु
जहँ आकार दुराव ॥ ३६१ ॥ टीका ॥ पैला
बात कौ आशय सहित जनावे सो पिहित
कार है ॥ पैला को हेतु कह करि कै जहाँ
कौं छिपावे सो व्याजोक्ति अलंकार है ॥ ३
अथ उपालंभ पिहित उदाहरन ॥
प्यारी प्यारी सखिन सौं मुकुरव भूलि
कहि अति हर्षाय हिय दीनों मुकुर दिखाय
टीका ॥ हे प्यारी प्यारी सखीन सौं मुकुर
सो भूलि कहावे है ॥ ऐसे कह करि के हिय
त्यंत हर्षा करिकै काच दिखा दियो यहां
दिखा के सुरत चिन्ह दिखाया याते पिहित
कार है ॥ ३६२ ॥ अथ परिहास ०
उदाहरन ॥ दोहा ॥ पान खवावत वि
न कह्यो प्रिया गहि सार ॥ शीत पवन तैं
ई आली अधर दरार ॥ ३६३ ॥ टीका ॥
समय पान खवावता प्रिया ने सार गहि
कही शीत का पवन सै हे आली अधरन मै

पीर गई यहां सखी ने दंत च्छात देखि विना ससय पान खवायो यह सखी को परिहास जानि नायिका ने सौन भवन की दरार वाहू कारि आकार छिपायो या ते व्याजोक्ति अलंकार है ॥३६३॥ दूती वर्णन ॥ दोहा ॥ निय पिय के संदेश बच कहे सु दूती वाम बिरह निवेदन मिलव नहि है दूती के काम ॥३६४॥

अथ उत्तम दूती गूढोक्ति लक्षण ॥ दो॰ उत्तम दूती मन हरै भाषि मधुर वर बात ॥ गूढोक्ति तु मिस आन के कहे आन से बात ॥३६५॥

टीका ॥ मधुर और सुन्दर बचन भाषि करि के मन कौं हरै सो उत्तम दूती है ॥ और के मिस से औरसौं बात कहे सो गूढोक्ति अलंकार है ॥३६५॥ अथ उत्तम दूती गूढोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि राधे कौं मान ढिंग कहि कीरति से वाम ॥ स्वामिनि आज निकुंज मे करि है कौतुक श्याम ॥३६६॥

टीका ॥ राधिका कौं माना के ढिंग देखि के वाम ने कीरति सें कही है स्वामिन आज निकुंज मे श्याम कौतुक करै गे यहां मधुर बचन से उत्तम दूती है और राधा की माता से कहे है राधा कौं सुनावे है याते गूढोक्ति अलंकार है ॥३६६॥ अथ मध्यम दूती विवृतोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ मध्यम दूती परुष मृदु बोले बचन बनाय ॥ श्लेष छिप्यो प्रगटाय जब तहं विवृतोक्ति कहाय ॥३६७

टीका ॥ कठोर और कोमल बचन बना करि के बोले सो मध्यम दूती है जब छिप्या जया श्लेष कौं

प्रगटावे तहाँ विवृतोक्ति कहावे है ॥ ३६७ ॥ अथ म
ध्यम दूती विवृतोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उम
गि उमगि बहु दिनन से घेरि रहे सब ठाम ॥ विष
म वात उतपात ते अब हटि हैं घन श्याम ॥ ३६८
टीका ॥ बहुत दिनन से उमगि के सब ठाम घेरि
भयंकर पवन और उतपात ते अब घन श्याम
गे यहाँ मीठा कठिन बचन से मध्यम दूती है औ
घन श्याम काला बादल बिषम पवन से हटे या
र्थ में श्लेष छिप्यो रह्यो परंतु उत्पात शब्द से
श्याम को अर्थ कृष्ण और बिषम वात को
न्हा के बचन निकसे याते विवृतोक्ति ॥ ३६८
॥
अथ अधम दूती युक्ति लक्षण ॥
दूत ता परुष कहि अधमा दूती सोय ॥ मर्म
कीर क्रिया युक्ति अलंकृति होय ॥ ३६८ ॥ टीका
कठोर बचन कह करि के दूतता करे सो अधमा
है ॥ क्रिया करि के मर्म कों छिपावे सो युक्ति
कार होय है ॥ ३६८ ॥ अथ अधमा दूती युक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ भ्रमित दौरव पिय सों र
मानि रही अनखाय ॥ वेग चली कहि दूतिका क
की सास बढाय ॥ ३७० ॥ टीका ॥ भ्रमित
पिय सों रमी मानि के अनखा रही जलदी चली
मै कहि करि के दूतिका है सो सास बढ़ा करिके
का यहाँ सास बढ़ा के कड़वी बात अधमा दूती
और पीतम सों रमिवो सास बढावो क्रिया
पीतम सों रमिवो छिपायो याते युक्ति अलंकार

३७०॥ अथ विरह निवेदन लोकोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ तिये पिय को जु वियोग दुख भाषे मन हित मानि॥ कथे लोक कहना वनी सो लोकोक्ति वखानि॥३७१॥ टीका॥ जो तिय पिय का विरह को दुख मन से हित मानि करि के भाषे लोककी कहना वती कथे सो लोकोक्ति वखानो॥३७१॥ अथ प्रिय विरह निवेदन लोकोक्ति उदाहरन दोहा॥ निरखत मग तेरो लली तो विन दुखित गुपल॥ चोल जलदी सिलि मानि चले आज काल की चाल॥३७२॥ टीका॥ हे लली तेरो मग देखें हैं तो बिना गोपाल दुखो हैं जलदी चोलि के सिलि आज कालि की चाल मानि चले यहां आज कालि लोकोक्ति है॥३७२॥ अथ छेकोक्ति वक्रोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ और अर्थ लोकोक्ति से कहैं होय छेकोक्ति॥ अर्थ फिरै स्वर श्लेष सौं जानि लेऊ वक्रोक्ति॥३७३॥ टीका॥ लोकोक्ति से और अर्थ कहै सो छेकोक्ति अलंकार है॥ स्वर सें श्लेष सौ अर्थ फिरे सो वक्रोक्ति जान ल्यो॥३७३॥ अथ प्रिया विरह निवेदन उदाहरन॥ दोहा॥ भई विकल अति दूबरी बिरह बावरी बाल॥ भूलिऊ लाल लखो न तुम शुकलोचन की चाल॥३७४॥ टीका॥ विकल भई अत्यंत दूबरी भई बाल है सो विरह से बावरी भई है लाल तुम भोलापन से सो नहो देखी हो तो नाका नैनन की . सी चाल है यहां शुकलोचन की चाल यह लोकोक्ति है और इ में यह अर्थ

निकस्यो जैसे सुवो नेत्र वदल ले है तैसे तुम वदल त्यो हो यह छेकोक्ति है ॥ ३७४ ॥ अथ मिलाप वक्रोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाई आज ज मति रति से लोनी वाल ॥ इहि रस वस ह्वै रैनि पृ॥ याहि भूलि हो लाल ॥ ३७५ ॥ टीका ॥ आज डी मति कीरति से सुंदर वाल लाई हों ई का रस वस होकरि के रात्रि मे रमि करि के हे लाल भूलो गा अर्थात् नही भूलो गा यह स्वर सों श्लेष फेर्यो याते वक्रोक्ति है ॥ ३७५ ॥ अथ सखा गनि ॥ दोहा ॥ पीठ मर्द्द विट चेटक रु कर्म व पहिचानि ॥ बङ्गरि विदूषक पाँच विधि सखा वखानि ॥ ३७६ ॥ अथ पीठ मर्द्द स्वभा वोक्ति लछण ॥ दोहा ॥ मानवती हिय पीठ मर्द्द निधारि ॥ वर्णन जाति स्वभाव को वोक्ति लंकार ॥ ३७७ ॥ टीका ॥ मान वती के मनासके सो पीठि मर्द्द नायक है ॥ जाति को औ स्वभाव को वर्नन होय सो स्वभावोक्ति अलंका है ॥ ३७७ ॥ अथ पीठि मर्द्द स्वभावोक्ति दाहरन ॥ दोहा ॥ मुकुट लकुट पट पीत य लली घर हाल ॥ पायन पारि मुरारि कौं हर्षित व नी वाल ॥ ३७८ ॥ टीका ॥ मुकुट और लाकड़ी पर पट कों धारण करिके ललीके घर तुरत ही ला करि के कों पगन मे पट कि के वालकों हर्षित करी को बर्णन है याते जाति अलंकार है ॥ ३७८ ॥

॥ स्योरी मौन मरोरि धरि लखि वैठी सिर नाय

त वनाय विनोदकी लीनी वेग बुलाय॥३७९॥
टीका॥ त्योरी ओर सौंन सरोरि धरिके शिर नवा-
इय वैठी देखिके विनोद की बान बना करि केज
दी बुला लीनी यहां त्योरी सौंन मरोरि धरि वो सु-
व हे याते स्वभावोक्ति अलंकार है॥३७९॥ अथ
विट भाविक लक्षण॥ दोहा॥ विट सो काम
थान मे चतुराई सरसान॥ भाविक भावी भूत को ज-
वर्णन साक्षात॥३८०॥ टीका॥ काम कथान मे
चतुराई सरसावे सो विट है भावी भूत को जहां साक्षा-
वर्णनहोय सो भाविक अलंकार है॥३८०॥ अथ
विट भाविक उदाहरन॥ दोहा॥ चलो लाल-
लालच भरी ललना तुम्हे बुलात॥ लखो लाडली सदन
मे रमा सदन छबि छात॥३८१॥ टीका॥ हे ला-
ल चलो लालच की भरी हुई ललना तुमको बुलावे है
देखो लाडली का सदन मे रमा कासा सदन की छवि
छावे है यहां रमा को सदन पहिले हो ओर आगे स
हे गो सो राधिका का भवन मे वर्तमान काल मे वर्न्यो
याते भाविक अलंकार है॥३८१॥ अथ चेटक
नर्म सचिव लक्षण॥ दोहा॥ चेटक चतुर मि
लाप मे जानि कार तिय चित्त॥ नर्म सचिव हरि को
सखा दे मिलाय तिय मित्त॥३८२॥ अथ उदात्त
लक्षण॥ दोहा॥ पर के श्लाघ्य चरित्र को चिन्ह
जनावन हार॥ बर्नन संपति चरित को द्विविध उदा
त्त उदार॥३८३॥ टीका॥ पैला का श्लाघ्य चरित्र
का चिन्ह को जनावा वालो संपति का चरित्र को व-

र्नन होय सो उदात्त है सो दो तरह को है है उदार
३८३ ॥ अथ चेतक प्रथम उदात्त उदाहरन
दोहा ॥ चली चली मिल जात है भूलि गैल मग मा
हि ॥ भली भाँति लखि देखि हरि रास धाम यह
३८४ ॥ टीका ॥ हे आली कहां चली जाय है गैल
भूलि के मग के माँहि भली भांति सों चीन्ह करि के
यह हरि को रास धाम है यहाँ रास स्थान कृष्ण को
श्लाघ्य चरित्र को बर्नन है याते प्रथम उदात्त है
३८४ ॥ अथ नर्म सचिव द्वितीय उदात्त
उदाहरन ॥ दोहा ॥ ले गोरस लैन मिस राधे कों
बुलवाय ॥ मालती सम सदन में हरि लखि हरि
सुखाय ॥ ३८५ ॥ टीका ॥ गोरस लेवा का मिस सों
राधे कों बुलवाय के ले गयो ॥ विष्णु का भवन
मालती भवन में कृष्ण कों देखा देखि के ललचा
यहाँ गोरस लेवा का मिस सों बुलवा करि ले गयो
॰ नर्म सचिव है ॥ और कृष्ण का संपति चरित्र को ब
र्नन है याते दूसरो उदात्त है ॥ ३८५ ॥ अथ
अथ अत्युक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ वेष रूप
वचनादि कों बदलि करे जो हास ॥ हरि राधा के मत
कहत विदूषक नाम ॥ ३८६ ॥ टीका ॥ वेष
रूप वचनादिक कों जो बदलि करिके हास्य करे
राधिका का मेल से नाचों विदूषक कहे हैं ॥
८६ ॥ दोहा ॥ अद्भुत कूट उदारता सूरतादि
॥ जहँ वर्नन अत्युक्ति सो बहु प्रकार की
॥ ३८७ ॥ टीका ॥ उदारता ॰   को कूठो॰

...नैन होय सो बहुत प्रकार की अत्युक्ति है ॥३८७॥ अथ बिदषक अत्युक्ति उदाहरन ॥ दो० चढ़ घालीगी निकुंज के बनमें अति शय लाय ॥ बे ...ठी मूदि किवार तुम मैं कोद देह सुजाय ॥३८८॥ टीका ॥ वन मैं निकुंज के न्यारो ओर मैं घरा... लाय लगी है तुम किवार जुडि कारि के बैठे मै क... ...ठि कै बुक्त द्यो हौं यहां लाय को अति शय वर्नन है यातैं अत्युक्ति है ॥३८८॥ अथ दून बरनी... न ॥ दोहा ॥ दून निस्त्रष्टार्थ तु प्रथम द्वितिय मि... तार्थ उदार ॥ सु संदेश हारक तृतिय कवि गुलाव निधारि ॥३८९॥ अथ निस्त्रष्टार्थ निरुक्ति लछन ॥ दोहा ॥ जानि दुजन को भाव वर दे उत्तर शुभ उक्ति ॥ अन्य अर्थ के योग तें नासन को सुनि ...रुक्ति ॥३९०॥ टीका ॥ दोनन को औष्ट भाव जानि कै शुभ बचन सैं उत्तर दे ओर का जोग सें नासन को ओर अर्थ होय सो निरुक्ति है ॥३९०॥ अथ निस्त्रष्टार्थ निरुक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ तू अति चाहत राम को तोहि अति चाहत राम ॥ ...तुम हर्ष हो होयगो सांचो रावन नाम ॥३९१॥ टीका ॥ तू राम को अत्यंत चाहती है ताको रा... ...म अन्यंत चाहते हैं तुम प्रसन्न हो वोगी सांचो रावन नाम होयगो यहां जानकी का हरन जोग सें रावण को रोवणो सांचो नाम भयो यातैं निरुक्ति है ॥३९१॥ अथ मिताथ प्रोतपथ लछन दोहा ॥ कोथ प्रमाण काज हि करे सो मितार्थ ...

न्यानि ॥ कथन निषेध प्रसिद्ध को प्रति षेध सुज्ञ
ज्ञानि ॥ ३८२॥ टीका ॥ प्रमाण कहु करि कै काव
करे सो मितार्थ है प्रसिद्ध निषेध को कथन होव
सो प्रति षेध हृदा से जानों ॥ ३८२॥ अथ
र्थ प्रति षेध उदाहरन ॥ दोहा ॥ चौल
ज में लखि लली नाचत दे दे तार ॥ सोहन नंद
र नाहि है मन्मथ अवतार ॥ ३८३॥ टीका ॥
अली निकुंज में चौल के देखि ताल देदे करि के नाचे है
न है सो नंद कुमार नहीं है कामदेव का अवतार है यहां
को निषेध करि के कामदेव को अवतार ठहरायो
अलंकार है ॥ ३८३॥ अथ संदेश हारक विधि
दोहा ॥ सु संदेश हारक कहै कही बात है
सिद्ध करे जब सिद्ध कों तब बिधि भूषण होव ॥
३८४॥ टीका ॥ कही बात कों कहै सो संदेश
है ॥ जब सिद्ध कों सिद्ध करे तब बिधि अलं
र होय है ॥ ३८४॥ अथ संदेश हारक विधि
उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाल कह्यो करि लालसा
आज रास में आज ॥ प्यारी प्यारी होय गी जब दे
तजि लाज ॥ ३८५॥ टीका ॥ लाल ने चाह करि कै
कह्यो आज रास में आवो हे प्यारी लाज कों तजे
तब प्यारी होय गी यहां प्यारी सिद्ध अर्थ को फेरि
सिद्ध करी याते बिधि अलंकार है ॥ ३८५॥
लक्षण ॥ दोहा ॥ कारन कारज संग ह्वै हेतु
प्रथम पिछानि ॥ कारन कारज एक ह्वै हेतु द्वितीय
खानि ॥ ३८६॥ टीका ॥ कारन कारज साथ होय सो

पहिलो भेद पिछानौं ॥ कारन कारज एक होय सो दूसरो भेद वखानौं ॥ ३९६ ॥ **दोनून के उदाहरन ॥ दोहा ॥** होन दूर दुख तुरत ही लेत श्याम को नाम ॥ हैं गुलाब हरि जनन के कृष्ण कृपा सुख धाम ॥ ३९७ ॥ टी॰ ॥ श्याम को नाम लेता ही तुरत दुख दूर होय है गुलाब कवि कहै है हरि जनन कै कृष्ण की कृपा है सोई सुख को घर है यहाँ श्याम को नाम लेता ही दुख दूर होय है ई में कारन कारज संग है यानें प्रथम हेतु है और कृष्ण की कृपा है सोई सुख को घर है ई में कारन कारज एक है यानें दूसरो हेतु है ॥ ३९७ ॥ **छप्पय ॥** रसवत १ प्रेयस २ दोय तृतिय ऊर्ज ३ स्वित जानौं ॥ चवथ समा हित ४ नाम पन्चम भावोदय ५ मानौं ॥ भाव संधि ६ षट भाव शबलता ७ प्रेम ८ कहिये प्रत्यक्ष ९ अनुमान १० दसम उपमानैं निवहिये ॥ पुनि शब्द ११ रु अर्थापत्ति १२ पुनि अनुपलब्धि १३ संभव १४ लहो ॥ रातिह्य १५ सहित सब पंच दश कवि गुलाब भूषण गहो ॥ ३९८ ॥ **रस वत लक्षण ॥ दोहा ॥** इक रस रसको अंग ह्वै कै स्थाई को होय ॥ कै व्यभिचारी भाव को अंग सु रस वत जोय ॥ ३९९ ॥ टी॰ ॥ एक रस दूसरा रसको अंग होय अथवा स्थाई भाव का अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रस वत अलंकार है ॥ ३९९ ॥ **उदाहरण ॥ दोहा ॥** जयति अयोनि योगींद्र मुनि कुंभज सहा अनूप ॥ देखे ताके चुलुक में कच्छप मत्स्य स्वरूप ॥ ४०० ॥ **टीका ॥** जोगीन्द्र सहा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षेण वर्तैं ॥ जा को चुलु में कच्छप मत्स्य स्वरूपावतार देखे ॥ यहाँ

मुनि विषय करीत भाव को अंग अद्भुत रस है
तैं रसवत है ॥५००॥ प्रेय लक्षण ॥ दोहा ॥
व होय अंग भाव को के रस को अंग चार ॥ सु है प्रेय
कहै याहि कों कवि भावा लंकार ॥५०१॥ टीका ॥
व को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव होय
सो प्रेयोऽलंकार है याही कों कवि है सो भावालंकार कहै
॥ ५०१॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ कब वसि भौ
धरि कोपीनहि चीर ॥ हे हर शिव शंकर
पत फिरि हौं गंगा तीर ॥ ५०२॥ टीका ॥ कोपीन मात्र
चीर धारण करि के कासी में वसि के । हे हर । हे
शंकर । असे जपतो कबो तीर पे कब फिरौं गो ॥
शांत रस को चिंता संचारी अंग है याते प्रेयस है ॥
५०२॥ ऊर्जस्वित लक्षण ॥ चंद्रायण ॥ रस ॥
जँहँ अंग भाव को होय वर ॥ अथवा भावा भास
को अंग तर ॥ सो ऊर्जस्वित होय भाव रस
भावा भास रु रसा भास क्रम सोहित लीह ॥ ५०३॥
टीका ॥ जहाँ भाव को अंग रसा भाव होय
भाव को अंग भावा भास होय सो ऊर्जस्वित
होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावा भास है ॥ और
नुचित रस है सो रसा भास है ॥ ५०३॥
दोहा ॥ बन बन भीलन संग रमत तुव बैरिन की
अरु अरि तुव गुन गनत नित प्रबल प्रतापी राम ।
टीका ॥ हे प्रबल प्रतापी राम तेरे बैरीन की स्त्री
तान के संग बन बन में रमती है यहाँ प्रभु विषय
ति भाव को अंग रसा भास है याते ऊर्जस्वित है

नेरे और नेरे गुन सदा रानते हैं॥ इहाँ प्रभु विषयक रति भाव को अंग भावा भास है। यातें ऊर्जस्वित अलंकार है॥ ९०४॥ **समाहित लक्षण॥ दोहा॥** अंग होय रस को जहाँ भाव शाँति के होय॥ भाग शाँति अंग भाव को जानि समाहित सोय॥ ९०५॥ **टी०** जहाँ रस को अंग भाव शाँति होय अथवा भाव को अंग भाव शाँति होय सो समाहित जानो॥ ९०५॥ **उदाहरन॥ दोहा॥** पिय ठाढे भे मान लखि तिय इत रही विजोय॥ देखत हँसि दीनौं ललन तिय नव दीनौं रोय॥ ९०६॥ **टीका॥** मान देखि करि के पिय हैं सो ठाढे ह्वै रहे इत कौं तिय है सो विसेस देखि रही॥ देखते पिय ने हँसि दियो तब तिय नें रोय दियो इहाँ शृंगार रस को अंग कोप शाँति है यातें समाहित है॥ ९०६॥ **भावोदय लक्षण॥ दोहा॥** होय अंग रस को जहाँ भावोदय के होय॥ भावोदय अंग भाव को है भावोदय सोय॥ ९०७॥ **टीका॥** भाव को उदय होय सो भावोदय॥ जहाँ रस को अंग भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है॥ ९०७॥ **उदाहरण॥ दोहा॥** सुनि गुन सोहन के रहै हिय अलसी अति बाम॥ चहत विचारि विचारि उर कब मिलि है घन श्याम॥ ९०८॥ **टीका॥** सोहन के गुन सुनि के बाम है सो हिया मैं अलसी रहे है॥ उर मैं विचारि विचारि के चाहती है घन श्याम कब मिलें गे॥ इहाँ शृंगार रस को अंग है औत्सुक्य संचारी को उदय है यातें भावोदय है॥ ९०८॥

भाव संधि लक्षण ॥ चंद्रायण ॥ भाव
जहँ अंग रसहि को के जहाँ ॥ भाव संधि है अंग
को बर तहाँ ॥ भाव संधि है जुरे विरुद्ध जु भाव
व संधि तिहिं नाम समस्त बतावही ॥ ५०९ ॥
जहाँ रस को अंग भाव संधि होय ॥ अथवा भाव
ग भाव संधि होय तहाँ भाव संधि अलंकार है ॥
रुद्ध भाव जुरें तिस को सम्पूर्ण कवि भाव संधि
बतावे हैं ॥ ५०९ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलत
संग्राम कों लोष विलषी निज बाल ॥ अरुन बरन तन
उठे विपुल पुलक तत्काल ॥ ५१० ॥ टीका ॥ बीर
ग्राम को चलतें विलषी भई अपनी स्त्री देखी
य अरुन बरन तन में बहुत रोम उठे । इहाँ प्रभु
करन भाव को अंग रमणी प्रेम रस । उतकंठा की संधि है
यातें भाव संधि है ॥ ५१० ॥ भाव शबलता
चंद्रायण ॥ भाव शबलता होय अंग रस को मता
के भावहि को अंग भाव की सबलता ॥ भाव
य भाव जहँ बहुत ही ॥ उपजे तहाँ सुभाव शबलता
कवि कही ॥ ५११ ॥ टीका ॥ रस को भाव अंग भाव
बलता होय अथवा भाव को अंग भाव शबलता
य सो भाव शबलता अलंकार है ॥ जहाँ बहुत
पजें तहाँ कविन ने भाव शबलता कही है ॥ ५११ ॥
उदाहरन ॥ दोहा ॥ बंशीधर बन माल धर हरि
रहाय ॥ कित मैं कित वह कित मिलन
बनाय ॥ ५१२ ॥ टीका ॥ बंशीधर बनमाल धर
सो उर में रहे हैं ॥ कहाँ मैं । कहाँ वह । कहाँ मिलाप

हे सजनी तू ल्यौत बताय हाँ वंशीधर वनमाल धर यह
वो स्मरण॥ कहाँ मैं कहाँ वह यह वितर्क॥ कहाँ मिलन
यह दीनता॥ तू ल्यौत बता यह उत्कंठा यह भाव शवल
ता है सो विप्रलंभ श्रृंगार रस को अंग है यातें भाव शव
लता अलंकार है॥५१२॥ अथ अष्टारा॥ लंकार लि
ख्यते॥ प्रत्यक्ष लक्षण॥ दोहा॥ इंद्रिय अरु
मन ये जहाँ विषय आपनौं पाय॥ ज्ञान करें प्रत्यक्ष तिं
हिं कह गुलाब कविराय॥५१३॥ टीका॥ जहाँ इंद्रिय
और मन ये हैं सो अपनौं विषय पाकरि के ज्ञान करें ति
सकों गुलाब कहे है कविराज है सो प्रत्यक्ष अलंकार कहे है
५१३॥ उदाहरन॥ दोहा॥ लषन सुनहु जिंहि का
रनैं होत जज्ञ धनु धारि॥ मन मानत है देखि यह है
वह जनककुमारि॥ ५१४॥ टीका॥ रामचंद्र की उक्ति
है लक्ष्मण सुनों॥ जाके वास्ते धनुष उठायवे को जज्ञ हो
न है मेरा मन माने है देखि यह वही जनककुमारी है
इहाँ मन नेत्रन सौं प्रत्यक्ष है यातें प्रत्यक्ष अलंकार है
५१४॥ अनुमान लक्षण॥ दोहा॥ कारण के जानें
जहाँ कारज जान्यौ जाय॥ है अनुमाने अलंकृति सु कवि
गुलाब के भाय॥५१५॥ उदाहरन॥ दोहा॥ चट
काली दधि मथन ध्वनि चरणायुध ध्वनि पाय॥ जानि
सवेरी अंत तिय रोह पिय हिय लपटाय॥ ५१६॥
टीका॥ चिरैन की ध्वनि दधि मथन ध्वनि मुर्गा की
ध्वनि सुनि कै रात्रि को अंत जानि कै तिय है सो पिय
का हिया सौं लपटाय रही॥ इहाँ चटकाली दधि मथ
न मुर्गा की ध्वनि कारन जानें तैं निभ्रांत कारज जान्यौं

" अनुमान है ॥४२६॥ उपमान लक्षण।
हा॥ उपमा को सादृश्य तें बिन देख्यौ उपमेय
परे उपमान सो अलंकार है ज्ञेय॥ ४२७॥ टीका
पमान को सादृश्य सें बिना देख्यो उपमेय जाने
जानिवे जोग्य उपमान अलंकार है ॥४१७॥
रा॥ दोहा॥ मन्मथ सम सुन्दर लसे रवि सम
विशाल॥ सागर सम गंभीर है सो दशरथ को लाल॥
४१८॥ टीका॥ कामदेव को समान सुंदर लसे है
र्य समान विशाल तेज है समुद्र समान गंभीर है
स चंद्र है इहाँ कामादि उपमानन सें रामचंद्र जाने
याते उपमान है॥४१८॥ शब्द लक्षण॥
जहाँ शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाण बखानि
शब्दालंकार है भाषत सु कवि सुजान॥४१९
जहाँ शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाण को
न होय सो शब्दाऽलंकार है सु कवि सुजान हैं सो
ते हैं॥४१९॥ उदाहरण॥ दोहा॥ धर्म बिना
हि सुख लहे गुरु बिन लहे न ज्ञान॥ ज्ञान बिना
मुक्ति के पचि पचि मरे अजान॥४२०॥ टीका॥
धर्म बिना सुख नहि मिले गुरु बिना ज्ञान नहि
ज्ञान बिना मुक्ति नहि होय। अज्ञान है सो पचि
के मरे है॥ इहाँ शास्त्र प्रमान है। यातें शब्दा
है॥४२०॥ अथ अर्थापत्ति लक्षण॥
जहाँ व्यर्थ भे अर्थ कौ और जोग सें थाप॥
त्ति अलंकृति सु भाषत सु कवि सद्राप॥४२१॥
जहाँ व्यर्थ भये अर्थ को और जोग सें थापे सो

पत्ति अलंकार गर्व सहित सु कवि भाषते हैं ॥३२॥
उदाहरण ॥ दोहा ॥ तिय तेरे कटि है यहै मैं की नी निर्धार ॥ जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर भार ॥५२१॥ **टीका ॥** हे तिय तेरे कटि है यह मैंने निश्चय कियो है जो नहि होय तौ भारी कुच भार कौं कौन धारै है इहाँ नहि यह व्यर्थार्थ कुच धारण योग्य करि ठहरायो याते अर्थापत्ति है ॥५२१॥ **अथ अनुप लब्धि संभव लक्षण ॥ दोहा ॥**
जानि परै नहि बस्तु कछु अनुप लब्धि है सोय ॥
जँहँ संभव है वस्तु को संभव नाम सु होय ॥५२२॥
टीका ॥ जहाँ कछु वस्तु नहि जानि परै सो अनुपलब्धि अलंकार है जहाँ वस्तु को संभव होय सो संभव नामक अलंकार होय है ॥५२२॥ **अथ अनुप लब्धि उदाहरन ॥ दोहा ॥** नहि तेरे कटि सब कहत कुच थिति बिन आधार ॥ इन्द्र जाल यह काम को लोक करत निर्धार ॥५२४॥ **टीका ॥** तेरे कटि नहि है ॥ सब कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है ॥ यह कामदेव को इंद्रजाल है यासें लोक निश्चय करते हैं इहाँ कटि को अभाव है ॥ याते अनुप लब्धि है ॥५२५
अथ संभव को उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनी न देखी तुव सदृश हे वृषभानु कुमारि ॥ जानत हो कहूँ होयगी विपुला धरनि विचारि ॥५२५॥ **टीका ॥** हे वृषभानु कुमारि । तो समान देखी है न सुनी है परंतु पृथ्वी बड़ी विचारि कै जान्यौ हौं कोई होयगी । इहाँ को संभव है याते संभावालंकार है

॥ ५२५ ॥ अथ रीतिरूप लक्षण ॥ दोहा ॥ सु
रूप प्राचीन की उक्ति आई जु कहानि ॥ ताको
यश को नाहि न परे पहिचानि ॥ ५२६ ॥ टीका ॥ जो
प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम
ही पहिचान्यो परै सो रीति रूप अलंकार है ॥ ५२
उदाहरण ॥ दोहा ॥ हे सीता उर धीर धरि
नि मन अपघात ॥ जीवन सो नर सुख लहै यहै
ही बात ॥ ५२७ ॥ टीका ॥ निजदा की उक्ति ॥ हे
ता हृदय में धीरज धरि । मन में अपघात मति धरै ।
आदमी जीवै सो सुख पावै । यह लोक की बात है
हाँ जीवन सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है ॥
याते रीति रूप है ॥ ५२७ ॥ इति अर्थालंकारा लंका
रा: ॥ अथ संसृष्टि शंकर लिख्यते ॥ दो
भूषण शब्द रु अर्थ के आपस में मिलि जाहि ॥ संसृ
ष्टि रु शंकर तहाँ ये जुग नाम कहाहिं ॥ ५२८ ॥ टी
जहाँ शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलि जा
हि तहाँ संसृष्टि और शंकर ये दो नाम कहावै है ॥
॥ ५२८ ॥ अथ संसृष्टि लक्षण ॥ दोहा ॥ एक अ
लंकृति को रहै नहि दूसर की चाह ॥ बाँध कहू इक
न को होय नहि किहू राह ॥ ५२९ ॥ जुदे जुदे भासे
सकल अपनी अपनी धाम ॥ तिल तंडल की रीति करि
है संसृष्टि सु नाम ॥ ५३० ॥ टीका ॥ एक अलंकार
को दूसरे अलंकार की चाह नही रहै और सब अलं
कार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी राह सें नहीं
होय ॥ ५३० ॥ तिल तंडुल की रीति करि के सब अपनी

अपनी ओर पर जुदे जुदे भासैं सो संस्रीष्ट नाम है॥४३०॥
अथ संस्रीष्ट भेद॥ दोहा॥ अर्थ अर्थ के भूषण रु शब्द शब्द के होय॥ अर्थ अर्थ के होय यों त्रय संस्रीष्ट विजोय॥४३१॥ **टीका॥** अर्थ अर्थ के अलंकार होय और शब्द शब्द के अलंकार हौंय और अर्थ शब्द के अलंकार होंय ऐसे तीन संस्रीष्ट देखो॥४३१॥
अथ शंकर लक्षण॥ दोहा॥ पय पानी की रीति करि हौंय परस्पर लीन॥ ताको संकर नाम ही भाखत परम प्रवीन॥४३२॥ **टीका॥** दूध जल की रीति करि के अलंकार परस्पर लीन हौंय ताको परम प्रवीन है सो संकर नाम भाषते हैं॥४३२॥ **अथ शंकर भेद॥ दोहा॥** है अंगा गी भाव१ अरु सम प्राधान्य२ बखानि॥ संदेह ३ रु इकवाचकानु प्रवे ४ चव मानि॥४३३॥ **टीका॥** अंगा गी भाव शंकर है और सम प्राधान्य शंकर बखानो संदेह शंकर३ और एक वाच कानु प्रवेश शंकर जानों ये चारि भेद हैं॥४३३॥ **अथ अंगागी भाव लक्षण॥ दोहा॥** बीज वृक्ष के न्याय करि इक इक को अंग होय॥ सो अंगागी भाव है कवि गुलाब मतिजोय॥४३४॥ **टीका॥** बीज वृक्ष के न्याय करि के एक अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगागी भाव शंकर है गुलाब कवि के मत मैं देखो॥४३४॥
अथ सम प्राधान्य शंकर लक्षण॥ दोहा॥ दिन दिन पति के न्याय करि संग प्रगटे संग भासे॥ नाम सम प्राधान्य ही कवि गुलाब कह तास॥४३५॥ **टीका॥** दिन सू न्याय करि अलंकार साथ ही प्रगटे

साथ ही भासें गुलाब कवि है सो ताकों नाम सम प
धान्य कहै है ॥ ४३५ ॥ अथ संदेह शंकर
ण ॥ चंद्रायण ॥ प्रथम मिटाये द्वितिय
भास ही ॥ द्वितिय मिटाये प्रथम बिशेष प्रकास ही ॥
धन इक कों एक राति दिन न्याय करि ॥ तिहि शंकर
देह कहत कवि मोद धरि ॥ ४३६ ॥ टीका ॥
लंकार मिटाये सें दूसरो अलंकार भासे दूसरो अलंकार
मिटायें सें पहिलो अलंकार भासे राति दिन न्याय
क कों एक बाधें नही ताकों संदेह शंकर कहत हैं ॥ कवि
मोद धरि के ॥ ४३६ ॥ अथ एक वाचकानुप्रवे-
श शंकर लक्षण ॥ दोहा ॥ न्याय नृसिंहाकार
कीर पद रु वाक्य इक माँहि ॥ जुग भूषण इक बाचका
प्रवेश कहि ताहि ॥ ४३७ ॥ टीका ॥ नृसिंहाकार न्या
य कीर एक पद और एक वाक्य मे दोय अलंकार हों
य ताकों एक वाचकानु प्रवेश संकर कहो ॥ ४३७ ॥ अ
थ अर्थ को प्रथम संसृष्टि को उदाहरन ॥
दोहा ॥ शशि सो उज्जल मुख लसे खंजन हैं मनु नैन
अधर नासिका बिंब शुक मधुर सुधा सें वैन ॥ ४३८ ॥
का ॥ शशि सो ऊजलो मुख लसे है ॥ नैंन हैं सो मानों
जन हैं ॥ अधर और नासिका है सो किंदूरी और शुक हैं
सुधा से मीठे वचन हैं यहाँ उपमा उत्प्रेक्षा यथा
र्थालंकार कीर संसृष्टि है ॥ ४३८ ॥ द्वितिय
को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर की कर की वर
भूसी देह ॥ कत मुकरत परखी परत सुख सों सनी
... टीका ॥ सुंदर कर की चूरी करकि गई है भूरे

रिके भूसरी देह है॥ क्यौं नटे है। पिछानी परे है॥ सुख सौं सनेह में सनी है॥ इहाँ यमक छेकानु प्रास शब्दालंकारन की संसृष्टि है॥५३९॥ **तृतीय संसृष्टि को उदाहरन॥ दोहा॥** दृग से दृग हैं याहि के मुख सो मुखही आहि॥ कर से कर कुच से कुचाहि उपमा उपजै काहि॥५५०॥ **टीका॥** याके दृग से याके ही दृग हैं॥ मुख सो मुख ही है कर से कर ही हैं॥ कुच से कुच ही हैं॥ उपमा कौन कौं उपजै॥ यहाँ छेकानु प्रास अनन्वय शब्दार्थालंकार की संसृष्टि है॥५५०॥ **इति संसृष्टिः॥ अथ अंगांगी भाव शंकर उदाहरन॥ दोहा॥** हलत पवन तैं तरुन तर दीखत छांह अचूक॥ शशि हरि ने तम गज हने मानहु तिनके टूक॥५५१॥ **टीका॥** पवन सें हालते वृक्षन के नीचे जो अचूक छाया दीखती है सो मानौं शशि सिंह नें तम रूप हाथी मारे हैं तिनके टूक हैं॥ यहाँ शशि हरि तम गज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है यातें अंगांगी भाव शंकर है॥५५१॥ **अथ सम प्राधान्य शंकर उदाहरण॥ दोहा॥** लोचत तुंग पयोधर सुर विनुरगा वलि चार॥ मध्य अरुण नायक मनुहु नभ श्री मरकत हार॥५५२॥ **टीका॥** ऊँचे मेघन कौं उलाङती उई सूर्य्य का घोडान की पंक्ति है सो हमारी रक्षा करी सो मानों मध्य में है लाल मणि जाके ऐसो आकाश लक्ष्मी को पन्ना को हार है॥ इहाँ श्लेष उत्प्रेक्षा समा सोक्ति साथ ही प्रगटते हैं साथ ही भासते हैं यातें सम प्राधान्य शंकर है॥ नभ श्री में नायिका व्यवहार को आरोप है॥ सो समा सोक्ति है॥ नायक नाम मा-

थी और हार की सोभा की है ॥ नायको नेतीर
मध्यमरग व प्रीति विम्बा: ॥ ५४२ ॥ अथ
कार उदाहरण ॥ दोहा ॥ अमृत सिंधु
रीते विधि अनुसासन जोय ॥ काढै शशि
राधा मुख सम होय ॥ ५४३ ॥ टीका ॥ कास
सो ब्रह्मा की आज्ञा देख के अमृत के समुद्र को
के कलंक रहित चंद्रमा को काढै तो राधा के मुख
न होय ॥ यहां जो यों होय तो यों होय ऐसा
संभावना अलंकार है और ऐसो चंद्रमा होय न
का मुख की बराबरि होय यह मिथ्या बरनि है
ते मिथ्याध्यवसिति है ॥ ५४३ ॥ पुन: ॥
सर्प महा विष उगलतो बसत मूल के मांहि ॥ तो
जुत सुतरु नें कहा प्रयोजन आहि ॥ ५४४ ॥
बहुत जहर कों उगलतो अयो सर्प मूल में वसै है
ए फल सहित सुंदर वृक्ष सों कांई प्रयोजन है
प्रस्तुत सर्प वृत्तांत वरनि में अप्रस्तुत राजा के
के वारे खल को वृत्तांत वी प्रतीत होय है यातें
सा है ॥ अथवा प्रस्तुत खल वृत्तान्त
सो अप्रस्तुत सर्प वृत्तांत कथन है यातें अ
ंसा है ॥ अथवा वरर्यमान सर्प के वृत्तांत
पास रहिवे वारे खल को वृत्तांत प्रगट होय है ये
प्रस्तुत हैं यातें प्रस्तुतांकुर है निश्चय न भयो यातें
देह संकर है ॥ ५४४ ॥ अथ एक
संकर ॥ दोहा ॥ हे हरि दीन दयालु
सिर नाय ॥ तुव पद पंकज आसरे मन

६५॥ टीका॥ हे हरि दीन दयाल मैं यह शिर नवाय करि कै माँ-
न्हारे चरणकमलके आसरे मेरो मन भ्रमर लगि जाय॥ इहाँ पद पे
मधुकर मैं रूपक छेकानुप्रास है यातें एक वाचकानु प्रवेश संक
काहू के मत में शब्दार्थालंकार को ही एक वाचकानु प्रवेश होय है
मत में अर्थालंकारन कोवी होय है॥ जहाँ शब्दार्थालंकार जु-
होय तहाँ संसृष्टि है अरु जहाँ एक पद में दोनूं होय तहाँ एक
नु प्रवेश शंकर है॥ ४४५॥ दोहा॥ चंद्रकला टीका करी मोती-
सहाय॥ मोती शंकर ने लिख्यो सोधि ग्रंथ सुख दाय॥ ४४६॥

इति वनिता भूषण सम्पूर्णम् शुभम्॥

नताभूषण का अशुद्धाशुद्ध पत्र लिख्यते॥

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	नहा	नहीं	२१	२६	संग	सँग
१०	अनन्यय	अनन्वय	२२	६	वाढ़त रुगया	वाढ़त रुगांया
३	नायका की	नायका को	२२	२१	सांदेह	संदेह
१२	उर मैं	उर मैं	२२	२३	कासांधा	कासांधा
२०	अवगर्य	अवगार्य	२२ २३	२४ ३	साची सन	सांची सैन
४	मलक	मलक	२३	४	पतिको	पति कौं
१०	न्यूनत रूप	न्यूँनत रूप	२३	१२	छिपावे	छिपायें
२४	जोगन	जोगन	२३ २४	२६ २७	दर वाड़ा सखी कों	दर छोड़ा सखी को
२४	देवर	देवर	२५	२८	तिंहिं पति	जिंहिं पति
२६	मध्यै	मध्या	५	२०	जोनें	जानें
२६	यावना	योवना	२७	७	नानक	आनक
७	डराय	डराय	२७	२५	आस पसु	आस्पद तु
४	रमा लखा	रमा लखावे	२७	२२	अधर ने	अधर में

१७	२२	रतिसैं	रतिमें	२३	२०	न्हवाकों
१७	२५	मसाल की प्र-	मसाल की प्र-	२३	२१	नायका कों
		कासे	कासेसो सध्या	२५	१८	दुराय
			धीराधीरा ना-	२६	१७	आवीत
			यिका है	२६	२३	लो
१८	१	कोष	कोप	२७	५	हर्षे
१९	३	अभिप्राद्धा	असिद्धास्पद	२७	१९	गनिक
१९	११	चंत	चेत	२७	२०	नायकी
१९	२२	तिय सौं है सो	तिय है सो	२८	२३	कष्टजन
१९	२३	धीरा है	धीरो	२८	२४	असले
२०	१	रुदन	रुदन	९	४	पीर को
२०	३	रंग्यो है	रंग्या है	२९	१५	रूपरु
२०	१९	इकसै	इकसैं	३०	१	जैसे
२०	२५	प्रीत	प्रीति	३०	१४	आरिसान
२१	१	सापान्हव	सापन्हव	३१	१०	धर्म की
२१	१३	प्रायो युक्ति	प्राय उक्ति	३४	४	गये
२१	१४	कान	कान्ह	३४	१ ५	सेनना
२२	५	कटक लगे	कंटक लगे	३४	२३	सोम
२२	१०	गुप्ता चो	गुप्ता	३५	२	स्निग्ध
२२	२१	लोच मै	लोप मैं	३५	१८	सखा श्रोनि
२२	२२	असांत धाति	असांवधा अ-	३५	२३	काला
		य	[illegible]	३६	५	लांचित
२२	२६	सांकेत	[illegible]	३६	१२	हेय
२३	५	पंग	पग	३६	२०	पीरकुरांकुर
२३	५	कोटे हैं	कोटे हैं	३८	३	उपमा

काय	कार्य	५३	७	ते	नें
सारूप निवंधन	सारूप्य निवंधना	५३	१३	रंगे	रँगे
सीता का	सोता का	५३	१९	सुख	मुख
नायक	नायिका	५४	९	द्वितीयलक्षण	द्वितीय समल
निवंधर्न	निवंधना				क्षण
बात सो	बात सैं	५५	८	बरपायरस	बरसाय रस
लाख को ल	लाख को ला	५५	२२	[illegible]	[illegible]
कया मैं	यातैं	५५	२५	सवलती	सुबलती
सांति सै	सांति से	५६	५	नीचो	नीची
सै	सैं	५६	१८	समाव	समात्त
कंसादिक	कंसादिक	५७	१५	मायो	मायो
मे	मैं	५८	११	बनैता	वनिता
चिंतादि	चिंतादि	५९	२२	सखी जिसकौ	जिसकौं
वाय	सुवाय	५९	१७	सुरंग	सुरँग
चितवे	चितवै	६०	७	वतावत	बनावते
उत्ता	उत्ता	६१	८	संभ	सँभ
कंनाराई	कँनाराई	६३	७	भूव तैं	भूष तैं
वस्तुमे	वस्तु तैं	६३	२१	केरा सूदरी	करा सूँदरी
घर घर	घर	६५	२१	फरि हौ	कटि हौ
साम	थान	६६	२३	हँती जभाय	हँसी जँभाय
सजे	सजे	६८	२	पूंछी	पूछी
आतिहेतु है	आनि हेतु है	६८	२४	सामरन	साभरन
सीजसेज	सोजसेज	६९	१९	सुख	सुख्य
उसाहि	उमाहि	७१	१	झलसाप	झलसाय
कल्सन की	कलान की	७१	२५	जगत न	जग जन
×	×	७३	९	संभवना	संभावना
×	×	७३	२१	वृत्तात	वृत्तांत

२७	२२	[illegible]सैं	रानिमैं	२३	२०	न्है
२७	४	[illegible]ल की प्र-	मसाल की प्र-	२३	२१	नायिका कौं
		का	कासे सो मध्या	२५	१८	दुराय
			धीरा धीरा ना-	२६	१७	[illegible]शावति
			यिका है	२६	२३	लो
१८	१६	कोप	कोप	२७	५	हर्षै
१९	३	अशिक्षा	असिद्धास्पद	२७	१९	रानिक
१९	११	चंत	चेत	२७	२०	दायकी
१९	२२	तिय सों है सो	तिय है सो	२८	२२	कृष्ण जन
१९	२३	धीरा है	धीरे	२८	२४	ससले
२०	१	कदन	कूदन	२९	४	धीर को
२०	३	रंग्यो है	रंग्या है	२९	१५	रूप रु
२०	१६	इकसे	इकसैं	३०	१	औसे
२०	२५	प्रीत	प्रीति	३०	१४	आरि सन
२१	१	सापान्हव	सापन्हव	३१	१०	धर्म की
२१	१३	आयो युक्ति	श्रय औक्ति	३४	४	गाये
२१	१४	कान	कान्ह	३४	१६	संग से नत्ता
२२	५	कटक लगे	कंटक लगे	३४	२३	सोम
२२	१०	गुप्ता चो	गुप्ता	३५	२	सिय
२२	१२	जोय नै	जोय मैं	३५	१८	सखा
२२	१२	अशंव धानिश	अशंबधा अ-	३५	२३	कला
		य	तिशय	३६	५	बांचिब
२२	२६	सुछित				
२३	५	पंग				
२३	५	कांटे				

७४	२	अये	अयें	९०	२२	कवि के कड़खा	कविकै
७५	२	का हैं	का है	९२	२५	नाईं	नाईं
७५	२०	गुन वान	गुणखानि	९२	२६	नायक है	सखा है
७५	२३	वांछितार्थे	वांछितार्थ	९३	३	क्रय	क्रये
७५	७	ठाढै	ठाढे	९३	८	चरनि	चरनि
७५	२५	इकन्हा	इकन्हौं	९३	२२	श्लाघ्य	श्लाघ्य
७५	२०	भिले	भिलै	९४	१०	गोरी	गोरी
७६	२१	सुगा	भगा	९४	१८	विदूर्षक	विदूषक
[illegible]	२	बन्चे	बन्चे	९५	३	लीगी	लगी
७७	२०	निडर	निडर	९५	२६	हर्वे हो	हर्वे हो
७७	२७	अयान	अयान	९७	१५	शांतस्य	शांतस्य
७७	२५	ज्ञान कैं	ज्ञान कौं	९७	२०	भाव का	भाव को
७८	६	चाहे है	चाह है	९८	४	आव प्रांति	भाव प्रीति
७८	१६	रहै	रहे	१०२	२४	सद्राप	सदाप
७८	५	सुंदर	सुंदर	१०३	२	नै कीनौं	मैं कीनौं
७८	१६	डीर	डरि	१०३	२१	जानत है	जानत हौं
७८	२२	इकला	अकेला	१०४	७	अपन्घात	अपघात
७९	२५	कल्याना	कल्पना	१०४	२६	कौ	कौं
८०	२२	आन्यो	आन्यौ	१०४	२८	बाँधक	बाधक
८२	२५	गहे सो	गहे सु	१०४	२०	नहि किंह	नहीं किंह
८२	२२	सखिन ने	सखिन मे	१०४	२०	आसे	आसें
८३	५	पूर्व	पूर्व रूप	१०४	२१	मंडल	मंडल
८४	६	वसे हो	वसो हो	१०५	२३	नप्रवे	नु प्रवेश
८५	७	उदाहर	उदाहरन	१०५	२६	अंगागी	अंगांगी
८५	२५	जान्यौं न	जान्यौं जात	१०५	२८	अंगांगो	अंगांगी
८६	२	उन्मील	उन्मीलन	१०५	२५	सुन्याय	सूर्यं न्याय
८६	२५	बोला	बोलो	१०६	२८	सैं वैंन	से वैंन
८७	१०	सक्न	सूक्ष्म	१०६	२४	धूसरि	धूसरित
८७	२५	ओर	आर	१०७	२८		नुरगा चाल
८८	७	कौ	कौं	१०८	२	विपयाः	[illegible]
[illegible]	२	दंतच्छात	दंतच्छत	१०८	८	मैं	